शिवाजी कॉलेज

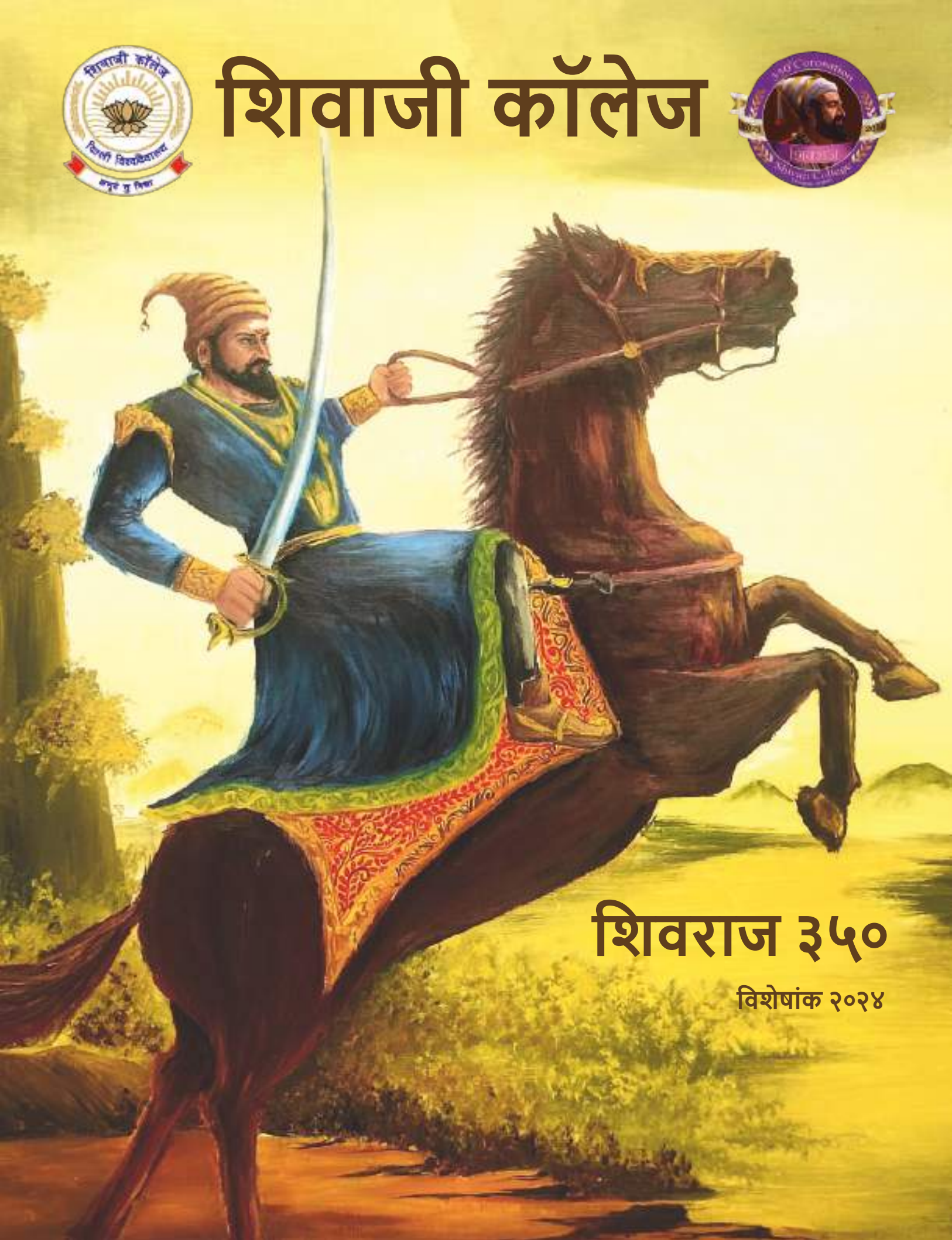

शिवराज ३५०

विशेषांक २०२४

EDITORIAL COMMITTEE

Left to Right (Sitting): Dr. Nidhi Tyagi, Dr. Debosmita Paul, Dr. Nagendra Kumar
Dr. Ritu Madan, Prof. Virender Bhardwaj (Principal),
Dr. Meghraj Meena, Dr. Babli, Dr. Arvinder Kaur,
Ms. Anshula Upadhyay, Dr. Shvetambri

Left to Right (Standing): Dr. Tarun Gupta, Ms. Annu Kumari, Ms. Nikita Gupta,
Ms. Aadya, Ms.Megha, Dr. Kanchan,

SHIVAJI COLLEGE

UNIVERSITY OF DELHI
ACCREDITED BY NAAC WITH 'A' GRADE
DBT STAR COLLEGE

CONTENTS

01 Principal Massage

02 Editor's Massage

03 Interview with Principal

09 Student's Team

10 Chronicles of Shivaji

16 Sankrit Section

23 Hindi Section

36 English Section

55 Department Events

63 Committee Events

71 Cultural Society

80 Humans of Shivaji

92 Pride of Shivaji

114 Key Contributors of Shivaji

प्राचार्य की कलम से

शिवाजी कॉलेज में छत्रपति शिवाजी महाराज के हिन्दवी साम्राज्य स्थापना समारोह के 350 वर्ष पूरे होने के अवसर पर विभिन्न समितियों, विभागों ने सत्र 2023-24 में अनेक सांस्कृतिक, शैक्षणिक कार्यक्रमों का आयोजन किया है। शिवराज 350 के तत्वावधान में वर्ष भर चल रहे इन उत्सव पूर्ण कार्यक्रमों ने पूरे कॉलेज की चाल ढाल ही शिवाजीमय कर दी है। मुझे शिवराज पत्रिका में एक छात्र के रूप में, फिर शिक्षक के रूप में और अब प्राचार्य के रूप में भागीदारी करने का अवसर मिला है। इतिहास, परंपरा और आधुनिकता, की इस यात्रा में रचनात्मक संवेदनशीलता का तत्व हमेशा सक्रिय रहा है। कलम-दवात से लेकर 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' और उसके भी आगे तक जाने वाली सृजनात्मकता, अपनी अंतिम परिणति में सभी के लिए हितकारी होगी ऐसा विश्वास है। संस्थाओं की उम्र को महीनों और वर्षों में नहीं नापा जा सकता, उनका योगदान सदैव भविष्य की मंगलकामनाओं में निहित रहता है। शिवराज पत्रिका के संपादक मंडल और रचनाकारों को हृदय तल की गहराइयों से साधुवाद देता हूं। वर्ष 2023-24 में शिवाजी कॉलेज परिवार में शामिल होने वाले 100 नए शिक्षक साथियों के साथ साथ मैं अन्य सभी के भी उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूं।

जीजा माता के दुलार, संस्था के प्रति प्यार और गुरु के उपकार के दम पर हम स्वयं अपने कर्मों से संस्था पर कितनी अमिट छाप छोड़ पाते हैं, यह निर्णय इतिहास करेगा.....

कुछ और नया देने का मन, जग सारा हो सुखमय सुंदर
आशा विश्वास लिए प्रतिपल, चलता जाता मनु यायावर ||

प्राचार्य
प्रो. वीरेंद्र भारद्वाज
शिवाजी कॉलेज

संपादकीय

ईश्वरीय अनुकम्पा से वर्ष 2023-24 के शैक्षणिक सत्र की सभी गतिविधियों, उपलब्धियों का विवरण प्रस्तुत करती शिवाजी कॉलेज की वार्षिक पत्रिका "शिवराज" आप सभी सारस्वत उपासकों के समक्ष प्रस्तुत है। "शिवराज" कॉलेज के सभी क्रियाकलापों एवं गतिविधियों का दर्पण है जिन्होंने कॉलेज को आकार-प्रकार प्रदान किया है। आपके समक्ष शिवाजी कॉलेज के समवेत विचारों को जीवन्त रूप में शिवराज पत्रिका के माध्यम से प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यंत गौरव की अनुभूति हो रही है। शिवराज विद्यार्थियों को अपनी रचनात्मकता, सृजनात्मक कुशलता, विचारों और संवेदनाओं को साझा करने के लिए एक उत्कृष्ट मंच प्रदान करती है। इस पत्रिका के माध्यम से हम अपने विद्यार्थियों के अंदर विद्यमान विविध प्रतिभाओं, दृष्टिकोणों, संवेदनाओं एवं रचनाधर्मिता को मूर्त रूप प्रदान कर सभी के समक्ष प्रस्तुत करने में सफल हुए हैं। इस वर्ष की पत्रिका शिवराज का मुख्य विषय छत्रपति शिवाजी महाराज के 350वें पावन राज्याभिषेक वर्ष को रखा गया है । इस विषय से सम्बद्ध रचनाएं, आलेख, कविताएं, कहानियां एवं निबंध आदि विधाएं संस्कृत, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषाओं में सम्मिलित की गई हैं । मुझे आशा है कि शिवराज पत्रिका का यह वार्षिक अंक कॉलेज के जीवंत, शैक्षणिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक वातावरण में अभिवृद्धि करने हेतु अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। अंत में मैं कॉलेज के यशस्वी प्राचार्य प्रो. वीरेंद्र भारद्वाज महोदय के प्रति आभार व्यक्त करना चाहूँगा, जिनकी सतत शुभ्र प्रेरणा एवं कुशल मार्गदर्शन हमें मिलता रहा। प्राचार्य महोदय के आत्मीय स्नेह की छत्रछाया में ही नित्य निरन्तर शिवराज का यह वट-वृक्ष पुष्पित पल्लवित और विराट रूप ग्रहण कर रहा है । संपादकीय समिति के सभी छात्र सदस्यों और अध्यापक सदस्यों का धन्यवाद जिनके सहयोग, समर्पण एवं अथक परिश्रम का ही परिणाम यह पत्रिका है । शिवाजी कॉलेज परिवार के सभी सदस्यों का हार्दिक साधुवाद जिन्होंने अपनी सृजनात्मक लेखनी से शिवराज 350 के इस महनीय अंक को समृद्ध किया। आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ ।

पवित्र ऋचा से स्वस्तिकामना करते हुए –

स्वस्ति पन्थामनुचरेम, सूर्याचन्द्रमसाविव।
पुनर्ददता अघ्नता जानता संगमेमहि॥ (ऋग्वेद)

शुभता की मंगलकामना के साथ यह अंक लोकप्रियता के कीर्तिमान स्थापित करे ।

धन्यवाद

डॉ. मेघराज मीणा

संयोजक, संपादकीय समिति

एक साक्षात्कार – प्राचार्य वीरेंद्र भारद्वाज जी के साथ

मीनाक्षी : नमस्कार सर, मैं बी.ए ऑनर्स (हिंदी) तृतीय वर्ष की छात्रा मीनाक्षी अपने शिक्षकों डॉ. तरुण गुप्ता सर और देबोस्मिता मैम के साथ शिवाजी कॉलेज की वार्षिक पत्रिका शिवराज 2024 अंक हेतु आपका साक्षात्कार करने के लिए उपस्थित हुई हूँ। यदि आपकी अनुमति हो तो हम साक्षात्कार की शुरुआत करें?

प्राचार्य : जी

मीनाक्षी : सर आप शिवाजी कॉलेज के छात्र, शिक्षक और अब प्राचार्य के रूप में कॉलेज के उत्तरोत्तर विकास को किस रूप में देखते हैं। चुनौतियों से संभावनाओं तक की इस यात्रा से मिले अनुभवों को आप किस रूप में साझा करना चाहेंगे।

प्राचार्यः देखिए, ऊपर वाले के आशीर्वाद से या कहिए आदेश से कुछ लोगों को ही यह अवसर मिलता है कि आप जिस कॉलेज के छात्र थे उसी कॉलेज में पढ़ाने का अवसर मिले, और बाद में उसी कॉलेज के प्राचार्य होने का अवसर भी मिले। इस मामले में तो मैं कह सकता हूं कि मैं खुशकिस्मत हूँ। इसका कारण यह है कि जो कोई भी किसी संस्थान से पढ़ता है , उस संस्थान की उसके निर्माण में भूमिका होती है, वह जीवन भर उस इंस्टीट्यूशन को भूलता नहीं है, और वह लीगसी(विरासत) उसके साथ जाती है। आप जिस भी कॉलेज से पढ़ोगे, चाहे कोई और बच्चा किसी और कॉलेज से पढ़कर आया हो, स्कूल या कॉलेज के सामने से भी जब आप निकलोगे, जब आप बहुत बुजुर्ग हो जाओगे तो भी अपने पोतो को अपने पुत्रों को या बेटियों को यह बताओगे कि यह मेरा स्कूल था या कॉलेज था। तो उससे एक लगाव होता है हमारा। उसकी ग्रोथ को लेकर उसके डेवलपमेंट को लेकर हमारा बहुत मन होता है, ठीक वैसे जैसा एक टीचर का अपने विद्यार्थी की कामयाबी को लेकर होता है।

जैसे आपके स्कूल का या आपके कॉलेज का किसी अच्छी बात को लेकर जब कहीं नाम होता है तो आप वैसे ही खुश होते हो जैसे आपने ही वह किया हो, उस कार्य में आपका भी सहयोग हो। तो इस भाव के साथ में इस संपूर्ण यात्रा को देखता हूं। मैं 1985 में एक विद्यार्थी के रूप में इस कॉलेज में आया था उसके बाद 1995 में मैं एक शिक्षक के रूप में इस कॉलेज में आया और अब प्राचार्य के तौर पर अवसर मिला है तो मैं क्या देखता हूं कि पीढ़ियों का बदलाव है, सोच का भी बदलाव है, टेक्नोलॉजी ने तो इतनी तेजी से सब कुछ बदल डाला है कि कहना ही क्या। मुझको तो वह पुरानी सादगी भी उतनी ही आकर्षित करती है, टेक्नोलॉजी आज जीवन का अनिवार्य हिस्सा है, तो जो संभावनाएं हैं इस कॉलेज के विकास को लेकर वह अनंत हैं, आज हम साइंस में, कॉमर्स में, आर्ट्स में, किसी में 36 ,किसी में 42, ऐसे अंडर 50 रैंकिंग में हम हैं। संभावनाएं हैं कि हम पहले पांच या 10 की रैंकिंग में कैसे आए? हम उस पर काम करेंगे। हम शिक्षकों और छात्रों की मेहनत की बदौलत अच्छी रिजल्ट देंगे। खेल के क्षेत्र में यह कॉलेज पहले भी अग्रणी था और आज भी है। हमारा बेहतरीन प्लेग्राउंड है। हमारे कॉलेज की लाइब्रेरी किसी भी दिल्ली यूनिवर्सिटी के कॉलेज की लाइब्रेरी से बेहतर है। हमारा इंफ्रास्ट्रक्चर भी और डेवलप हुआ है, हमें एक नया जीजाबाई ब्लॉक प्राप्त हुआ है जिसका उद्घाटन अभी वाइस चांसलर साहब करके गए थे । अब इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए भी एक बड़ा भवन हमारे पास आया है। अगले सेशन से हम उसका इस्तेमाल ठीक से कर पाएंगे। एकेडमिक्स में भी अलग-अलग विषयों के टॉपर शिवाजी कॉलेज से निकल रहे हैं। इसी साल आप ही के डिपार्टमेंट यानी हिंदी डिपार्टमेंट से एक टॉपर आए हैं जिन्होंने दिल्ली यूनिवर्सिटी में हिंदी ऑनर्स में टॉप किया है। तो हम संभावनाएं अनंत देखते हैं, उधमोद्य फाउंडेशन (Udhmodya Foundation) के साथ जुड़कर शिवाजी कॉलेज के छात्र नित्य नए प्रयोग कर रहे हैं और इस वर्ष शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक का 350वाँ वर्ष भी चल रहा है तो इस साल हम एक खास वर्ष से गुजर रहे हैं और उसे हम मना भी रहे हैं। हमारे बच्चों ने शिवाजी महाराज और उनके जीवन चरित्र को लेकर उनसे संबंधित इतनी बेहतरीन पेंटिंग्स की और अनेक प्रदर्शनियां लगाई गयीं। अलग-अलग डिपार्टमेंट ने उस पर विचार विमर्श किया और सेमिनार, सम्मेलनों का आयोजन किया। शिवाजी महाराज की प्रासंगिकता को लेकर बहुत गहरा विचार विमर्श एक वर्ष से चल रहा है। कोई इसको एक जगह एक रिपोर्ट के रूप में विकसित करेगा तो अच्छा रहेगा। हमारे फैकल्टी मेंबर्स ने इस साल दो किताबें भी इस पर लिखी हैं, एक "डेक्कन टू दिल्ली" जिसमें शिवाजी महाराज की ऐतिहासिक यात्रा के साथ साथ शिवाजी कालेज के ऐतिहासिक विकास पर चर्चा की गई है। यह दोनों ही बातें हैं उसमें। ऐतिहासिक संदर्भ में इसमें फैकल्टी मेंबर्स और स्टूडेंट ने मिलकर कंट्रीब्यूट किया है। इसमें मैं अनेक एवं अनंत संभावनाएं देखता हूँ। रिसर्च के स्तर पर भी अनेक फैकल्टी मेंबर्स इसमें इंवॉल्व हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि पिछले चार-पांच महीने में कुलपति महोदय के आशीर्वाद से और इस यूनिवर्सिटी टीम के सहयोग से इस कॉलेज में 100 स्थाई नियुक्तियां हुई हैं शिक्षकों की। तो उससे पहले कई सालों से एडहॉकिज़्म का दौर था टीचर एडहॉक के तौर पर काम कर रहे थे तो उन्हें यह लगता होगा कि यह संस्था हमें स्वीकार करेगी या नहीं स्वीकार करेगी, हम यहीं कंटीन्यू करेंगे या नहीं कर पाएंगे तो नियुक्तियाँ होने से वो चुनौतियाँ भी शिक्षकों के सामने से हटी हैं और मैं कह सकता हूं कि इस संस्था में एक साथ 100 परमानेंट फैकल्टी मेंबर्स का जुड़ना अपने आप में एक ऐतिहासिक घटना है। अब हम इस एनर्जी को कितना चैनेलाइज कर पाएंगे और ये टैलेंटेड फैकल्टी मैंबर्स इस कॉलेज को कितना आगे ले जा पाएंगे, इसका जवाब तो समय ही देगा। इतना जरूर है कि मैं अपने छात्रों को अनंत शुभकामनाएं देता हूं जो हमारा नाम रौशन करेंगे और पहले भी इस महाविद्यालय से सामाजिक क्षेत्र में कार्य करने वाले आईएएस ,आईपीएस, डॉक्टर ,प्रोफेसर तथा अन्य क्षेत्रों में इस कॉलेज से निकले हैं। मुझे विश्वास है कि आने वाले समय में यह कॉलेज भारत के टॉप टेन कॉलेजों में भी शामिल होगा और इस कॉलेज के स्टूडेंट स्टार्टअप आदि के माध्यम से कुछ इस ढंग से कार्य करेंगे कि हमारे स्टूडेंट केवल जॉब सीकर ही नहीं होंगे बल्कि जॉब क्रिएटर भी होंगे, ऐसा मैं मानता हूँ।

मीनाक्षी : आपने सदैव अपने वक्तव्य में संस्थान और छात्र हित को प्राथमिकता देने पर जोर दिया है यह आपकी कार्यशैली और व्यवहार में भी दिखता है इसमें शिक्षकों की भूमिका को आप कैसे व्याख्यायित करेंगे।

प्राचार्य : किसी भी एकेडमिक इंस्टीट्यूशन के केंद्र में छात्र होते हैं। छात्र का निर्माण ही राष्ट्र का निर्माण होता है। उस छात्र का बेहतरीन निर्माण करने के लिए शिक्षकों को खुद भी नॉलेज के मामले में आचरण व्यवहार के मामले में अपडेटेड रहना पड़ता है तो जितना अच्छा टीचर होगा उतने ही अच्छे उसके स्टूडेंट होंगे तो जो मैं हूं, जो मेरी कैपेसिटी है इस कैपेसिटी के मुताबिक ही तो मैं अपने स्टूडेंट का निर्माण कर पाऊंगा। स्टूडेंट के निर्माण में शिक्षा की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका होती है, एक कारण और भी है शिक्षक निस्वार्थ भाव से स्टूडेंट की कल्याण की बात सोचता है। मां-बाप का भी एक ख्वाब हो सकता है कि हम पढ़ा लिखा रहे हैं तो वह हमारे बुढ़ापे में मदद करेगा, शिक्षक का इस तरह का कोई ख्वाब भी नहीं होता वह सिर्फ इतने पर ही खुश होता है कि उसका स्टूडेंट कामयाब हो, उसकी कामयाबी पर शिक्षक को खुद की कामयाबी का अहसास होता है। तो स्टूडेंट के निर्माण में टीचर की भूमिका तो बहुत ज्यादा है किसी भी संस्था की पहचान या तो उसके छात्रों से या उसकी फैकल्टी मेंबर्स की अचीवमेंट से होती है जो हमारा नॉन टीचिंग साथी है वह सहयोगी की भूमिका में होता है उसके सहयोग के बगैर जैसे हमें कहीं मीटिंग अटेंड करने जाना है तो जब तक ड्राइवर साहब नहीं होंगे तो हम उस मीटिंग में नहीं जा

सकते ना तो इस भूमिका में नॉन टीचिंग स्टाफ अपनी भूमिका अदा करता है। मैं समझता हूं टीचर्स की भूमिका केंद्रीय भूमिका है, वह अपने रिसर्च के आइडियाज अपने आचरण से, अपने एकेडमिक्स से, अपने प्रयोगशाला में कर रहे प्रयोगों के माध्यम से, अपनी स्किल से, अपने स्टूडेंट का एक ऐसा हुनर, एक ऐसा चरित्र निर्माण करते हैं कि न केवल अपने देश में बल्कि दुनिया भर में, एक बहुत अच्छे एक सेंसिटिव आदमी और एक अनुशासन प्रिय विश्वनागरिक के तौर पर जाना जाए। विश्वविद्यालय का यही मकसद है और मैं समझता हूं कि यह करने में हमारे टीचर्स लगे हुए हैं, परिणाम भी आ रहे हैं और आने वाले टाइम में और परिणाम भी आएंगे जब से NEP आई है, इसमें मैं अनंत संभावनाएं देखता हूँ, शिक्षकों के माध्यम से स्टूडेंट्स के आगे बढ़ने की, और यदि स्टूडेंट आगे बढ़ेंगे तो देश आगे बढ़ेगा और जो 2047 के विकसित भारत का सपना भारत के लोग देख रहे हैं, वह सपना देश के स्कूलों और विश्वविद्यालय से होकर ही गुजरेगा। अगर स्कूलों से वह ट्रेनिंग हुई तो हम उस लक्ष्य तक जरूर पहुंचेंगे नहीं तो वह भी एक लक्ष्य ही बना रह जाएगा। मुझे विश्वास है कि नेशनल एजुकेशन पॉलिसी के दम पर, कॉलेज में नए रिक्रूटमेंट के दम पर, और मेधावी और टैलेंटेड स्टूडेंट्स के यूनिवर्सिटी में आने के कारण, रिसर्च और इनोवेशन, स्टार्टअप्स एवं अन्य क्षेत्रों में हो रहे प्रयासों के दम पर हम इस अचीवमेंट को प्राप्त करेंगे। ऐसा मुझे लगता है।

मीनाक्षी : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन के पश्चात हमारी शैक्षिक व्यवस्था तकनीक एवं अधिगम (Learning) आधारित एवं छात्र केंद्रित हुई है, सर शिवाजी कॉलेज इसके क्रियान्वयन में कितना सफल रहा और भविष्य में आप इस नीति के प्रभाव को किस रूप में देखते हैं?

प्राचार्य : देखिए, शिवाजी कॉलेज तो हमेशा ही दिल्ली यूनिवर्सिटी के उन कॉलेजों में से एक रहा है, कि जो भी नया प्रयोग,इनोवेटिव आइडिया, नया पाठ्यक्रम,नया एकैडमिक स्ट्रक्चर जब भी यूनिवर्सिटी में आए, शिवाजी कॉलेज के टीचर्स की उसमें अग्रणी भूमिका रही है। अभी जो एनइपी आई है। इसके न केवल कॉन्सेप्ट में, बल्कि इसके लागू करने में भी शिवाजी कॉलेज के टीचर्स की सीधी भूमिका है, यूनिवर्सिटी स्तर पर भी और कॉलेज के स्तर पर तो है ही। शिवाजी कॉलेज से एकेडमिक काउंसिल के लोग मेंबर रहे और वहाँ पर वो सारे डिस्कॅशन डिसीजन होते हैं दिल्ली यूनिवर्सिटी में। उन्होंने वहाँ भागीदारी अदा की है। साथ ही कॉलेज लेवल पे जैसे मैंने बताया अभी, कि हमें एक नया इंफ्रास्ट्रक्चर भी नए ब्लॉक के रूप में मिला है जिसका नाम हमने शिवाजी की माता जीजाबाई के नाम पर किया है, तो अच्छा खासा इंफ्रास्ट्रक्चर है, अब हम स्टूडेंट्स की रिसर्च के मामले में, इनोवेशन के मामले में, उनकी क्लासरूम टीचिंग के मामले में पहले के मुकाबले थोड़े से बेहतर तरीके से परफॉर्म कर पाएंगे, क्योंकि हमें ये इंफ्रास्ट्रक्चर उपलब्ध हुआ है। इसके अतिरिक्त टेक्नोलॉजी को लेकर इस कॉलेज के बहुत सारे कमरों में टेक्नोलॉजी इक्विप्ड क्लासरूम हैं। जीजाबाई ब्लॉक में हमने एक रिकॉर्डिंग स्टूडियो भी बनाया, जिसमें टीचर्स अपने लेक्चर खुद से रिकॉर्ड कर सकेंगे और वो भी स्टूडेंट्स के लिए देंगे। Wi-Fi की सुविधा यहाँ उपलब्ध है, लाइब्रेरी का हमने नवीनीकरण किया है। अब शिवाजी कॉलेज में अन्य विषयों के साथ साथ यहाँ तक की शिवाजी महाराज पर भी एक स्पेशल सेक्शन हमने लाइब्रेरी में बनाया है। ऑडिटोरियम भी हमारे पास बढ़ गए हैं। रिसर्च लैबोरेटरी भी बढ़ गई हैं तो उस दम पे हम कह सकते हैं कि जो स्किल एनहांसमेंट कोर्सेस हैं, वैल्यू एडिशन कोर्सस हैं ,उनको भी हम इफेक्टिव ढंग से और बेहतर तरीके से लागू कर पाएंगे। जो मेन कोर्सेस हैं, उनकी जो चुनौतियां थी इंफ्रास्ट्रक्चर को लेकर। नए ब्लॉक के मिलने से उसमें हमें हेल्प मिलेगी। टीचर्स लगातार अपने आर्टिकल्स लिख रहे हैं, रिसर्च कर रहे हैं, रिसर्च करवा रहे हैं, उनके अंडर रिसर्च हो रही है, पीएचडी अवार्ड हो रही है, पोस्ट डॉक्टरेट अवार्ड हो रही है। तो वो सब कुल मिलाकर एक बेहतर एकैडमिक एट्मॉस्फियर है, और एनइपी को बिल्कुल इसकी स्पिरिट के साथ हम क्रियांवित कर रहे हैं। यह स्पिरिट है भारतबोध। भारतबोध का मतलब हुआ कि हमारी खुद की स्व की जो पहचान है, उसको ध्यान में रखकर हम तमाम विषयों का अध्ययन विश्लेषण करेंगे। इस दिशा में और इस नज़रिये से अभी बहुत रिसर्च होनी बाकी है।

आज़ादी के बाद भारतबोध से प्रेरित एजुकेशनल पॉलिसी लागू करने में 70 साल लग गए, ऐसी शिक्षा नीति जिसमें भारतीय भाषाओं के सम्मान की कोई स्थिति हो, जिसमें भारत के कल्चर की कोई स्थिति हो, भारत की संस्कृति की मूल्य व्यवस्था को, एथिक्स को, उन वैल्यूज को हम अपने एजुकेशन सिस्टम में इन्कल्केट कर पाएँ। अब तक भाषा को सीमित मानते हुए बहुत सारे विषयों में भारतीय भाषाओं को अंदेखा कर किसी एक भाषा के वर्चस्व को स्थापित किया गया। यह कहा जाता रहा कि हम इन भाषाओं में इंजीनियरिंग नहीं करा सकते, विज्ञान और तकनीक की शिक्षा नहीं दे सकते। इन्नोवेशन नहीं करा सकते, रिसर्च नहीं करा सकते, हम डॉक्टरी की पढ़ाई नहीं करा सकते, वगैरह वगैरह। कारण दिए जाते रहे कि क्योंकि इसमें इस भाषा में किताबें नहीं हैं। इन बातों को हमने 70 साल सुना। पूछना चाहिए कि अगर भाषाओं में सामग्री का ना होना इतनी बड़ी चुनौती होता तो साउथ कोरिया, चीन, जापान,रूस, जर्मनी आदि देश कैसे इन क्षेत्रों में इतने विकसित हो गए, वो तो कोई अंग्रेजी के ऊपर निर्भर नहीं थे। ये सभी देश अपनी ही भाषा और अपने ही राष्ट्रबोध के दम पर आगे बढ़े, तो इस शिक्षा नीति के माध्यम से इस नज़रिये से हम देख रहे हैं और जब हमने ये देखना शुरू किया है तब चंद्रमा पर चंद्रयान उतरा है और वह भी चंद्रमा की उस सतह पर जहाँ पर आज तक किसी ने कदम नहीं रखे। ये हमारी टेक्नोलॉजी और भारत के अपने स्वत्व का एक बेहतरीन उदाहरण है। तकनीक के मामले में देखिए हमारे ही विश्वविद्यालय से पढ़कर विश्वभर में हमारे छात्र छाये हुए हैं। मेक इन इंडिया जैसी भविष्यगामी योजनाएं भारत में लागू हो रही हैं। जैसे अभी तक हम मोबाइल फ़ोन सिर्फ इंपोर्ट करते थे, अब भारत में इनका उत्पादन शुरू

हुआ है। तो ये सारी चीजें आने वाले टाइम में इस एजुकेशन पॉलिसी से शक्ति अर्जित करेंगी। स्किल डेवलपमेंट के कोर्सेस के तहत कोई भी स्टूडेंट इन यूनिवर्सिटीज़ से निकलेगा तो वो किसी स्किल के साथ निकलेगा और आप सोचिए यदि फिजिक्स ओनर्स करके बच्चा अपने फ्रिज का बल्ब भी नहीं बदल सकता,थर्मल स्टेट नहीं बदल पा रहा, तो इस तरह के किताबी ज्ञान से वह समाज में किस तरह अपने लिए और समाज के लिए अवसर पैदा कर पाएगा। यह शिक्षा नीति किताबी ज्ञान के साथ व्यावहारिक और कौशल विकास की दिशा में काम कर रही है। आज बोए गए बीज कल फले फूलेंगे। इसलिए मैं आशावादी हूँ। मुझे इसमें बहुत संभावनाएँ दिखती हैं।

मीनाक्षी : सर, आपकी प्राचार्य के रूप में नियुक्ति जिस समय हुई वह बहुत ही चुनौतीपूर्ण समय था खासकर शिक्षकों की नियुक्ति के संदर्भ में। लेकिन लगभग छः महीने के छोटे से अंतराल में आपने १०० से अधिक स्थाई शिक्षकों की नियुक्ति बिना थके बिना रुके की। यह कॉलेज के स्तर पर ही नहीं बल्कि विश्वविद्यालय स्तर पर भी एक रिकॉर्ड उपलब्धि है। सर नवनियुक्त शिक्षको से कॉलेज के उत्थान एवं दायित्व निर्वहन को लेकर आपकी क्या उम्मीदें हैं?

प्राचार्य : देखिए, ये नियुक्तियां कई सालों से अलग अलग कारणों से रुकी हुई थीं। विश्वविद्यालय जब कमजोर पड़ते हैं तो किसी भी देश का चिंतन प्रोसेस कमजोर पड़ जाता है तो दुर्भाग्यवश पिछले कई सालों से सरकार की कोशिशों के बावजूद दिल्ली यूनिवर्सिटी में नियुक्ति की प्रक्रिया भी रुकी हुई थी, जिससे विश्वविद्यालय एक तरह के ठहराव में था। न नियुक्तियां हो रही थीं, न टीचर्स की प्रमोशन हो रही थी, न नए कैरिकुलम आ रहे थे, न कोई नई एजुकेशन पॉलिसी से संबंधित कुछ काम हो पा रहे थे, वगैरह वगैरह। नियुक्तियां पूरी यूनिवर्सिटी के डेवलपमेंट का एक महत्वपूर्ण अंग हैं अगर वह नहीं हो पाती तो यूनिवर्सिटी की प्रोग्रेस बाधित होती है और सिर्फ यही नहीं उसके अलावा भी बहुत सारे विषय यूनिवर्सिटी में होते हैं जो इसकी वजह से आगे नहीं बढ़ पाते। हम सौभाग्यशाली है कि हमें ऐसे वाइस चांसलर प्रो. योगेश सिंह के रूप में मिले। उन्होंने दिल्ली यूनिवर्सिटी को लगभग दो साल पहले ज्वाइन किया और इस सारे प्रोसेस को उन्होंने चुनौती के तौर पर लिया सरकार तो ऊपर से पहले भी कह रही थी कि अपॉइंटमेंट करो लेकिन यूनिवर्सिटी के स्तर पर वह निर्णय नहीं लिए जा रहे थे और ऐसी ऐसी कहानियां थी कि ये तो इंपॉसिबल है ये तो हो ही नहीं सकते इसमें तो 4 साल लगेंगे 6 साल लगेंगे..। वॉइस चांसलर साहब ने इसका एक रास्ता निकाला और उनकी टीम जिसमें माननीय डीन ऑफ कॉलेजेस, रजिस्ट्रार साहब, डायरेक्टर साउथ कैंपस और बाकी अन्य टीम मैंबर्स सिलेक्शन कमेटी में आए हुए एक्सपर्ट, चेयरमैन एवं अन्य लोग सब लोगों ने मिलकर इसको एक मिशन के तौर पर लिया कि हम इस यूनिवर्सिटी को ढ़हने नहीं देंगे। परमानेंट होने के बाद उस शिक्षक का विज़न, उसकी क्लियरिटी, उसकी रिसर्च, उसका स्टूडेंट के प्रति दायित्व, संस्था के प्रति उसका कमिटमेंट और ज्यादा मजबूत हो जाता है। जब वह परमानेंट पोजीशन पर काम करता है, तो इस टीम ने नियुक्ति की इस प्रक्रिया को एक मिशन के तौर पर लिया इसमें मेरी भूमिका तो बहुत छोटी सी थी जितनी थी मैंने अदा की पर सारा श्रेय मैं यूनिवर्सिटी के अधिकारियों को देता हूँ और माननीय प्रधानमंत्री जी को जो बहुत चिंतित थे कि युवाओं को रोजगार कैसे मिले।सरकार ने रोजगार के लिए सारी पोजीशन दे रखी है अब उसके लिए इंटरव्यू हेल्ड कराने की जिम्मेदारी तो लोकल लेवल पर है उस जिम्मेदारी को उठाने के लिए कोई तैयार ही नहीं था तो यहां वॉइस चांसलर साहब ने इनिशिएटिव लिया और उन्होंने तमाम तरह की चुनौतियों से पार पाते हुए अपने इस प्रोसेस को आगे बढ़ाने के लिए सभी कॉलेज के प्रिंसिपल्स से कहा, कई मीटिंग्स की और उसका परिणाम यह है कि हमारे ही नहीं विश्वविद्यालय के अधिकतर कॉलेजों में शिक्षकों को स्थायित्व मिला है।

कॉलेज में अगर निराशा का वातावरण होगा, यूनिवर्सिटी में अगर अंधेरा है तो उस देश का भविष्य कैसे चमकेगा। अब कॉलेजेज़ में सब जगह उत्साह है। स्टूडेंट्स और टीचर्स के बीच में एक नए ढंग का कॉन्फिडेंस बिल्डअप हुआ है और जो नए टीचर्स आए हैं, मैं समझता हूँ बहुत टैलेंटेड टीचर्स हैं। ये टेक्नोलॉजी फ्रेंडली लोग हैं जो इससे पिछली पीढ़ी थी वह इतनी टेक्नो फ्रेंडली नहीं थी, ये हैं। टेक्नोलॉजी का अपनी एजुकेशन में अपने रिसर्च में अपने लेक्चर डिलीवरिंग में अपने रोजमर्रा की लाइफ से जुड़ी हुई चीजों को बेहतर बनाने में स्टूडेंट्स को यह कॉन्फिडेंस देने में कि इस पढ़ाई से आपको यह काम मिलेगा, यह रोजगार मिलेगा, आप इस ढंग से बेहतर मनुष्य बनोगे, आपके चरित्र में यह चीज़ जुड़ेगी। ये तमाम चीज़ें ये टीचर्स और इफेक्टिव तरीके से समझा सकते हैं। बता सकते हैं तो एक संपूर्ण मनुष्यता के निर्माण का इनको अवसर मिला है। एक स्टूडेंट्स 17 से 18 साल की उम्र में कॉलेज ज्वाइन करता है सपनों से उमंगों से भरी हुई उड़ान के साथ कॉलेज आता है। अगर अब वह लौटते वक्त कुछ लेकर नहीं जा रहा, यह देखता हुआ जा रहा है कि यह 4 साल कहां खराब किए अगर कह कर जा रहा है कि खराब किए, तो एक शिक्षक होने के नाते हमने कुछ भी कंट्रीब्यूट नहीं किया और वह कहकर जा रहा है कि जिस दिन मैं आया था और जिस दिन आज मैं ग्रेजुएट होकर जा रहा हूं आज मैं कुछ और हूँ तो समझिए हमने कुछ किया मैं भरोसा करता हूँ कि नई फैकल्टी निश्चित रूप से इस दिशा में काम करेगी और हम उनको वह तमाम अवसर, सुविधा, साधन उपलब्ध कराएंगे और छात्र हित में संस्था के हित में सब लोग आगे बढ़ेंगे।

मीनाक्षी : जैसे कि हम सभी जानते हैं कि यह वर्ष विशेष है क्योंकि यह वर्ष छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक और हिंदवी स्वराज की स्थापना की 350 वीं वर्षगांठ का प्रतीक वर्ष है। आपके नेतृत्व में शिवाजी कॉलेज ने पूरे वर्ष इसे उत्सव के रूप में मनाया है। आपके विचार में वह कौन से मूल्य हैं जो आज की युवा पीढ़ी को शिवाजी के जीवन से सीखने चाहिए।

प्राचार्य : दिल्ली विश्वविद्यालय में शिवाजी महाराज की विरासत के पहले पहरेदार हम हैं तो इस नाते शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक का उत्सव शिवाजी कॉलेज में बड़े स्केल पर मनाया गया है, यह उत्सव साल भर चला है इस पर कॉलेज में और कॉलेज के बाहर भी हमने अनेकों कार्यक्रम आयोजित किए हैं। हर डिपार्टमेंट ने इस पर अपने-अपने एंगल से विचार किया है। हमारे कॉलेज में आने वाले छात्र अपने भविष्य के निर्माण की खोज में हमारे पास आए हैं। शिवाजी महाराज के चरित्र से सीखने की बात जब आती है तो आप शिवाजी महाराज के जीवन से कुछ प्रेरक प्रसंग लीजिए एक प्रेरक प्रसंग है कि बाल शिवा को जिजाऊ माता कहती हैं कि सूर्य को जल देते वक्त सामने के किले पर लगी मुगल पताका उन्हें बहुत अखरती है। उस किले पर मुगलों का कब्जा है। अपनी माँ की बात सुन शिवाजी महाराज प्रण करते हैं कि माता आपकी इच्छा जरूर पूर्ण करेंगे तो जो बच्चा अपनी मां के प्रति कमिटेड होकर, मां के प्रति स्नेहमयी होकर, अपनी माँ के दिए संस्कारों को अपने भीतर गढ़ता है। जो विश्वास उस दिन उस बच्चे के मन में उभरा वह उसने पूरा किया तो इसका मतलब हुआ कि आपके चरित्र और आपके व्यक्तित्व का निर्माण करने में मां की गहरी भूमिका है। शिवाजी महाराज तो हैं ही माता जीजाबाई जी की वजह से। एक दो और छोटे छोटे प्रसंग हैं कि किसी युद्ध में शिवाजी महाराज की सेना ने जीत हासिल की तो उनके उस जमाने में ऐसे होता था कि विजयी सेनापति पराजित राजा का सब माल अपने राजा के सामने पेश करता था तो ऐसे ही एक बार जीते हुए माल को लेकर सेनानायक शिवाजी महाराज से कहने लगे कि इसके अतिरिक्त आपके लिए एक बहुत सुंदर तोहफा भी लेकर आए हैं। शिवाजी महाराज पूछते हैं कौन सा तोहफा, दिखाओ तो, तब हीरे जवाहरात और सोने चाँदी के सामान के साथ उन्होंने एक पालकी में उस विपक्षी पक्ष के जो मुख्य प्रमुख थे उनकी पत्नी को शिवाजी महाराज के समक्ष पेश किया। शिवाजी महाराज ये देखकर भौंचक्के रह गए। अब उस जमाने में ऐसे तो फिर जीता हुआ राजा हारे हुए राजा से सब कुछ छीन लेता था अब देखिए कैरेक्टर बिल्डअप, माता जीजाबाई की शिक्षा और चरित्र निर्माण। शिवाजी महाराज ने जैसे ही उस सुंदर युवती को देखा, , तो उन्होंने उनको प्रणाम किया और कहा माता आप वाकई बहुत सुंदर हो काश मैंने आपके बेटे के रूप में जन्म लिया होता। तो मैं भी सुंदर होता, यह उन्होंने उस मातृ शक्ति के प्रति वंदना की यह उनकी मां से मिला हुआ संस्कार था तो महिलाओं के सम्मान की यह स्थिति शिवाजी कॉलेज से जो माता जीजाबाई के पुत्र के नाम पर रखे गए शिवाजी महाराज के कॉलेज से जिनका व्यवहार यह था उससे निकलने वाले टीचर्स के दिल दिमाग में महिलाओं के प्रति यह सम्मान की स्थिति होनी चाहिए। इस रूप में शिवाजी महाराज प्रासंगिक हैं। हम बच्चों को यह सिखा पाते हैं, बच्चे कितना सीख पाते हैं यह अलग विषय है। पर हमारे आइडियल हैं ये। शिवाजी महाराज ने सबसे पहले आधुनिक नेवी की नींव रखी। शिवाजी महाराज ने भारत में आधुनिक मॉडर्न नेवी को एक तरह से इंट्रोड्यूस किया। उन्होंने अष्टप्रधान की जो संरचना और स्थापना की थी उससे हमें प्रेरित होने की जरूरत है और सबसे बड़ी बात है कि शिवाजी महाराज ने मराठा होने के बावजूद मराठा स्वराज की अपेक्षा हिंदवी स्वराज की स्थापना की चाहते तो पूरे हिंदुस्तान में अटक से कटक तक मराठा साम्राज्य की पताका फहराते, तो उनका विज़न बड़ा था, सोच बड़ी थी। बहुत बड़ी सोच के व्यक्ति थे छत्रपति शिवाजी। तो हमारे पास उनसे प्रेरित होने के असंख्य उदाहरण हैं। असंख्य उनके द्वारा किए गए क्रियाकलाप हैं। एक उदाहरण आप और देखिए शिवाजी महाराज ने जो व्यवस्था स्थापित की और गवर्नेंस के मैनेजमेंट का जो सिस्टम बनाया वह ऐसा सिस्टम था कि यदि राजा दो महीने, चार महीने या छः महीने वहाँ नहीं भी है तो सिस्टम अपनी जगह वैसे ही काम करेगा जैसे राजा के होने पर किया करता है और अपने मन से करेगा। इसको कहते हैं राम राज्य तो इस राम राज्य का सही प्रगटीकरण भारत में अगर देखें तो पिछले 300-400 साल की हिस्ट्री में हमें शिवाजी महाराज के राज्य के दौरान दिखालाई पड़ता है। तो उनसे सीखने के लिए हमारे पास बहुत सारी चीजें हैं।

मीनाक्षी : आने वाले वर्षों में शिवाजी कॉलेज देश के विकास में कैसे योगदान दे सकता है। आप शिवाजी कॉलेज को भविष्य में किस रूप में समाज और देश का प्रतिनिधित्व करते हुए देखना चाहेंगे ?

प्राचार्य : शिवाजी कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय के अग्रणी कॉलेजों में से एक है। इस देश में हजारों की संख्या में कॉलेज हैं। हमारा कॉलेज उनमें से टॉप ५० कॉलेजों में से एक है। अब हमारा लक्ष्य रहेगा कि हम पहले १० में कैसे आएँ। हमारी वहां तक पहुंचने की कोशिश रहेगी। साइंस, आर्ट्स, कॉमर्स सभी स्ट्रीम हमारे यहां हैं। स्पोर्ट्स का बेहतरीन प्लेग्राउंड हमारे पास है। बड़ी लाइब्रेरी है। खूब इन्नोवेटिव आईडियाज को एक्सपोर्ट करने के लिए बड़ी-बड़ी लैबोरेट्रीज अच्छे क्लासरूम हैं। तो मैं समझता हूं कि आने वाले टाइम पर शिवाजी कॉलेज इस देश के युवाओं को दिशा देने में अग्रणी भूमिका निभाएगा। एससी , एसटी स्टूडेंट्स के लिए शिवाजी कॉलेज में अंबेडकर सेंटर के तहत एक स्पेशल प्रोग्राम चलाया जाता है जिसमें उनको IAS बनने और सिविल सर्विसेज की तैयारी एवं ट्रेनिंग हम कराते हैं। कॉलेज लेवल पर 'दिशा' नाम से एक सोसायटी है वह भी इस दिशा में काम

करती है। हमारे बहुत सारे स्टूडेंट स्टार्टअप और इन्नोवेटिव आईडियाज पर काम कर रहे हैं। वह उधमोद्य फाउंडेशन और ऐनऐक्टस के साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं। मैं समझता हूँ आने वाले समय में शिवाजी कॉलेज का भविष्य उज्ज्वल है और हमारे कॉलेज से निकले छात्रों का कॉन्ट्रिब्यूशन यह देश ही नहीं दुनिया रिकॉग्नाइज करेगी।

मीनाक्षी : सर, एक छात्र होने के नाते बहुत ख़ुशी हो रही है कि आप प्राचार्य के रूप में छात्रों के इतने हित में सोच रहे हैं। और इतनी भविष्यगामी सोच रख रहे हैं। धन्यवाद सर। सर मैं सभी छात्रों की ओर से आपको विश्वास दिलाती हूँ कि हम सभी विद्यार्थी आपके निर्देशन में आगे बढ़ते रहेंगे और आपकी उम्मीदों पर खरा उतरेंगे। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद सर आपने अपने व्यस्ततम समय में से समय निकालकर अपना बहुमूल्य समय हमें दिया। बहुत बहुत धन्यवाद सर।

शिवराज 2024 के अंक हेतु यह साक्षात्कार हमारे प्राचार्य प्रोफेसर वीरेंद्र भारद्वाज जी के साथ हमारी बी.ए. ऑनर्स(हिंदी) की छठे सेमेस्टर की छात्रा मीनाक्षी द्वारा डॉ. तरुण गुप्ता एवं अंग्रेजी विभाग में प्राध्यापक डॉ. देबोस्मिता जी के सहयोग से लिया गया।

छात्र सहयोग –

मीनाक्षी, निखिल, बॉबी, मिथिलेश (हिंदी ऑनर्स, तृतीय वर्ष)
यश, तन्मय (शटरबर्ग सोसायटी)

COVER PAGE DESIGNING TEAM

Aryan Sharma B.A. Programme II[nd] Year

Every stroke of artistry narrates a tale of countless emotions. I am honored to receive this beautiful opportunity to represent my college's face "Shivaji" through the cover page of the annual magazine. Working on the diverse subjects of Shivaji Maharaj was a vividly enriching experience throughout the events.

B.Sc. Biochemistry Honors I[st] year

Making the cover page for our college magazine has been an exhilarating experience. Immense gratitude to the magazine committee for this prestigious honor. Shivaji Maharaj, the great Maratha king, holds a significant place in Indian history due to his exemplary leadership, innovative military tactics, and dedication to his people and culture.

B.Sc. Biochemistry Honors I[st] year

It gave me extreme pleasure to design the cover page for the College Magazine. I am obliged to the Magazine Committee for giving me this incredible opportunity.

B.Sc. Biochemistry Honors III[rd] Year

I'm deeply honoured to have made the back cover for the College annual magazine and would like to express my gratitude to the entire Magazine Committee for giving me this amazing opportunity.

Manish Kumar B.Sc. Applied Physical Science III[rd] Year

As a graphic designer, my deep affection for art drives my every creation. Designing is my passion, and nothing could be more fulfilling than working on our college's magazine. This project has been a proud moment for me, offering a unique platform to channel my love for graphics into something that resonates with our community. It's an honor to blend my creative skills with the legacy of Shivaji Maharaj, making this experience both personally and professionally enriching. Through this journey, I've discovered new depths of artistic expression and reaffirmed my dedication to the world of design

CHRONICLES OF **SHIVAJI**

JULY

- SECOND SEMESTER EXAM
- ADMISSION PROCESS

AUGUST

- INDEPENDENCE DAY
- ORIENTATION PROGRAMME FOR FIRST YEAR STUDENTS
- PLACEMENT CELL WORKSHOP

SEPTEMBER

- DONATION DRIVE
- HINDI PAKHWADA
- G 20 UNIVERSITY CONNECT FINALE

OCTOBER

- SWACHHATA PAKHWADA
- AMRIT KALASH YATRA
- SHIVAJI BHOSLE PARLIAMENTARY DEBATE UNDER SHIVRAJ 350
- MERI MATTI MERA DESH
- UDHMODYA FOUNDATION, VIKSIT BHARAT

NOVEMBER

- DEEP UTSAV
- CELEBRATE THE LEGACY OF CHHATRAPATI SHIVAJI MAHARAJ CULTURE EVENT

SHIVRAJ

350

DECEMBER

- FACULTY INDUCTION PROGRAM
- SEMESTER EXAM

JANUARY

- HINDI SWARAJ STHAPANA MAHOTSAV
- LOHARI AND MAKAR SHANKRANTI CELEBRATION
- RAMOTSAVA PROGRAMME
- REPUBLIC DAY

FEBRUARY

- SHIVAJI JIYANTI
- INTERNATIONAL CONFERENCE ON RESURGENT BHARAT ON THE GLOBAL CANVAS

MARCH

- VIBRATION 24
- FACULTY TRIP

APRIL

- 65TH ANNUAL DAY
- SHIVRAJ LECTURE
- KAVI SAMMELAN

MAY

- CRESCITA 24, ANNUAL INTERNSHIP AND PLACEMENT FAIR
- RUN FOR VIKSIT BHARAT

संस्कृत-विभागः

छात्र सम्पादकीयम्

शिवाजी महाविद्यालयस्य वार्षिक पत्रिकां “शिवराज350” प्रस्तुत्य अमन्दानन्दम् अनुभवामः। सर्वप्रथमम् अस्माकं महाविद्यालयस्य नवनियुक्त प्राचार्यस्य हार्दम् स्वागतम् अभिनन्दनञ्च क्रियमाणः दीर्घायुष्यं च वेदमन्त्र माध्यमेन काम्यामहे ।

शतमान भवति शतायुः पुरुषश्शतेन्द्रिय ।

आयुष्येवेन्द्रिये प्रति तिष्ठति । ऋग्वेद॥

प्रतिवर्ष महाविद्यालयस्य पत्रिकेयं सुरभारतीसमुपासकानॉ छात्र-छात्राणां शिक्षक-शिक्षिकानां च भावनां मूर्तरुपेपण प्रदातुं पूर्णगौरवेण प्रस्तुता भवति । महाविद्यालये घट्मानानि कार्याणि सर्वेषां सुधिपाठकानां गीर्ववाणी समुपासकानां पुरतः प्रस्तुत्य तान् जीवन्तरूपेण प्रस्तौति । अत्र हिन्दी- आंग्ल संस्कृतभाषासु काव्य-कथा-निबन्धादिविविधाः प्रस्तूयन्ते । नवसर्जकानां छात्र-छात्राणां सर्जनात्मक शक्तिविकासाय भावनां मूर्तरुपेण प्रकटीकरणाय स्थानं प्रददाति पत्रिकेयम् । गुरुवर्याणाम आशीर्वचांसि शब्दशरीरमाघृत्य मुद्रिताः भवन्त्यत्र । नवांकुरित काव्यकाराणां छात्र-छात्राणां रचनाः विद्यन्तेऽत्र सुधि - पाठकानां प्रोत्साहनं चापेक्षते । यतो हि लेखका: पाठका: एव पत्रिकायाःआधारस्तम्भाः । अन्ते हंसासनसमुपासकः स्वनामधन्यः श्रीमान् प्रो० डॉ० वीरेन्द्र भारद्वाजः महोदयः अस्माकं सर्वेषां धन्यवादान् अर्हन्ति यस्य स्नेहः सङ्गतिः मार्गदर्शनं च सदैव प्राप्तमस्ति । जयतु सुरभारती जयतु शिवराजः

अन्नू कुमारी

कला-स्नातक: (संस्कृत-विशेष:), द्वितीयवर्ष:

यथार्थ रक्षक:

अतीव आह्लादकः मनोज्ञश्च उषाकालस्य समयः आसीत्। मन्दं मन्दं समीरः प्रवहति स्म। पक्षिणः कलरवं कुर्वन्ति स्म। पुष्पाणि विभ्रमेण स्व सुगन्धिं पारितः विकिरन्ति स्म। एवं सम्पूर्णा प्रकृतिः प्रफुल्लिता आसीत्। तदैव जपापुष्पं (गुलाब) समीपस्थितं कण्टकं प्रति अवदत्- 'युष्मत् कारणेन जनाः मम सम्मानं न कुर्वन्ति। स्व वस्त्रांचलं रक्षयन् दूरात् एव निर्गच्छन्ति। त्वम् न भवेः चेत्, तर्हि कियत् शोभनं स्यात्' इति । एतत् श्रुत्वा कण्टकः विहसन् विनम्रभावेन उक्तवान्- "पुष्पभ्रातः ! भवान् समीचीनमेव कथयति। जनाः मम कारणात् एव स्वम् उत्तरीयं रक्षयन्तः तव दूरात् एव निर्गच्छन्ति । मद्भयात् एव तेषां क्रूरपाणयः तव ग्रीवां प्रति न उत्तिष्ठन्ति स्व प्राणान् उपेक्ष्य अहं भवतः रक्षां करोमि। तदैव भवता प्रसन्नतया एषा शोभना सुगन्धिः सर्वत्र विकीर्यते। वस्तुतः अहम् एव तव यथार्थरक्षकः।" तस्य तत् दचनं श्रुत्वा जपापुष्पं नतमस्तकं संजातम्, तस्य अहंकारः दूरीभूतः। तेन स्व चिन्तनाय कण्टकं प्रति क्षमायाचना कृता।

सुधा - कला-स्नातक: (संस्कृत-विशेष:), प्रथमवर्ष:

सच्चरित्रता

एकस्मिन् ग्रामे एकस्य ब्राह्मणस्य आम्राणाम् एकम् अतिविशालम् उद्यानम् आसीत्। एकदा तस्य समीपे एकः युवकः आगच्छत्, अप्रार्थयत् च स्वभृत्यभावम्। तस्य विपन्नाम् अवस्थां विचार्य ब्राह्मणेन सः युवकः स्व-उद्यानस्य रक्षणार्थ नियुक्तः । तदनन्तरं दत्तचित्तः सः तस्य उद्यानस्य अवेक्षणं रक्षणं च करोति स्म। एवं बहूनि वर्षाणि व्यतीतानि । सः युवकः उद्याने खलु एकस्मिन् स्थले निर्मितायां पर्णशालायाम् एव वसति स्म, तन्मयभावेन स्वकर्तव्यं करोति स्म। ब्राह्मणः अपि तस्य समर्पणभावेन अतिप्रसन्नः आसीत् । एकदा ब्राह्मणस्य समीपे तस्य घनिष्ठः मित्रम् आगच्छत्। तं मित्रं सः ब्राह्मणः स्व उद्यानम् आनयत्। उद्यानं गत्वा सः तं युवकं शय्या-प्रसारणाय मधुराणि फलानि च आनेतुम आदिदेश। पर्णशालायाः बहिर्भागे शय्यां प्रसार्य सः युवकः विनम्रभावेन शीतलं जलमपि पानार्थम् आनीतवान् । ततः सः आम्राणि आनेतुम् अगच्छत्। अति प्रयत्नेन सः कानिचित् पक्वानि फलानि गृहीत्वा ब्राह्मणस्य समीपम् आगतवान् । तानि च सर्वाणि तत्र स्थिते जलपात्रे प्रक्षाल्य स्व स्वामिनः समक्षे प्रस्तुतवान् ।

दीपांशी - कला-स्नातक: (संस्कृत-विशेष:), प्रथमवर्ष:

अनुशासनस्य महत्त्वम्

अनुशासनम्, व्यवस्थाया नियमस्य च नामान्तरम् अस्ति। सर्वस्मिन् जगति वयं नियमं प्रकृतेरनुशासनं वा पश्यामः। अतः एव वैदिकमन्त्रे उच्यते 'सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपः पृथिवीं धारयन्ति' इति। यानि तत्त्वानि पृथिवीं धारयन्ति तेषु ऋतस्य नियमस्यानुशासनस्य वा महत्त्वपूर्ण स्थानमस्ति। सूर्यः नियमतः उदेति, नियमतश्चास्तमेति, नियमतः एव ऋतवो भवन्ति, नियमत एव ग्रहनक्षत्राणि निश्चित मार्गे परिभ्रमन्ति, नो चेत् सर्वत्र महान् विप्लवः स्यात्। विचार्यतां यदि स ्वेच्छया रविरपि कदाचित् प्रकाशेत न वा प्रकाशेत, यदि वा नद्यः स्वेच्छया जलं वहन्तु न वा वहन्तु तदा किं भवेत्। कदाचिद् यदि बहुषु वर्षेषु एकदापि अतिवृष्टिरनावृष्टिव भवति तदा जनानां कष्टानि असह्यानि जायन्ते, यदि पुनः कश्चिदपि क्रमः कदापि न स्यात् तह का दशा जायेत इति सुखम् अनुमातुं शक्यते।

एवमेव व्यक्तेः समाजस्य च जीवने ऽपि अनुशासनस्य अद्वितीयं महत्त्वं वर्तते। साफल्याय उन्नतये च अनुशासनम् अनिवार्यं भवति। यदि अस्माकं जीवने कोऽपि नियमो न स्यात् तदा वास्तविकी उन्नतिः शान्तिश्च न लभ्यते। कश्चित जनः केवलं धन कामयमानः रात्रौ वा दिवा वा न कदापि स्वपिति तदा किं धनेन सः सुखी भवति? तथैव यदि, समाजे सर्वे जनाः केवलं धनसंग्रहतत्पराः स्युस्तदा कथं चलेत् जीवनयात्रा। सर्वत्र हि तदा धनार्थं संघर्षः परस्परं घातप्रतिघाताश्च स्युः। आरक्षका अपि यदि नियमं नानुतिष्ठेयुः तदा चौराः स्वतन्त्रा भूत्वा स्वकार्य विदध्युः। प्रत्येक सैनिकः प्रतिपदं यदि साकं चलति, अन्योन्यसम्बद्धः च भवति, तदैव जीयन्ते युद्धानि। अत एव समाजस्य, राष्ट्रस्य, स्वस्य चोन्नत्य अनुशासनपूर्वकं वर्तितव्यम्। वयं पश्यामो यत् अनुशासनकारणादेव अंगुलिगण्यैरपि आंग्लैः संसारे साम्राज्यं स्थापितम्। अनुशासनेनैव जापानसदृशम् लघु अपि राष्ट्रं महायुद्धविध्वंसं सोढ्वापि पुनः परमोत्कर्षशिखरमारूढम्।

अंश शर्मा - कला-स्नातक: (संस्कृत-विशेष:), प्रथमवर्ष:

आत्मविश्वासः

एकस्मिन् ग्रामे अतीव निर्धनः एकः ब्राह्मणः निवसति स्म। तस्य नाम यज्ञदत्तः आसीत् । तस्य विमला नाम्नि सौभाग्यवती एका पत्नी मंगूः नाम्नश्चैकः पुत्रः आसीत्। सः ब्राह्मणः ग्रामेषु पौरोहित्य कर्म कृत्वा स्वाजीविकां आचिनोति स्म। तौ स्व पुत्रमतीव स्नेहं कुरुतः स्म। अल्पवयसी अपि मातृ-पितृभक्तः सः पितरौ सदैव सेवां करोति स्म

तन्मयभावेन । सदैव तयोराज्ञां मन्यते स्म। तस्य माता तं श्रेष्ठं नागरिकं निर्मातुं वांछति स्म। बाल्यकाले खलु तस्य मात्रा एषा वै शिक्षा प्रदत्ताऽऽसीत् यत् - 'भगवान् खलु सर्वेषां पिता अस्ति, सो वै सर्वेषां हितं करोति, अतः सदा तस्यैव स्मरणं करणीयम् । विकटपरिस्थितावपि खलु नैव धैर्य परित्यक्तव्यम् मनुष्यैः । परिश्रमेण वै जीविका यापनं करणीयम्, नैव कदापि केनापि दयाभावेन। स्वाभिमानस्य सदैव रक्षा करणीया, इति।' मंगोरध्ययने महति रुचिरासीत्, अतः सो विद्यालयमपि गच्छति स्म। तत्रापि तीक्ष्ण बुद्धेः तस्य विनम्रव्यवहाराद् सर्वे अध्यापकाः तस्य अतीव प्रशंसां कुर्वन्ति स्म। यदा स दशवर्षीयः आसीत्, तस्मिन् ग्रामे महती विपत्तिरागता, विषूचिका सर्वत्र प्रसरिता ।

इशिता - कला-स्नातक: (संस्कृत-विशेष:), प्रथमवर्ष:

राष्ट्रनिर्माणे संस्कृतसाहित्यस्य महत्त्वम्

अनादिनिधना नित्या वागुत्सृष्टा स्वयम्भुवा, आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वाः प्रवृत्तयः ॥** - संस्कृतसाहित्यस्य स्वरूपम्- भारतीयानां विश्वासानुसारं सृष्टिकर्तुः ब्रह्मणः मुखात् वेदमयी संस्कृतवाणी निस्ससार हितेन रसेन वा विगलितवेद्यान्तरज्ञानबलेन सह युक्तं सहितम्, तस्य भावः साहित्यम्। अथवा हितं विहितमावृतं वा हितं सन्निहितं कविभी रक्षितं वा ब्रह्मणा अवहितं ध्यातं वा तेन सह सहितं, तस्य भावः साहित्यम्, इति साहित्य- पदविवेचनधुरन्धराः। अस्मिन् वैज्ञानिके युगे यथा वैज्ञानिकविषयानां महत्त्वं वर्तते तथा संस्कृतसाहित्यस्य महत्त्वं नास्ति, किन्तु अनेकदृष्ट्या अस्य संस्कृतसाहित्यस्य महती उपयोगिता विद्यते। अस्माकं सम्पूर्ण संस्कृतसाहित्यं यं उपदेशं ददाति, तेन न केवलं भारतीयानाम्, अपितु सम्पूर्णमानवतायाश्च हितं भवितुम् अर्हति। संस्कृतसाहित्ये सम्पूर्ण निबद्धां संस्कृतिम् अनुस्मृत्यैव वस्तुतः विश्वकल्याणं सम्भवम्। संस्कृत-साहित्ये विश्वबन्धुत्वभावना - अस्मिन् युगे विश्वस्यैकता महत्त्वपूर्ण वर्तते। संस्कृत-साहित्ये वसुधैव कुटुम्ब भावना सम्बद्धाः श्लोकाः बहवः सन्ति। वैदिक- कालात् आरभ्य आधुनिक संस्कृतकालपर्यन्तं सर्वत्र एतादृशाः कौटुम्बिकी भावनाः विलसन्त्येव। संस्कृतभाषां विना विश्वे इतरभाषासु कुत्रापि ईदृशीलोकोत्तरभावनाः न परिदृश्यते। उदारचेताः विश्वमेव कुटुम्बमिव भावयन्ति। संस्कृतभाषायाः विश्वबन्धुत्वभावना एषैव वर्त्तते। समाजे विश्वे यानि भूतानि सन्ति, तानि आत्मवत् भावयन्तु। विद्यमानाः सर्वे सुखिनः स्युः, सर्वे निरोगिणः भवन्तु, कोऽपि दुःखं न प्राप्नुयात्। विश्वे अथवा ब्रह्माण्डे ये प्राणिनः सन्ति ते सुखिनः भवन्तु।

अन्नू कुमारी - कला-स्नातक: (संस्कृत-विशेष:), द्वितीयवर्ष:

वसुधैव कुटुम्बकम्

वसुधैव कुटुम्बकम् – विश्वस्य सर्वेऽपि प्राणिनःएकस्यैव परमपितापरमेश्वरस्य पुत्राः सन्ति। देशीया विदेशीया वा ते सर्वे एकस्यैव परिवारस्य सदस्याः इव वर्तन्ते। तत्र किं कारणं भेदप्रथनम् ? यदा अभेददृष्टिः प्रवर्तते, तदा जगदिदं स्वर्गमिव चकास्ति। न तत्र मोह-शोकादेः अवसरः, न च तदा विजुगुप्सा विचिकित्सा वा बाधते। एकत्वबुद्धी न दुःखाग्निलेशोऽपि, क्लेशलवोऽपि च। अतएव यजुर्वेदे ईशोपनिषदि च प्रोच्यते- यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्नेवानुपश्यति। सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विचिकित्सति ॥ यजु.4/6 यस्मिन्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद् विजानतः। तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः ।। यजु.4/7 अतएव अनन्तसुखप्राप्त्यर्थं वसुधैव कुटुम्बकम् इति भावना जागर्ति इति सर्वैः मनुष्यैः अंगीकर्त्तव्या। तथा हि कश्चित् नरः पञ्चषड्जनानां कुटुम्बे सुखमनुभवति। इमे नराः मम सहायकाः, ते कुशलिनस्ते निरामयाः भवन्तु, तेषां सुखेन अहमपि सुखी इति भावना तस्य मनसि वर्तते। यस्य मानसे विश्वस्य सर्वेऽपि जनाः मम सहायकाः सर्वे कुशलिनः सर्वे निरामयाः सन्तु, तेषां सुखेन अहमपि सुखी भविष्यामि, एतादृशी भावना जागृता भवति। प्राचीनभारतीयानां मनसि विश्वस्य सर्वेषां जनानां कृते कल्याणभावना आसीत्। ये जनाः कुलीना भवन्ति तेषु इयं स्थायिनी भवति। मानवानामपेक्षया अन्यत्र सांसारिकवस्तुषु वसुधैव कुटुम्बकम् इति भावना दृढतरा दृष्टिपथं याति यथा- अञ्जलिस्थानि पुष्पाणि वासयन्ति करद्वयम्। अहो सुमनसां प्रीतिर्वामदक्षिणयोः समा।। (श.प.प.3) एवमेव पण्डितमदनमोहनमालवीयमहाभागस्य चेतसि सर्वजनकल्याणभावना आसीत्, तेन सर्वमपि कार्य सर्वेषां जनानां सुखसमृद्धिप्राप्त्यर्थं कृतम्। यथोक्तं च तेन- न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्ग नापुनर्भवम् । कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम् ।। (मद.मो.मा.) वस्तुतस्तु द्विविधाः जनाः भवन्ति लोके उदारचरिता-लघुचेताश्च। उदारचेता-जनाः सर्वान् जनान् सुखीकर्तुमेव स्वजीवनस्य परमोद्देश्यं स्वकर्त्तव्यं मन्यन्ते। लघुचेताः जनाः सर्वदा स्वसुखस्यैव चिन्तनं कुर्वन्ति। यथा-यः वृक्षं सिञ्चति, परिवर्धयति किं वा यश्च तं कुठारेण छिनत्ति, उदारचेता वृक्षः उभाभ्यामपि समभावेन छायाप्रदानं करोति। एतादृशी उदारता विरलेषु एव मानवेषु सूक्ष्मेक्षिकया अवलोक्यते। उदारचेतसः यथा

उपकारिषु सदया भवन्ति तथैवानुकारिष्वपि। उदारचरितानां चरितं वर्णयता केनापि कविना अपूर्व चित्रणमुपन्यस्तम् - किमत्र चित्रं यत् सन्तः परानुग्रहतत्पराः। नहि स्वदेहशैव्याय जायन्ते चन्दनदुमाः ।। (विक्रम. 13/8) यथा चित्तं तथा वाचो यथा वाचस्तथा क्रियाः। चित्ते वापि क्रियायाश्च महतामेकरूपता ।। (विक्रम.252) उदारमना जनाः समेषां प्राणिनां कृते सदा समत्वं भजते। सताम् महताम् उदारचरितवतां कृत्यजातं भवति।

अंकित आर्या - कला-स्नातक: (संस्कृत-विशेष:), द्वितीयवर्ष:

स्त्रीशिक्षाया आवश्यकतोपयोगिता च

शिक्षायाः स्वरूपम् - शिक्षा नाम जीवने शुभाशुभावबोधनी पुण्यापुण्य-विवेचनी हिताहितनिदर्शनी कृत्याक्कृत्यनिर्देशनी समुन्नतिसाधिकाऽवनतिनाशनी सद्भावाविर्भावयित्री दुर्भावतिरोधात्री आत्मसंस्कृतिहेतुर्मनसः प्रसादयित्री, धियः परिष्कर्शी, संयमस्य साधयित्री, दमस्य दात्री, धैर्यस्य धात्री, शीलस्य शीलयित्री, सदाचारस्य संचारयित्री, पुण्यप्रवृत्तेः प्रेरयित्री, दुष्प्रवृत्तेर्दमयित्री, समग्रसुखनिधाना, शान्तेः सरणिः, पौरुषस्य पावनी, काचिदपूर्वा शक्तिरिह निखिलेऽपि भुवने । समाश्रित्यैवैतां सुधियो विश्वहितं समाजहितं जातिहितं च चिकीर्षन्ति, लोकस्य दुःख- दावाग्निं संजिहोर्षन्ति, दीनानुपचिकीर्षन्ति, सद्भावानाधित्सन्ति, दुर्भावान् जिहासन्ति, सत्कर्म विधित्सन्ति, दुष्कर्म जिही- षंन्ति, आत्मानं मुमुक्षन्ते च । यथेयं नराणां हितसाधयित्री सुखसाधनी च, तथैव स्त्रीणामपि कृतेऽनिवार्या सुखशान्तिसाधिका समुन्नतिमूला च । यथा च नान्तरेण शिक्षां पुरुषैरभ्युदयावाप्तिः सुलभा सुकरा च, तथैव स्त्रीणां कृत्तेऽपि समधिगन्तव्यम् । नरश्च नारी च द्वावेवैतौ सद्गृहस्थसुरथस्य चक्र- द्वयम् । यथा चक्रेणैकेन न रथस्य गतिर्भवित्री, एवं सर्वार्थसाधिनीं स्त्रिय- मन्तरेण न गृहस्थ-रथस्य प्रगतिः सुकरा । सति विदुषि नरे सहधर्मचारिणी चेत् सच्छिक्षापरिहीणा, न दाम्पत्यं सुखावहम् । द्वयोरेव गुणैर्धर्मेण ज्ञानेन विद्यया शीलेन सौजन्येन च गार्हस्थ्यं सुखमावहतीत्यगन्तव्यम् । यथा नरेण ज्ञानमन्तरा समुन्नतिर्दुलंभा, तथैव स्त्रियाऽपि । एर्तार्ह पुरुषशिक्षावत् स्त्री- शिक्षाप्य निवार्याऽऽवश्यकी च । स्त्रीशिक्षायाः स्वरूपम् - उररीक्रियते चेत् स्त्रीशिक्षाया आवश्यकता हि बहवोऽनुयोगाः पुरतोऽवतिष्ठन्ते । तद्यथा - किं स्यात् स्त्रीशिक्षायाः स्वरूपम् ? कीदृशी शिक्षा तासां हितकरी भवितुमर्हति ? कुमाराणां कुमारीणां च सहशिक्षा श्रेयस्करी न वेति ? विषयेष्वेषु नैकमत्यं मतिमताम् । कुमारीणां शिक्षा कुमाराणां शिक्षावदेव स्यात् । तत्र नोचितः कश्चन प्रतिबन्धः । जीवन- संग्रामे साम्यमूला स्यात् तासु व्यवहृतिरित्येके आतिष्ठन्ते । अन्ये तु नरनार्योः नैर्सागको भेदोऽपौरुषेयः, तेषां कार्यशक्तिरसमा, तेषां व्यवहारक्षेत्रं विपरीतम्, तेषां वृत्तिभेद इत्यास्थाय शिक्षायामपि वैविध्यं हितकरमाकलयन्ति । उचितं चैतत् प्रतिभाति । नार्यो हि मातृशक्तेः प्रतीकभूता इत्युक्तपूर्वम् । तासां कृते सैव शिक्षा श्रेयो वितनितुं प्रभवति या मातृशक्तिमूलभूतान् गुणान् उन्नयेत । तासु शीलं सौकुमार्यं सद्भावं स्नेहं वात्सल्यं सच्चारित्र्यं द्वन्द्वसहिष्णुत्वं कर्तव्य- निष्ठताम् आस्तिक्यं चोत्पादयेत् । गुणानामेतेषामभावश्चेत् तासु, तर्हि सकल-कलानिष्णातत्वमपि तासां निष्प्रयोजनम् । अतस्तादृशी शिक्षा हितकरी या सच्छीलादिगुणाधानपूर्वकं तासु गृहकलावैशारद्यं कनिष्ठतां सद्गृहिणीत्व- बुद्धिमुत्पादयेत् । "स्त्रीशूद्रौ नाधीयाताम्" इत्यत्र न श्रद्दधति सुधियः साम्प्रतम् । लोकव्यवहारज्ञानविहीनानां केषामप्युक्तिरिति तेषां मतम् । स्त्रीशिक्षाया उपयोगिता - सुशिक्षितैव स्त्री सद्गृहिणी सती साध्वी सत्कर्मपरायणा वंशप्रतिष्ठास्वरूपा च भवितुमर्हति । सैव सद्दत्तादिसद्गुण- गणान्वितां संतति विधातुमीष्टे । स्त्रिय एव मातृभूताः सदृशं सद्राष्ट्रं च निर्मातुं प्रभवन्ति । आह्निकक्रियाकलापविकलो मानवो न तथाऽपत्येषु सत्संस्काराधाने प्रभवति, यथा मातरः । अतः मातृशक्तेः शास्त्रेषु महद् गौरवमनुश्रूयते । उक्तं च मनुना - यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ॥ मनु० ३-५६

पूजा कुमारी - कला-स्नातक: (संस्कृत-विशेष:), तृतीयवर्ष:

वर्षविश्वशान्तेरुपायाः

विश्वशान्ते रावश्यकता-जगदिदम् आधिव्याधिपीडितम्, दुःखदावाग्नि-दग्धम्, अभावग्रस्तम्, चिन्तासहस्रनिचितम् अविश्वास-पिशाच क्षुब्धम्, नृशंस- कर्म- संत्रस्तम्, अन्नाद्यभाव- विशीर्ण- चित्तम्, क्षुत्-पिपासाशीविष-संदष्टं च संलक्ष्यते । देशे, विदेशे, सर्वास्मश्च भूमण्डले क्रान्तेविद्रोहस्य नरसंहारस्य च कारुणिकं दृश्यं प्रेक्ष्यते । शान्तेर्नामापि न श्रुतिपथमुपयाति । सर्वोऽपि लोकस्त्रासादीनां संहाराय, भयानां विध्वंसाय, अविश्वासस्य चापगमाय जीवने सुखशान्तेर्मूलं किमपि तत्त्वं कामयते। परं तत् तत्त्वं शान्तिश्च कथमिव लभ्या विश्वशान्तिमन्तरेण । कृतेऽपि प्रयत्ने शान्तिः सौख्यं समृद्धिश्च दुरवापान्येव । यत्र शान्तेनिवासस्तत्रैव सुखं, वैभवं, शिक्षा, उन्नतिः, कलाविकासः, धर्मचर्चा, संस्कृतिसमुदयः, सभ्यतोत्कर्षः,

जीविकोपलब्धिः, सौकर्यं च । विश्वशान्तिः कथं संभवति ? - विश्वशान्तेः सद्भावार्थं लोकेषु समा- जेषु राष्ट्रेषु च सद्भावोदयस्य समवेदनायाः सहानुभूतेश्च परमावश्यकता । सद्भावाद् ऋते न परार्थचिन्तनम्, परदुःखानुभूतिः, परशोषण-विरतिश्च तथैव पारस्परिक विश्वासस्य चानिवार्यत्वम् । पारस्परिक विश्वास एव सद्- भावनां प्रेरयति, परार्थसाधनायोद्बोधयति, परदुःखापहारायोत्तेजयति, स्वार्थ-परित्यागपूर्वकं परातिवारणाय च मानसम् उद्वेलयति । संकीर्णा राष्ट्रियताऽपि विश्वशान्तेः प्रत्यवायरूपेणोपतिष्ठते । तुच्छ राष्ट्रिय-भावनयैव प्रेरिता देशा हीन- बलानि परराष्ट्राण्यात्मसात् कतु प्रयतन्ते । साम्प्रतिक्यां स्थितौ न कश्चन हीनतमोऽपि, दुर्भिक्षादिग्रस्तोऽपि, देशः परतन्त्रतापाशं गले पादयोर्वा बन्धुं कामयते । स्वल्पबलाः स्वल्पाश्चापि देशाः पराधीनतापाशं समूलम् उन्मूल्य स्वातन्त्र्य-सुधां लेभिरे ।

केचन वादा अपि विश्वशान्ति संदूषयन्ति । तत्र पूंजीवादः परशोषणैक-वृत्तिः, स्वार्थसाधनैकप्रवृत्तिश्च । सति जीवति पूँजीवादे विश्वशान्तिः सुदुलं- भैव । साम्यवादो धर्म-आचार-नीति-विरहितत्वाद् लोकोपकार-करणे क्षमोऽपि अनाचार-विद्रोहादि प्राबल्याद् न जनमानसं तोषयति, अपितु वर्गसंघर्ष पोष- यत्ति, ईश्वर-धर्मादि-मर्यादां दूषयति च । अत्तो द्वयोरप्येतयोर्वादयोः सत्त्वे न विश्वशान्तिः सम्भाव्यते । अशान्तेर्मूलं स्वार्थलिप्सा, स्वार्थपरता च । एवम् अभावग्रस्तानां देशानां साहाय्य-व्यपदेशेन पारतन्त्र्यं विधीयते । एतद्दोषवारणार्थं राष्ट्राणां कृते स्वावलम्बनम् एवैकं साधनम् । विज्ञानस्य दुरुपयोगोऽपि अशान्तेर्मूलम् । यदि विज्ञानेन सहाध्यात्मं न संबद्धं स्यात् तहि विज्ञानं दोषायैव । ईसु-महोदय आजीवनं शान्त्यर्थं प्रायतत । परं तदनुयायिनः स्वप्नेऽपि न शान्ति कामयन्ते । विश्वासस्य प्राधान्यम् अपास्य तैः साम्प्रतं तर्कस्यैव प्राधान्यम् उररीक्रियते । परम् आवश्यकता वर्तते तकं- निरोधस्य, विश्वास- संस्थापनस्य च । सर्वविधाऽपि हिंसा अशान्तेर्जननी । हिंसायाः परित्यागेनैव विश्वशान्तिः संभवति । निरस्त्री- करणमपि विश्वशान्तिसंस्थापनार्थम् उपयोगि। सर्वोदय-भावना, 'वसुधैव कुटुम्बकम्' इति भावना, परहित-निरतत्व- कामना च छद्म- प्रपञ्च- कूटनीत्या- दीनां निःसारणपूर्वकं विश्वशान्ति बद्धमूलां सुदृढां च विधातुं प्रभवन्ति ।

सोनालि - कला-स्नातक: (संस्कृत-विशेष:), तृतीयवर्ष:

वैदिकी संस्कृतिः

पुण्या, पुरुषार्थचतुष्टयम्। शिष्ट्वा लोकान् पुनात्येषा, सत्याचारगुणप्रदा।। या वेदस्मृतिशास्त्रविन्मुनिवरैर्जुष्टा सुखैकास्पदा, देवीसम्पदलङ्कृता भगवता श्रीशेन संरक्षिता। या वर्णाश्रमधर्मसारहृदया कामार्थमोक्षप्रदा, नित्या विश्वहितैषिणी विजयते सा वैदिकी संस्कृतिः ।। वैदिकसंस्कृतेः स्वरूपम् - विश्वस्य प्राचीनतमा संस्कृतिः वैदिकसंस्कृतिः वर्तत। जीवनस्य अन्तरङ्ग स्वरूपं संस्कृतिः एव प्रकाशयति। संस्कृतिशब्देन चिन्तनम्, मननम्, मनोवैज्ञानिक अन्वेषणम्, दार्शनिकविश्लेषणम्, कर्तव्य अकर्तव्यविवेचनम्, प्रकृत्तिपुरुषयोः भेदाभेदनिरूपणम्, जीवनलक्ष्यम्, लोकव्यवस्थितेः साधनानि, इत्यादीनि संगृह्यन्ते। वसिष्ठ- पराशर अत्रि-रामकृष्णादिगोत्रोद्भुतानां भारतभूसम्भवानां मनुष्याणां संस्कृतिः वैदिकी- संस्कृत्तिः इति नाम्नाद्य सर्वत्र विश्रुता। अस्मदीयाः पूर्वजाः सूर्य-चन्द्र-व्योम-भूमिप्रभृतीनां तत्त्वानां ज्ञानं सम्यक्तया निदधति स्म। अत्र संक्षेपतः वैदिकीसंकृति एव प्रस्तूयते। संस्कृतिः तु मानव-सत्व-विकासस्य सा प्रक्रिया भवति, यया कश्चिज्जनः स्वकीयं जीवनोद्देश्यम् अधिगच्छति। वैदिकदर्शनम् वेदाः अनादिकालीनाः अपौरुषेयाः सन्ति। तत्र दार्शनिकं तत्त्वं प्रचुरम् उपलभ्यते। वेदेषु देवस्वरूपस्य, ईश्वरस्य, ब्रह्मणः, जीवस्य, प्रकृतेः, सृष्ट्युत्पत्तेः, पापस्य, पुण्यस्य, लोकस्य, परलोकस्य, मोक्षस्य, पुनर्जन्मादीनां वर्णनम् अवलोक्यते। संस्कृतेः सांस्कृतिक परम्परायाः वा प्रवर्तनं मानवस्य अनुभवानाम् आधारे एव भवति। वेदेषु प्राकृत्तिकतत्त्वानां भानु- शशि- वायु- मंघ- विद्युत्- प्रभृतीनाम् इन्द्र- वरुण- रुद्र- मरुत्- प्रभृतिनामभिः वर्णनं प्राप्यते। इयं वैदिकीसंस्कृतिः एव आध्यात्मिकी संस्कृत्तिर्वा भारतीया संस्कृतिः इत्यभिधीयते। तस्या वेद ज्ञानप्रकाशनकारिणां भारतौकसां महर्षीणां विचारैः जीव्यमानत्वात्। एषा संस्कृतिः विश्वसंस्कृतिः इत्यपि कथ्यते तस्यास्त्रिकालवर्तिसकल-

देशस्थप्राणिमात्रोपकारकयज्ञाख्यकर्मनिष्ठत्वात्। धर्मार्थकामादीनां सेवनेन सह परमं पदं प्रापयति वैदिकीसंस्कृति। देवानां सामान्यवैशिष्ट्यमाश्रित्य एकेश्वरवादः समर्थ्यते। तेषां विभेदकगुणानाश्रित्य बहुदेवतावादोऽपि प्राप्यते। यथा वेदेषु- इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान्। एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्त्यग्नि यमं मातरिश्वानमाहुः ।। संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्। त्वमग्ने वरुणो जायसे यत् त्वं मित्रो भवसि यत्समिद्धः। त्वं विश्वे सहसस्पुत्र देवास्त्वमिद्रो दाशुषे मर्त्याय ।।

तनीष्क - कला-स्नातक: (संस्कृत-विशेष:), तृतीयवर्ष:

गीता सुगीता कर्त्तव्या

गीतायाः महत्त्वम्- श्रीमद्भगवद्गीता भारतीयसंस्कृतेः प्राणभूता, गुणगौरवाश्ववरीवर्ति। इयं गीता सर्वासामपि उपनिषदां सारभागं वर्तते। ग्रन्थोऽयं पञ्चमवेदस्वरूपस्य महाभारतस्य अंशभूतः वर्तते। गीतायाः भारतीयदर्शनग्रन्थेषु मूर्धन्यं स्थानं विद्यते। श्रीमद् भगवद्गीतायाः आधारशिला श्रुतिमूलकतत्त्वज्ञानं वर्तते। श्रुतीनां स्मृतीनां सर्वोपनिषदां सकलशास्त्राणां च सारभूतं तत्त्वं गीतायां रमणीयतया प्रस्तुतम्। ज्ञानगरिमान्विता गीता खलु आत्मनः स्वरूपं अवबोधयति, स्थितप्रज्ञता सिद्धयति, निष्कामकर्मयोगं निष्पादयति, यज्ञादीनां महत्त्वं निरूपयति, वर्णाश्रमधर्म प्रकाशयति, ज्ञानयोगमुद्भावयति, भक्तियोगं ज्ञापयति, भगवतो विरारूपं च उद्घाटयति। दुग्धं गीतामृतम्- अस्यां गीतायां सर्वोपनिषदां सारः मनोज्ञया प्रणाल्या साधुतरं विविच्यते। योगेश्वर श्रीकृष्णः गोस्वरूपाणामुपनिषदां दोग्धा पार्थो गोदोहनकाले स्तनन्धयत्वेन समुपस्थितो वत्सः, सुधियश्च तस्य गोदोहस्य दुग्धामृतस्य भोक्तारः। गीता समग्रस्यापि पूर्ववर्तिनो वाङ्मयस्य सारम् उपस्थापयति। अत एवं गीता लोकप्रिया अभवत्। कथितं च-

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः।
पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता, दुग्धं गीतामृतं महत्।।

श्रीमद्भगवद्गीतायां सर्वासामुपनिषर्दा सारभूतं तत्त्वं सङ्कलितम्। अतः सर्वा उपनिषदः गोरूपाः, तासां दोग्धा खलु गोपालः नन्दनन्दनः, कौन्तेयः अर्जुनः वत्सस्वरूपः सुधियः जनाः आसां अमृतरूपरसानां पातारः। अयमेव रसः गीतामृतरस इति विद्वद्भिः कथ्यते। उपनिषदां निगूढं तत्त्वमेव गीतायां भगवता कृष्णेन विलक्षणकाव्यशैल्या मधुरया च वाण्या वर्णितम्। गीतायाः भाषाशैली तादृशी मनोरमा, प्रसादगुणयुक्ता, ज्ञान- विज्ञान- समन्विता च यत् स्वल्पशिक्षा प्रबुद्धोऽपि मानवः अस्याः सामान्यमर्थम् अवगन्तुं शक्नोति। उक्तं च-

गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद् विनिःसृता ।।

वरूण कुमार
कला-स्नातक:
(संस्कृत-विशेष:), तृतीयवर्ष:

शठे शाठ्यं समाचरेत्

अस्मिन् संसारे भिन्न प्रकृतिमन्तः मनुष्याः सन्ति। सज्जना: दुर्जना: च। ये सन्मार्गम् अनुसरन्ति, सदाचारं पालयन्ति, सदैव परेषां हिंतु चिन्तयन्ति, ते सज्जना: स्वजीवनं परोपकारार्थं यापयन्ति। किन्तु अस्मिन् दुर्जनानां संख्या अधिका। दुर्जना: सदैव परेषाम् अहितं चिन्तयन्ति, दुर्व्यवहारन्ति, कुकर्माणि कुर्वन्ति, किन्तु दुर्जना: स्वार्थाय परहितं निघ्नन्ति।

अस्माकं प्राचीना परम्परा शिक्षयति, यत् 'ऋजुनैव वर्मना वर्तते।' महापुरुषाणाम् अपि एतदेव कथनम्। महात्मा गांधी महोदयेन अपि कथितं यत् त्वां कोऽपि मारयति, तर्हि तं न मारय, अपि तुं प्रति अपरं कपोलं कर्त्तव्यम्। हिंसाया: उत्तरं अहिंसाया दातव्यम् इति तस्य कथनमासीत्। किन्तु आधुनिके युगे एषां नीति: न स्वीकरणीया। यतः संप्रति बहवः जनाः स्वार्थपरा: दृश्यन्ते। ये जना: दुष्टमाचरन्ति, तान् प्रति सद्व्यवहारं नीतिविरुद्धं खलु। सज्जनान् प्रति सौजन्यं कर्तव्यं, किन्तु दुर्जनेषु, खलेषु सौजन्यनीतिः न कर्तव्या। मधुरव्यवहारेण अपि दुर्जनाः सदाचारं न व्यवहरन्ति। यथा भुजङ्गानां पयः पानेन विषं वर्धते तथा दुर्जनान् सद्व्यवहारं विषवर्धनमेव। यथा कण्टकेन एव कण्टकं नश्यति, तथा दुर्जनाः अपि दण्डेन एव वशीभवन्ति। महाभारते व्यासेनापि उक्तं 'यस्मिन् यथा वर्तते तस्मिन् तथा वर्तितव्यं स धर्मः। इमां नीतिमनुसृत्य पाण्डवैः कौरवाः हृताः। महाकविना हर्षेणापि उक्तं, 'आर्जव हि कुटिलेषु न नीतिः।' दुष्टान प्रति दुष्टव्यवहार: इयमेव नीतिः प्रभुरामचन्द्रेणपि इमां नीति मनुसृत्य रावणस्य वधः कृतः। यदि रामायण-महाभारतकाले अपि एषा नीतिः स्वीकृताः तर्हि सम्प्रति कलियुगे कि कथनम्?

सज्जनानां प्रति शाठ्यं न वर्तितव्यम् किन्तु एतत् निश्चितं यत् शठः कदापि, सदुपायैः सन्मार्गागच्छन्ति। उक्तमस्ति-

कृते प्रतिकृतं कुर्यात् हिंसिते प्रतिहिंसनम्।
न तत्र दोषं पश्यामि, शठे शाठ्यं समाचरेत।

डॉ.रीना कुमारी
संस्कृत विभाग:
शिवाजी महाविद्यालय:

हिंदी विभाग

छात्र संपादकीय

विद्यार्थी सम्पादकीय

हमें शिवाजी कॉलेज की वार्षिक पत्रिका 'शिवराज' 2023-24 को आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। प्रत्येक वर्ष कॉलेज पत्रिका को पूरी गरिमा के साथ प्रस्तुत किया जाता है | यह पत्रिका विद्यार्थियों की संवेदनाओं एवं भावनाओं की अभिव्यक्ति है, वर्षभर होने वाली गतिविधियों का ब्यौरा है । लेखों कविताओं, निबंधों एवं छायाचित्रों से इसे सजाया गया है | छत्रपति शिवाजी महाराज के 350 वें राज्याभिषेक वर्ष को आधार बनाते हुए पत्रिका का मुख्य विषय भी शिवाजी महाराज के जीवन चरित पर आधारित है | इसमें शिक्षकों और विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत रचनाएँ शामिल हैं। इस पत्रिका के माध्यम से कॉलेज के विद्यार्थियों को अपनी बात कहने का मंच मिलता है। जिसका उद्देश्य कॉलेज के विद्यार्थियों और सभी पाठकों को ज्ञान प्रदान करना है। कॉलेज के क्रियाकलापों का दर्पण यह पत्रिका कॉलेज के हार्दिक क्षण को जीवंत करती प्रतीक होती है |

अंत में, मैं कॉलेज के प्राचार्य महोदय सहित सभी शिक्षकों, संपादकों, कला संपादकों और विशेष रूप से 'शिक्षक संपादकीय बोर्ड' को धन्यवाद देना चाहती हूँ ।

मीनाक्षी

छात्रा सम्पादक, हिंदी

"छत्रपति शिवाजी महाराज: एक अद्भुत योद्धा और नेता का यात्रा वृतांत"

शिवाजी महाराज का जीवन और बचपन की कथा: छत्रपति शिवाजी महाराज का जन्म 19 फरवरी 1630 को ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष के प्रतिपदा तिथि को हुआ था। उनके पिता, शाहाजी भोसले, मराठा साम्राज्य के महान नेता थे, जबकि उनकी माता, जीजाबाई, एक संतानों की अजातशत्रु धर्म के पुराणिक क्षत्रिय घराने से आई थीं। शिवाजी के बचपन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा उनके बाल योद्धा बनने की कहानी है।

बचपन में शिवाजी का जीवन संघर्षों से भरा था। उनका पिता, शाहाजी, मुगल साम्राज्य के खिलाफ लड़ा और उन्हें स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ने की शिक्षा दी। उनकी माता, जीजाबाई, उन्हें धर्म और संगठन की महत्वपूर्ण शिक्षा देती रहीं। शिवाजी के बचपन की यह कथा हमें उनके वीरता और साहस की कहानी सुनाती है।

छत्रपति शिवाजी महाराज का बचपन उनकी माता के प्रभाव में बीता। उनकी माता, जीजाबाई, एक संतानों की अजातशत्रु धर्म के पुराणिक क्षत्रिय घराने से आई थीं। उन्होंने अपने बेटे को शासन और सेना के बारे में बहुत सीख दी। उनकी माता के प्रेरणा से, शिवाजी महाराज ने अपने बाल योद्धा के रूप में अपनी पहचान बनाई।

शिवाजी महाराज का बचपन वीर और साहसी घटनाओं से भरा रहा। उनके बचपन के दिनों में, उन्होंने अपनी बहादुरी का परिचय दिया। एक बार, उन्हें अपने गांव के पास शिकार करते हुए एक बाघ से भिड़ा। बाघ ने उनकी आवाज सुनी और उनकी ओर आगे बढ़ा। लेकिन शिवाजी महाराज ने डर का इजाज़त नहीं दिया और बाघ के खिलाफ लड़ा। उन्होंने बाघ को मार गिराया और अपने गांव को सुरक्षित कर दिया। यह घटना हमें उनकी बलिदानी भावना का पता लगाती है। बचपन में शिवाजी की शौर्यगाथाओं से भरी हुई थी। उन्होंने अपने गांव के साथीयों के साथ मिलकर शिकार किया, और वहां के जनता की रक्षा की। उनके बचपन की यह कथा हमें उनके वीरता और साहस की कहानी सुनाती है।

शिवाजी महाराज का साम्राज्य निर्माण: शिवाजी महाराज का साम्राज्य निर्माण उनकी विचारधारा, योजनाबद्धता और साहस का परिणाम था। उन्होंने अपने साम्राज्य को शक्तिशाली और सुरक्षित बनाने के लिए कई सुधार किए। उन्होंने अपने लोगों के लिए न्याय, स्वतंत्रता, और स्वाधीनता की लड़ाई लड़ी और उन्हें एक अद्वितीय और आदर्श राज्य के रूप में स्थापित किया।

शिवाजी महाराज के साम्राज्य निर्माण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा उनकी सेना और रक्षा प्रणाली थी। उन्होंने अपनी सेना को बहुत समय तक तैयारी की और उन्होंने उन्हें विभिन्न युद्धक्षेत्रों में सशक्त और शक्तिशाली बनाया।

शिवाजी महाराज के साम्राज्य निर्माण में उनके धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण का भी बड़ा योगदान था। उन्होंने अपने राज्य में धर्म, संस्कृति, और साहित्य को समर्थ बनाया और अपने लोगों को एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर के रूप में उसका सम्मान किया।

शिवाजी महाराज के साम्राज्य निर्माण में उनके राजनीतिक और शैली का भी बड़ा योगदान था। उन्होंने अपने लोगों को सशक्त बनाने और उन्हें एक स्वतंत्र और न्यायप्रिय समाज के रूप में स्थापित करने के लिए अपनी राजनीतिक और शैली का प्रयोग किया।

शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक की महत्वपूर्णता: छत्रपति शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक एक महत्वपूर्ण घटना थी, जो उनके साम्राज्य की शुरुआत की। उनका राज्याभिषेक 6 जून 1674 को हुआ था, और इस घटना ने महाराष्ट्र के विकास और सुरक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ। शिवाजी महाराज ने अपने राज्य को स्थायी रूप से स्थापित किया और उन्होंने अपने लोगों को एक स्वतंत्र और आदर्श राज्य के रूप में स्थापित किया।

शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक की महत्वपूर्णता को समझने के लिए, हमें उनके जीवन की कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं को ध्यान में रखना चाहिए। उन्होंने अपने जीवन में कई महत्वपूर्ण और चुनौतीपूर्ण समयों का सामना किया और उन्होंने अपने धैर्य, साहस, और निष्ठा के साथ इन समयों का सामना किया।

शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक एक महत्वपूर्ण घटना थी, जो उनके साम्राज्य की शुरुआत की। इस घटना में, उन्होंने अपने लोगों को एक स्वतंत्र और आदर्श राज्य के रूप में स्थापित किया। उनके राज्याभिषेक ने महाराष्ट्र के विकास और सुरक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ।

शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक उनके जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना थी, जो उनके साम्राज्य की शुरुआत की। इस घटना में, उन्होंने अपने लोगों को एक स्वतंत्र और आदर्श राज्य के रूप में स्थापित

किया। उनके राज्याभिषेक ने महाराष्ट्र के विकास और सुरक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ।

शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक के 350 वें वर्ष के उत्सव के अवसर पर, हमें उनकी महानता को याद करना चाहिए और उनके बलिदान को सम्मान देना चाहिए। उनके बलिदान ने हमें एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में जीने का मौका दिया है, और इसलिए हमें उनकी महानता को स्मरण करना चाहिए।

शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक के 350 वें वर्ष के उत्सव के अवसर पर, हमें उनके योगदान को याद करना और सम्मानित करना चाहिए। उनकी वीरता, साहस, और निष्ठा का सम्मान करते हुए, हम उन्हें स्मृति में स्थान देते हैं, जिससे हमें उनके अद्भुत विरासत को याद रखने का अवसर मिलता है।

शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक के 350 वें वर्ष के उत्सव के अवसर पर, हमें उनके जीवन और कार्य को गौरव से याद करना चाहिए। उनकी महानता और शौर्य का सम्मान करते हुए, हम उनकी अनमोल यादों को याद करते हैं, जो हमें हमारे स्वतंत्र राष्ट्र के निर्माण में प्रेरित करते हैं।

अतः, हम सभी को यह स्मृति सभा में भाग लेने की आमंत्रणा करते हैं, ताकि हम शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक के 350 वें वर्ष के उत्सव को समर्पित कर सकें और उनकी महानता को याद कर सकें। जय भवानी, जय शिवाजी!

शिवाजी महाराज की विशेष विचारधारा: छत्रपति शिवाजी महाराज की विचारधारा उनके समाज में न्याय, स्वतंत्रता, और समरसता की महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी। उन्होंने अपने समाज को एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर के रूप में उसका सम्मान किया और अपने लोगों को एक उत्कृष्ट और सशक्त समाज के रूप में स्थापित किया।

शिवाजी महाराज की विचारधारा में न्याय, स्वतंत्रता, और समरसता की महत्वपूर्ण भूमिका थी। उन्होंने अपने समाज को एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर के रूप में उसका सम्मान किया और अपने लोगों को एक उत्कृष्ट और सशक्त समाज के रूप में स्थापित किया।

महाराज के योगदान का महत्व: छत्रपति शिवाजी महाराज का योगदान भारतीय इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने मराठा साम्राज्य की नींव रखी और उन्होंने अपने लोगों को एक स्वतंत्र और आदर्श राज्य के रूप में स्थापित किया। उनके योगदान ने भारतीय समाज को संगठित, समृद्ध और समर्थ बनाया।

शिवाजी महाराज का योगदान भारतीय इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने मराठा साम्राज्य की नींव रखी और उन्होंने अपने लोगों को एक स्वतंत्र और आदर्श राज्य के रूप में स्थापित किया। उनके योगदान ने भारतीय समाज को संगठित, समृद्ध और समर्थ बनाया।

शिवाजी महाराज का योगदान भारतीय इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने मराठा साम्राज्य की नींव रखी और उन्होंने अपने लोगों को एक स्वतंत्र और आदर्श राज्य के रूप में स्थापित किया। उनके योगदान ने भारतीय समाज को संगठित, समृद्ध और समर्थ बनाया।

शिवाजी महाराज के शौर्य और वीरता: छत्रपति शिवाजी महाराज के शौर्य और वीरता का जिक्र करना हमारे लिए गर्व का विषय है। उन्होंने अपने जीवन में कई चुनौतीपूर्ण समयों का सामना किया और उन्होंने अपने धैर्य, साहस, और निष्ठा के साथ इन समयों का सामना किया।

शिवाजी महाराज के शौर्य और वीरता का जिक्र करना हमारे लिए गर्व का विषय है। उन्होंने अपने जीवन में कई चुनौतीपूर्ण समयों का सामना किया और उन्होंने अपने धैर्य, साहस, और निष्ठा के साथ इन समयों का सामना किया।

शिवाजी महाराज के शौर्य और वीरता का जिक्र करना हमारे लिए गर्व का विषय है। उन्होंने अपने जीवन में कई चुनौतीपूर्ण समयों का सामना किया और उन्होंने अपने धैर्य, साहस, और निष्ठा के साथ इन समयों का सामना किया। छत्रपति शिवाजी महाराज के शौर्य और वीरता का जिक्र करना हमारे लिए गर्व का विषय है। उन्होंने अपने जीवन में कई चुनौतीपूर्ण समयों का सामना किया और उन्होंने अपने धैर्य, साहस, और निष्ठा के साथ इन समयों का सामना किया।

शिवाजी महाराज के अन्तिम दिन: छत्रपति शिवाजी महाराज के अन्तिम दिनों में, उन्होंने अपने लोगों के लिए एक संदेश छोड़ा कि वे उनके बलिदान को कभी नहीं भूलेंगे। उन्होंने अपने लोगों को एक स्वतंत्र, आदर्श, और समर्थ समाज के लिए संघर्ष करने का संदेश दिया।

शिवाजी महाराज के अन्तिम दिनों में, उन्होंने अपने लोगों के लिए एक संदेश छोड़ा कि वे उनके बलिदान को कभी नहीं भूलेंगे। उन्होंने अपने लोगों को एक स्वतंत्र, आदर्श, और समर्थ समाज के लिए संघर्ष करने का संदेश दिया।

शिवाजी महाराज की विरासत: छत्रपति शिवाजी महाराज की विरासत हमारे लिए अत्यंत मूल्यवान है। उन्होंने अपने जीवन में न्याय, स्वतंत्रता, और समरसता के महत्व को समझाया और उन्होंने अपने लोगों को एक स्वतंत्र और आदर्श राज्य के रूप में स्थापित किया।

शिवाजी महाराज की विरासत हमारे लिए अत्यंत मूल्यवान है। उन्होंने अपने जीवन में न्याय, स्वतंत्रता, और समरसता के महत्व को समझाया और उन्होंने अपने लोगों को एक स्वतंत्र और आदर्श राज्य के रूप में स्थापित किया।

शिवाजी महाराज की उपलब्धियाँ: छत्रपति शिवाजी महाराज ने अपने जीवन के दौरान कई महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल की। उनका सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि उनके द्वारा स्थापित किए गए स्वतंत्र और आदर्श राज्य का संचालन था।

शिवाजी महाराज ने अपने जीवन के दौरान कई महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल की। उनका सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि उनके द्वारा स्थापित किए गए स्वतंत्र और आदर्श राज्य का संचालन था।

छत्रपति शिवाजी महाराज के उपाधि में एक अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान उनके नाविक नीति और उनके समर्थ नौसेना के रूप में था। उन्होंने समुद्री वाणिज्य की उत्पत्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और नौसेना को सागरीक व्यापार में सक्रिय बनाया। उनकी नीतियों और कार्यों ने महाराष्ट्र को समुद्री वाणिज्य के क्षेत्र में एक प्रमुख शक्ति बनाया। इसके अलावा, उनके नौसेनाध्यक्ष के रूप में योगदान से उन्होंने व्यापारिक और सामाजिक रूप से भी महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त की। इस प्रकार, शिवाजी महाराज को व्यापार नौसेना के संस्थापक के रूप में याद किया जाता है, जिसने उत्तर भारतीय समुद्री वाणिज्य के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

शिवाजी महाराज की उपलब्धियों का आदान-प्रदान: छत्रपति शिवाजी महाराज की उपलब्धियों का आदान-प्रदान हमारे द्वारा किया जाना चाहिए ताकि हम उनके संदेश को समझ सकें और उनके अदम्य साहस और निष्ठा का सम्मान कर सकें।

शिवाजी महाराज की उपलब्धियों का आदान-प्रदान हमारे द्वारा किया जाना चाहिए ताकि हम उनके संदेश को समझ सकें और उनके अदम्य साहस और निष्ठा का सम्मान कर सकें।

शिवाजी महाराज के आदर्श: छत्रपति शिवाजी महाराज के आदर्श हमें एक सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं। उन्होंने न्याय, स्वतंत्रता, और समरसता की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और अपने जीवन को एक सर्वोत्तम उदाहरण के रूप में स्थापित किया।

शिवाजी महाराज के आदर्श हमें एक सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं। उन्होंने न्याय, स्वतंत्रता, और समरसता की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और अपने जीवन को एक सर्वोत्तम उदाहरण के रूप में स्थापित किया।

शिवाजी महाराज के संदेश: छत्रपति शिवाजी महाराज के संदेश आज भी हमें जीवन में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। उन्होंने न्याय, स्वतंत्रता, और समरसता की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और अपने जीवन को एक सर्वोत्तम उदाहरण के रूप में स्थापित किया।

इस प्रकार, छत्रपति शिवाजी महाराज ने अपने जीवन के दौरान अनेक योगदान दिए और उनकी कहानी हमें साहस, स्वतंत्रता, और समरसता की महत्वपूर्ण शिक्षाएं सिखाती है। उनके जीवन के उदाहरण हमें एक बेहतर और सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं। शिवाजी महाराज के संघर्ष, समर्थन, और समरसता की भावना हमें आज भी प्रेरित करती है।

शिवाजी महाराज के अनेक कारनामों की कहानी उनके वीरता, साहस, और निष्ठा को स्पष्ट करती है। उनके जीवन से हमें यह सिखने को मिलता है कि किसी भी परिस्थिति में भी यदि हमारी निश्चिता और विश्वास हो, तो हम किसी भी मुश्किल को पार कर सकते हैं।

शिवाजी महाराज की कहानी हमें यह सिखाती है कि विश्वास, साहस, और धैर्य से कोई भी लक्ष्य हासिल किया जा सकता है। उनके जीवन से हमें यह सिखने को मिलता है कि जीवन में कभी भी हार नहीं माननी चाहिए, बल्कि हमें हर मुश्किल का सामना करना चाहिए और उसे पार करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

शिवाजी महाराज की उपलब्धियों, आदर्श, और संदेशों की कहानी उनके बच्चों के लिए अदृश्य संदेश है। उनके जीवन की कहानी से हमें यह सिखने को मिलता है कि धैर्य, साहस, और निष्ठा के साथ हर कठिनाई का सामना किया जा सकता है और यही वह गुण हैं जो एक सच्चे विजेता को बनाते हैं।

आशुतोष
बी.कॉम (प्रोग्राम) , तृतीय वर्ष

एक वीर योद्धा "शिवाजी"

नाम नही अभिमान है, भारत का वो परिधान है,,,
भवानी का वरदान है, मराठाओं की जान है,,,
रण क्षेत्र में वो मृगराज है, युद्ध में जैसे नटराज हैं,,,
अप्रतिम जिसका तेज है, रहा सदा जो अपराजेय है,,,
मां जीजा का अंश है, शत्रुओं का किया विध्वंस है,,,
अपने वंश का सरताज है, पक्षियों में जैसे बाज है,,,
हर नीति रहती अधीन है, नगर वासी रहते स्वाधीन है,,,
जनता के वो भूपति हैं, पदवी जिसकी छत्रपति है,,,
वार पे वार करे जब वो, दुश्मन भी जीत न सके उसको,,,
अंग प्रत्यंग में शिव विराज है, नाम ही जिसका शिवराज है,,,
मां की आज्ञा शिरोधार्य हैं, अल्प उम्र से किया राज्य है,,,
शासन में जिसके न्याय है, नहीं होता कभी अन्याय है,,,
शाह जी भोंसले की छाया है, अरिदल भंजन कहलाया है,,,
वीर नहीं वो महावीर है, शिवाजी शेर नहीं सवा शेर हैं,,,
तलवार के जिसके काट नहीं है, माथे पर हार की तंज नहीं है,,,
सन चौहत्र में हुआ राज्याभिषेक है,
जनता में उत्साह उमंग औ नया जोश हैं,,,
मुगल भी लोहा लेने में कतराते है,
देख उसको उल्टे पांव भाग जाते है,,,
मुखौटा छल का रख वो आया है,
सुलतान ने अफजल को पठवाया है,,,
अतिथि का सत्कार शिव की मेजबानी है,
जिसकी रक्षा में रहती तत्पर सदा भवानी हैं,
कायर समझना मूर्खता तुम्हारी है,
छत्र को पराजित करना सबके लिए भारी है,,,
कपटता का प्रत्युत्तर देना आता है,
शत्रु को छिन्न भिन्न करना शिव को भाता है,,,,
अफजल करेगा छल जानते वो हैं, कर स्वरक्षा प्रबंध आए वो हैं,,,
लग गले औकात अपनी दिखाई है,
पीठ पीछे शिव पर तलवार उठाई है,,,
फाड़ दिया पेट ही, आंते आई बाहर है,
अफजल की मृत्यु पर देवी भी नाची भारी हैं,,,
जो समझे मानव धर्म वही प्रतिपालक है,
अद्भुत व्यक्तित्व हो जिसका वही कुशल प्रशासक है,,,
हर जन में होता प्रवीण योध्या है, कुलकीर्तिवर्धक होता हर ढोटा है,,,
भारत भूमि पर जन्मा शिवराया है,
धन्य है जीजा माई जो इसकी जाया हैं,,,
व्यूह रचना के महारथी हैं, रामदास के प्रिय शिष्य यही हैं,,,
आज हमारी मुस्कान यही हैं, इस तन में जीवन प्राण यही हैं,,,
स्वराज्य की ज्योति शिव ने जलाई है,
अमिट छवि अपनी अंकित कराई है,,,
वो ऐसा अमर व प्रांजल योद्धा है,
प्रणाम है उसके चरणों में यही हमारी श्रद्धा है,,,

अंकित मिश्रा
बी. ए. (विशेष) हिंदी

छत्रपति शिवाजी

१९ फरवरी १६३० जन्मे महाराष्ट्र दुर्ग शिवनेरी,
धन्य हुई धरती भारत की हम करते जयकार तेरी।
जिसका नाम नहीं मरता हर दिल में बस जाता है,
ऐसा वीर पुरूष क्षत्रपति शेर शिवाजी कहलाता है।
जिसके दम पर भगवा ऊंचे गगन में लहराता है,
ऐसे वीर शिवा जी को हर कोई शीश झुकाता है।
रण में देख जिसे दुश्मन थर थर कांप जाता है,
मूछों पर दे ताव जो वो क्षत्रिय कहलाता है।
वीर शिवाजी सिर्फ नाम नहीं वीरता की अमर कहानी

देवांश राजपूत
राजनीतिक विज्ञान (द्वितीय वर्ष)

राजमाता जीजाबाई

हिन्दू-राष्ट्र के गौरव क्षत्रपति शिवाजी की माता जीजाबाई का जन्म सन् 1597 ई. में सिन्दखेड़ के अधिपति जाघवराव के यहां हुआ। जीजाबाई बाल्यकाल से ही हिन्दुत्व प्रेमी, धार्मिक तथा साहसी स्वभाव की थीं। सहिष्णुता का गुण तो उनमें कूट-कूटकर भरा हुआ था। इनका विवाह मालोजी के पुत्र शाहजी से हुआ। प्रारंभ में इन दोनों परिवारों में मित्रता थी, किंतु बाद में यह मित्रता कटुता में बदल गई; क्योंकि जीजाबाई के पिता मुगलों के पक्षधर थे। एक बार जाधवराव मुगलों की ओर से लड़ते हुए शाहजी का पीछा कर रहे थे। उस समय जीजाबाई गर्भवती थी। शाहजी अपने एक मित्र की सहायता से जीजाबाई को शिवनेर के किले में सुरक्षित कर आगे बढ़ गये। जब

जाधवराव शाहजी का पीछा करते हुए शिवनेर पहुंचे तो उन्हें देख जीजाबाई ने पिता से कहा- 'मैं आपकी दुश्मन हूं, क्योंकि मेरा पति आपका शत्रु है। दामाद के बदले कन्या ही हाथ लगी है, जो कुछ करना चाहो, कर लो।' इस पर पिता ने उसे अपने साथ मायके चलने को कहा, किंतु जीजाबाई का उत्तर था- 'आर्य नारी का धर्म पति के आदेश का पालन करना है।' 10 अप्रैल सन् 1627 को इसी शिवनेर दुर्ग में जीजाबाई ने शिवाजी को जन्म दिया। पति की उपेक्षा के कारण जीजाबाई ने अनेक असहनीय कष्टों को सहते हुए बालक शिवा का लालन-पालन किया। उसके लिए क्षत्रिय वेशानुरूप शास्त्रीय-शिक्षा के साथ शस्त्र-शिक्षा की व्यवस्था की। उन्होंने शिवाजी की शिक्षा के लिए दादाजी कोंडदेव जैसे व्यक्ति को नियुक्त किया। स्वयं भी रामायण, महाभारत तथा वीर बहादुरों की गौरव गाथाएं सुनाकर शिवाजी के मन में हिन्दू-भावना के साथ वीर-भावना की प्रतिष्ठा की। वह प्राय: कहा करती- 'यदि तुम संसार में आदर्श हिन्दू बनकर रहना चाहते हो स्वराज की स्थापना करो। देश से यवनों और विधर्मियों को निकालकर हिन्दू-धर्म की रक्षा करो। शाहजी ने दूसरा विवाह कर लिया था। कई वर्षों बाद शाहजी ने जीजाबाई को शिवाजी सहित बीजापुर बुलवा लिया था, किंतु उन्हें पति का सहज स्वाभाविक प्रेम कभी प्राप्त नहीं हुआ। जीजाबाई ने अपने मान,अपमान को भुलाकर सारा ध्यान अपने पुत्र शिवाजी पर केन्द्रित कर दिया। शाह जी की मृत्यु पर पति-परायणा जीजाबाई सती होना चाहती थी, किंतु शिवाजी के यह कहने पर कि “माता! तुम्हारे पवित्र आदर्शों और प्रेरणा के बिना स्वराज्य की स्थापना संभव नहीं होगी। धर्म पर विधर्मियों का दबाव बढ़ जायेगा।" माता ने पुत्र की भावना तथा भविष्य के प्रति जागरूक दृष्टि का परिचय देते हुए सती होने का विचार त्याग दिया। औरंगजेब ने जब धोखे से शिवाजी को उनके पुत्र सहित बंदी बना लिया था, तब शिवाजी ने भी कूटनीति तथा छल से मुक्ति पाई और वे जब संन्यासी के वेश में अपनी मां के सामने भिक्षा लेने पहुंचे तो मां ने उन्हें पहचान लिया और प्रसन्नचित होकर कहा- 'अब मुझे विश्वास हो गया है कि मेरा पुत्र स्वराज्य की स्थापना अवश्य करेगा। हिन्दू पद-पादशाही आने में अब कुछ भी विलंब नहीं है।' अंत में जीजाबाई की साधना सफल हुई। शिवाजी ने महाराष्ट्र के साथ भारत के एक बड़े भाग पर स्वराज्य की स्वतंत्र पताका फहराई, जिसे देखकर जीजाबाई ने शांतिपूर्वक परलोक प्रस्थान किया। वस्तुत: जीजाबाई स्वराज्य की ही देवी थीं। दृणनिश्चयी, महान देशभक्त, धर्मात्मा, राष्ट्र निर्माता तथा कुशल प्रशासक शिवाजी का व्यक्तित्व बहुमुखी था। माँ जीजाबाई के प्रति उनकी श्रद्धा ओर आज्ञाकारिता उन्हे एक आदर्श सुपुत्र सिद्ध करती है। शिवाजी का व्यक्तित्व इतना आकर्षक था कि उनसे मिलने वाला हर व्यक्ति उनसे प्रभावित हो जाता था। शिवाजी केवल मराठा राष्ट्र के निर्माता ही नही थे, अपितु मध्ययुग के सर्वश्रेष्ठ मौलिक प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्ती थे। महाराष्ट्र की विभिन्न जातियों के संर्धष को समाप्त कर उनको एक सूत्र में बाँधने का श्रेय शिवाजी को ही है। इतिहास में शिवाजी का नाम, हिन्दु रक्षक के रूप में सदैव सभी के मानस पटल पर विद्यमान रहेगा।

रजनीश
एम. ए, हिंदी द्वितीय वर्ष

छत्रपति शिवाजी महाराज के शौर्य और वीरता की अमर गाथा"

विजयी वीर शिवाजी आए, धरती पर लेकर स्वप्न 'स्वराज' का,
राज्याभिषेक के ३५० वर्ष, यह उत्सव है विशेष साज का।

उनके वीरगाथाओं ने भारत को अमर बनाया,
विद्या, धर्म, और समृद्धि का पथ जगत को दिखाया।

छत्रपति के नाम पर, है गर्व हमें सदा,
उनकी धैर्यशीलता और शौर्य की कथा, हमें याद रहेगी सदा।

राष्ट्र भक्ति का प्रतीक, अद्भुत कार्यकारी,
जिसने किया अद्भुत, धर्म का पालन भारी।

शक्ति एवं प्रेम का उनका संदेश, सब कुछ जो था निराला,
शिवाजी का राज्याभिषेक, बन गया इतिहास का पिटारा।

राज्याभिषेक के ३५० वर्ष पर,
उनके जीवन का बलिदान और वीरता हमें प्रेरित करता है सदा।

उनकी धर्मनीति और नीतियों का पालन करें,
तभी हम पा सकेंगे समृद्धि की मंजिल को फिर से।

वन्दनीय है उनकी शूरता, उनकी वीरता की बात।

छत्रपति शिवाजी महाराज की जयंती पर,
उन्हें शत्-शत् नमन करते हैं हम बारम्बर।

शिवाजी के आत्मबलिदान और साहस की कथा,
उनके शौर्य की अमर कहानी, हमें प्रेरित करती रहे सदा।

उनके राज्य ने जगाया विचारों का प्रकाश,
उनकी वीरता से भरा वो युग हमें याद दिलाता है बार-बार।

भारतीय संस्कृति के शिखर पर,
उनका योगदान है अमर, हमें यह याद दिलाता है बारम्बार।

शिवाजी महाराज के जीवन की यह अमृत यात्रा,
हमें दिखलाती है सच्चे धर्म का मार्ग और सच्चे शौर्य की दिव्य कथा।

छत्रपति शिवाजी महाराज की जयंती पर, हम सभी का यही संकल्प।
उनके महान योगदान को करें याद हम जीवन भर।

आशुतोष
बी.कॉम (प्रोग्राम), तृतीय वर्ष

शक्तिपुत्र शिवाजी : एक सिद्ध सेनानी

किसी कौम के अध्ययन के लिए उसके अपने इतिहास से अधिक उच्च कोई विषय नहीं होता और विशेष कर उस कौम के लिए जो

उन्नति के उच्च शिखर से नीचे गिर चुकी हो और अवनति के गड्ढे में जा पड़ी हो |

ठीक इसी प्रकार की एक कौम थी- मरहठा(मराठा), जिसके दैदीप्यमान एवं ऊर्जस्वित नायक थे शक्तिपुत्र वीर शिवाजी।

छत्रपति शिवाजी एक महान देशभक्त एवं बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्तित्व के साथ-साथ कुशल प्रशासक भी थे। मां जीजाबाई के प्रति शिवाजी की अपार श्रद्धा थी शिवाजी की शिक्षा भी उनकी माँ के संरक्षण में ही हुई थी। शिवाजी के अवतरण दिवस पर विद्वानों का अलग-अलग मत है, किंतु सन 1930 ई सर्वमान्य है।

शिवाजी की बुद्धि व्यावहारिक थी। वे तात्कालिक सामाजिक, धार्मिक,राजनीतिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों के प्रति बहुत सजग थे। वे अपनी शाश्वत संस्कृति तथा हिंदू धर्म के प्रहरी माने जाते थे। शिवाजी को ही मराठा राष्ट्र का वास्तविक निर्माता माना जाता है। उन्होंने अपने राष्ट्र की रक्षा के लिए मुगल शासकों से अंतिम सांस तक लड़ाइयां लड़ीं।

बात है जब मुग़ल बादशाहों की सेना ने दक्षिण में मुस्लिम रियासतों पर अत्याचार कर उनका नाश किया ।औरंगजेब के कट्टरपन का चित्र लोगों के सम्मुख रखा गया। इस पर हिंदुओं ने सोचा, यदि मुगल विजयी रहे तो हम लोग अपने धार्मिक रीति-रिवाजों का स्वतंत्रता से पालन नहीं कर सकेंगे। हिंदुओं के धर्म को भ्रष्ट करने के अतिरिक्त उन्हें बिना कारण के सताया जाएगा। कवियों और भांटो ने अपने इन विचारों को काव्य के माध्यम से जन में फैलाना शुरू कर दिया। उन्होंने सच्ची भक्ति और सच्चे राष्ट्र प्रेम के विचारों के साथ-साथ आने वाली इस दु:ख-भरी अवस्था का चित्र लोगों के सम्मुख भजन और शेरों तथा वीरगीतों और युद्ध गीतों द्वारा फैलाया। इस पर संपूर्ण देश सेवा के लिए उठ खड़ा हुआ और इस विपत्ति-काल में आर्यावर्त की सच्ची सेवा हुई-सरजा शिवाजी के हाथों ही।

शिवाजी के व्यक्तित्व में उनकी माँ जीजाबाई की अमिट छाप थी । माँ जीजाबाई की धर्म में बड़ी निष्ठा थी। वह अनेक उपदेश-प्रद पौराणिक कथायें जानती थी और हेमाद्रि तथा ज्ञानेश्वर के वचनों पर उनकी आस्था थी। आर्य परंपराओं के प्रति उनमें आदर और स्नेह था और वह प्राचीन संस्कृति में रंगी हुई थी। वह मुसलमानों की बर्बरता से बड़ी दुखी थी और हिंदू उत्थान की कामना किया करती थी। चित्तौड़ पर अलाउद्दीन की चढ़ाई और अकबर के घेरे की कहानियाँ उसने सुनी थी। क्षत्रियों के पराक्रम और क्षत्राणियों के जौहर की स्मृतियों से उसको रोमांच हो जाता था । वह राष्ट्रीय जागरण की प्रतीक्षा में अपने पुत्र की उदीयमान शक्ति को उल्लास के साथ देखा करती थी। चूंकि पति शाह जी मौहिले परिवार की एक कन्या से दूसरा विवाह कर लिया था अतएव पति की उपेक्षिता होने के कारण उसकी प्रीति और आशा शिवाजी पर केंद्रित हो गई थी। उन्हीं को वह अपना एकमात्र सहारा समझती थी और उनके कल्याण के लिए प्रार्थना करती हुई उनके दिव्य भविष्य की कल्पना किया करती थी। आगे चलकर शिवाजी पर माता जीजाबाई के संस्कारों का ऐसा जबरदस्त प्रभाव पड़ा कि आगे चलकर शिवाजी एक धर्मनिष्ठ, पराक्रमी, बलिदानी एवं रणकुशल योद्धा एवं नायक बने। ऐसे ही नहीं कविराज भूषण ने 'शिवा बावनी' में लिखा कि-

"तेज तम अंस पर, कान्ह जिमि कंस पर,
त्यों मलेच्छ बंस पर, सेर शिवराज हैं।"

जीजाबाई तथा शिवाजी साथ-साथ बैठकर हिंदू स्वराज के विषय में वार्तालाप करते रहते थे। उन दोनों की आकांक्षा थी कि हिंदुओं का स्वराज्य स्थापित हो। उस समय उनकी यह आकांक्षा किसी को भी एक सुंदर स्वप्न से अधिक और कुछ नहीं प्रतीत होती थी। इस आकांक्षा की पूर्ति उस समय असंभव- सी लगती थी।

कारण, विपक्ष तो बड़ा ही विपुल-बल था। दूरस्थ दक्षिण के दो-चार रजवाडों को छोड़कर उस समय भारत में कोई स्वाधीन हिंदू राज्य नहीं बचा था। राजपूतों तक ने बहुत पहले ही इस्लाम की तीक्ष्ण खड़ग के सम्मुख अपने सिर अवनत कर लिए थे। बड़े-बड़े राजपूत योद्धा अब मुगल सेना में नायक-पद प्राप्त करके ही प्रसन्न हो जाते थे। यदि मुगल बादशाह किसी राजपूत कन्या को अपने शाही महल के लिए माँगता था, वो उस कन्या का परिवार अपने सौभाग्य को सराहता था । महाराष्ट्र में तो ऐसा आभास होता था कि किसी को भी किसी प्रकार के परिवर्तन की स्पृहा नहीं है।

हिंदू जनता अपनी स्थिति को स्वीकार कर चुकी थी। पुरातन काल के प्रत्येक स्वाधीन हिंदू राज्य की स्मृति इतनी क्षीण हो चली थी कि जनता स्वाधीनता का अर्थ भी भूलने लगी थी। अनेक वर्ष से किसी भी स्वाधीन हिंदू राज्य की सत्ता नहीं देखी गई थी और मुसलमान दरबारों का ठाठ- बाट जनता के मानस में वैभव, सामर्थ्य तथा विपुल सम्पदा की प्रतीति उपजाता रहता था, चाहे वह दरबार

मुगल बादशाह का हो,चाहे बीजापुर का। मराठा किसानों तथा पार्वत्य प्रदेश के मावले लोगों की अस्त-व्यस्त सेना तो स्थानीय सूबेदार के सामने भी नहीं ठहर सकती थी। फिर शिवाजी की जागीर तो प्रत्यंत प्रदेश का एक प्रांत मात्र थी।

परंतु 1653 के पश्चात शिवाजी अपने राज्य का विस्तार और विरोधियों तथा कंटकों का विनाश करने लगे। अगले दस वर्ष में उन्होंने ऐसे कार्य किये जिससे वे महाराष्ट्र के एकमात्र नेता माने जाने लगे। अधिकांश सरदार तो शिवाजी को अपना नेता मानने लग गये थे परंतु कुछ ऐसे घराने थे जो अपनी कुलाभिमान और सुल्तान के दरबार में अपनी प्रतिष्ठा के कारण उनका नेतृत्व स्वीकार नहीं करते थे। इनमें मुख्य जावली के मोरे थे जो प्रसिद्ध भारत सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य के वंशज थे। शिवाजी ने छत्रपति की उपाधि धारण की तभी से मोरे परिवार की उनके साथ कटुता हो गई ।परंतु आगे चलकर शिवाजी ने अपने अदम्य साहस और पराक्रम के द्वारा जावली पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया।

जावली की विजय से शिवाजी को बड़ा लाभ हुआ। अब दिल्ली और बीजापुर भी उनसे डरने लगे। जावली पर अपनी सत्ता जमाने के बाद शिवाजी का साहस आसमान की बुलंदियों पर क्रीड़ा करने लगा और वे अपनी जागीर की सीमा के परे अपना राज्य बढाने लगे। सन् 1657 में उन्होंने जुन्नार और अहमदनगर को लूटा। इसी कड़ी में उन्होंने चोल, घोसले, कांगेरी, राजमची, लोहगढ़ और तुंगतिकोना जैसे संपन्न नगर हस्तगत करके इन सब स्थानों की किलेबंदी करवा दी। अब शिवाजी का राज्य पूर्वापेक्षा दुगुना हो गया और सन् 1657 के अंत तक सारा कोंकण प्रांत अपने हाथ में आ गया।

अब शिवाजी का राज्य त्रिभुजाकार हो गया था, जिसका आधार बसई से राजापुर तक का समुद्र तट था। इसके दोनों छोरों से रेखायें चलकर इंदापुर पर मिल जाती थी।इस क्षेत्र में जितने गढ़ थे सब शिवाजी ने जीत लिए थे।

विजय विस्तार के साथ ही शिवाजी शासन व्यवस्था भी जमाते जाते थे और इसमें न्याय,जनहित और आर्थिक उन्नति का विशेष ध्यान रखते थे। उनके सभासद नामक दरबारी ने लिखा है कि "जनता तभी सुखी होती है जब उसे धन प्राप्त होता है। शिवाजी अपने कर्मचारियों के प्रति बहुत उदार थे और सदैव उनका हित करते थे। ईमानदार कार्यकर्ताओं को खूब पुरस्कार मिलते थे। मुसलमानों के शासन में धनी व्यक्ति दिनदहाड़े लूट लिए जाते थे जबकि शिवाजी उनकी रक्षा करते थे ।"

सह्याद्रि पर्वतमाला की घाटियों में शिवाजी निर्विघ्न अपना कार्य करते रहे। जब शिवाजी कुदाल गए तो वहां 300 हूण में एक तलवार खरीदी और उसका नाम 'भवानी' रखा। इसी तलवार से उन्होंने अफजल खाँ का वध किया था और कई युद्धों में इसका उपयोग किया था। इस समय भी यह तलवार सत्तारा में उनके वंश के पास है।

जावली की विजय के बाद शिवाजी ने प्रतापगढ़ दुर्ग का निर्माण करवाया था और उसको अपना निवास स्थान बना लिया था।

सितंबर 1659 में अफजल खाँ शिवाजी के विरुद्ध प्रयाण किया, जो छल, बल और कौशल में निपुण था और विश्वास घात में बड़ा प्रवीण था। उसने बीजापुर से चलकर पंढरपुर आदि स्थानों को पार करके रहिमतपुर पहुंच गया। अब शिवाजी ने निश्चय कर लिया था कि वापी और जावली के समीप युद्ध किया जाएगा। अफजल खाँ को भी इसका

पता लग गया था । वह कूच करता हुआ वापी के समीप पहुंच गया जो प्रतापगढ़ से 16 मील पूर्व में थी। दोनों प्रतिद्वंदियों के बीच में महाबलेश्वर का ऊंचा पठार था। अफजल खाँ चाहता था कि शिवाजी को ऐन केन प्रकारेण दुर्ग से नीचे बुलाकर या तो बीजापुर की अधीनता स्वीकार करवाई जाए या उन्हें बंदी बनाकर बीजापुर ले जाया जाए ।

अफजल से भेंट के लिए 10 नवंबर 1659 निश्चित किया गया। प्रात:काल शिवाजी ने भवानी की पूजा की और वस्त्र धारण करते समय नीचे लोहे की जंजीरों का कवच पहना और पगड़ी के नीचे लोहे की टोपी रखी। ऊपर एक सफेद और ढीला वस्त्र था। इसकी बाहें लंबी और चौड़ी थी। उनके अंदर एक हाथ में कटार और दूसरे की उंगलियों में बाघ नख था। प्रस्थान करते समय उन्होंने अपनी माता का आशीर्वाद प्राप्त किया । शिवाजी के आते ही अफजल खाँ ने उठकर शिवाजी को छाती से लगाया और बायें हाथ से उन्हें जोर से पकड़ लिया और दाहिनी हाथ से कटार का वार करने ही वाला था कि शक्तिपुत्र शिवाजी ने अत्यंत चालाकी के साथ कटार और बाघ नख उसके शरीर में भोंक दियें और उसकी आंतें निकाल ली । खान के सेवकों को शिवाजी के अंगरक्षकों ने काट गिराया फिर खान का सिर काट कर दुर्ग की ऊंची बुर्ज पर एक लंबे खंभे पर लटका दिया।

अफजल खाँ के वध के बाद शिवाजी का साहस और उत्साह चरम पर था और लोगों मे उनकी धाक जम गई और यह समझा जाने लगा कि उनमें प्रत्येक भयावह स्थिति में से निकल जाने की क्षमता है: उन्होंने 28 नवंबर को अर्थात अफजल खाँ के वध से 18 दिन पश्चात ही बातचीत के

द्वारा पन्हाला का दुर्ग अपने अधीन कर लिया। तत्पश्चात कोल्हापुर जिला, बसंतगढ़, खेलना और अन्य कई गढ़ों ने उन्हें आत्म समर्पण कर दिया।

बीजापुर की चढ़ाई के समय शिवाजी ने मुगल सेवा के पृष्ठ पर छापा मारा था । औरंगजेब उस छापे को कभी नहीं भुला सका था औरंगजेब ने निश्चय किया कि उस 'कुत्ते के बच्चे' को दंड दिया जाना चाहिए।

शाइस्ता खाँ औरंगजेब का मामा और मुगल साम्राज्य का प्रमुख सामंत था। सन 1662 में उसको दक्षिण की ओर भेजा गया। उसके साथ एक लाख अश्वरोही थे। पठानों की एक पदाति सेना तथा एक बहुत बड़ा तोपखाना था। दूसरी तरफ मराठा सेना में उस समय तक दस सहस्त्र से अधिक सैनिक नहीं थे परंतु सरजा शिवाजी ने अदम्य साहस एवं वीरता के साथ उस क्रूर मुगल को धूल चटा दिया। शहंशाह के मामा एक हास्यास्पद ढंग से पराभूत हुए।

इसके बाद बादशाह ने पुत्र शाहजादा मौअज्जस, जयसिंह आदि को इस दक्षिण विजय के लिए भेजा। परंतु शिवाजी ने अपने युद्ध कला एवं गोरिल्ला युद्ध पद्धति के सहारे लाखों की मुगलिया सेना को धूल चटा दिया। युद्ध इतने भयानक एवं वीभत्स्य होते थे कि हाथियों के टकराहट से पहाड़ के पहाड उखड़ जाते थे और उसकी धूल से दिन में भी रात्रि का प्रलयकारी अनुभव होता था तभी तो भूषण ने लिखा है-

"ऐल-फैल खैल-भैल खलक में गैल गैल,
गजन की ठैल-पैल सैल उलसत हैं।
तारा सो तरनि धूरि-धारा में लगत जिमि,
धारा पर पारा पारावार यों हलत है।"

शिवाजी अब दक्षिण में सर्वशक्तिमान थे। उनके सहधर्मी हिंदुओं को वे उत्तर के मुसलमान शहंशाह के प्रतिद्वंद्वी प्रतीत होते थे ,और उन्होंने भी अपनी उत्तरोत्तर बढ़ती हुई शक्ति तथा अपने विस्तृत अधिकार का पुष्ट प्रदर्शन करने की ठान ली। उन्होंने घोषणा की कि वे हिंदू भारतवर्ष के सम्राट के रूप में सिंहासनारूढ़ होंगे -उसी प्रकार के मंगल संस्कारों के साथ जो मुसलमानों के आगमन से पूर्व पुरातन काल के सम्राटों के सिंहासनारोहण के समय अनुष्ठित होते थे।

राज्याभिषेक का उत्सव सन 1674 की जून मास में रायगढ़ में मनाया गया और इसी के साथ छत्रपति ने 'हिंदवी स्वराज्य' की स्थापना की। शिवाजी ने रायरेश्वर के मंदिर में अपनी उंगली काटकर अपने खून से शिवलिंग पर रक्ताभिषेक कर हिंदवी स्वराज की शपथ ली थी। इसी विचार को नारा बनाकर उन्होंने संपूर्ण भारतवर्ष को एकत्रित करने के लिए अफगानो,मुगलों,पुर्तगालियों और अन्य विधर्मी विदेशी मूल के

शासको के विरुद्ध सफल अभियान चलाया था। स्वतंत्रता संग्राम के समय इसी विचारधारा को बाल गंगाधर तिलक ने ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ पुनर्जीवित किया था "पूर्णत: भारतीय स्वराज" अर्थात हिंदवी स्वराज्य।

मात्र 50 वर्ष की अल्पायु में 1680 ईस्वी में भारत माता ने अपने इस वीर एवं विप्लवी सपूत को हमेशा के लिए खो दिया परंतु छत्रपति क्षितीश्वर ने अपने कर्मों से यह चरितार्थ कर दिया कि "जिंदगी लंबी नहीं बड़ी होनी चाहिए।"

आज हम जब कई सौ वर्षों के बाद भी हम उनका नाम लेते हैं तो हमारा मन प्रेरणा, उत्साह,उमंग और राष्ट्र प्रेम से सराबोर हो जाता है। आर्यावर्त के ऐसे क्षितीश्वर को कोटिश: नमन.....

देवेन्द्र एम. ए, हिंदी (पूर्वार्द्ध)

वीर शिवाजी

वीर शिवाजी की गाथा हम आज सुनने आए है।
जो वीर योद्धा है जिसने तलवार की धार चलाई है।
उनकी तलवार की धारा से दिल दहल गया था दुश्मन का,
औरंगज़ेब की हालत बुरी कर हिंदवी स्वराज बनाया है,
जिनकी आवाज़ से औरंगजेब थर थर थर थर थर कांपा था,
गुस्सा देखा जब शिवाजी का तब उसका मन भी हांका था,
हुंकार भरी आवाज़ से जब वीर शिवाजी खड़े रहे,
अटल, निडर, डटकर जब औरंगज़ेब के सामने डटे रहे,
औरंगजेब की हालत बुरी हुई उनकी हुंकार की धारा से,
दिल दहल गया उसका उस पल जब वीर मराठा अड़े रहे,
हम करते है प्रणाम जिन्होंने भारत भूमि पर जन्म लिया,
खुल गए भाग हिंदुस्तान के जब वीर शिवाजी का जन्म हुआ।

निधि मालरा
बी.ए, हिंदी विशेष (तृतीय वर्ष)

शिवाजी से छत्रपति

जब हौसला बुलंद हो तो पहाड़ भी एक मिट्टी का ढेर लगता है
~ शिवाजी महाराज

कहा जाता है कि किसी भी व्यक्ति का जन्म महत्वपूर्ण नहीं होता या वह किस कुल से है,किस जाति का है यह महत्वपूर्ण नहीं होता। महत्वपूर्ण होती है उसकी मृत्यु क्योंकि जन्म और मृत्यु के बीच के समय में वह जो काम करता है वही यह निश्चित करता है कि आने वाले समय में उसको कितना याद रखा जाएगा या उनके विचार कहां तक जनता को प्रवाहित करते हैं।

ऐसा ही हमारे इतिहास में नाम उभर कर आता है
- छत्रपति शिवाजी भोसले

शिवाजी शुरुआत में अपने पिता से दूर रहते थे। उनकी माता जी ने उन्हें ज्ञान व दिशा दी। बचपन से वीर पुरुषों की कहानी सुन बड़े हुए शिवाजी ने यह ठान लिया था कि जो स्वराज केवल मात्र सपना रह गया उसे सच करना है और यह सच तब हो सकता है जब यह सपना किसी को सोने ना दे।

300 से ज्यादा किले जितना साधारण बात नहीं है और यह सब हो पाया उनकी ईमानदार सेना की वजह से। उन्होंने कई युद्ध जीते सेना को एक साथ रखना और वह ईमानदार बनी रहे यह बड़ी चुनौती होती है किंतु शिवाजी महाराज ने उनका विश्वास जीत उनके साथ बैठकर भोजन कर अपने आप को उनके जैसा रखा।

अब प्रश्न यह उठता है कि शिवाजी महाराज इतनी चर्चा में क्यों आए जबकि राजा अशोक, चंद्रगुप्त मौर्य जैसे कई कई शक्तिशाली राजा हमारे इतिहास में रह चुके हैं जिन्होंने उनसे कई बेहतर कार्य करे थे।

फर्क इतना है कि इन सभी राजाओं के पास शासन था, राज्य था किंतु शिवाजी महाराज के पास राज्य नहीं था जब देश में इतने अत्याचार हो रहे थे,त्योहार पर प्रतिबंध था,मंदिर नष्ट किये जा रहे थे लोगों को मारा जा रहा था जब सब डर के माहौल से सांस ले रहे थे तब शिवाजी महाराज उठकर क्रांतिकारी बने। शिवाजी कोई राजा के पुत्र ना थे उनके पिता दरबार में काम करते थे। औरंगजेब जो सबसे क्रूर और शक्तिशाली मुगल साम्राज्य में से एक थे उनको टक्कर देने वाले बने शिवाजी महाराज।

औरंगजेब की जुबानी

औरंगजेब ने खुद कहा था कि 19 साल के लिए मैंने मेरी पूरी ताकत शिवाजी को हराने में लगा दी लेकिन फिर भी शिवाजी का राज्य बढ़ता गया।

केवल औरंगजेब ही नहीं अफजल खान जैसों का भी वध कर शिवाजी महाराज ने जीत हासिल की है तथा जनता को अत्याचार से बचाकर

उनकी रक्षा की है।

वर्तमान के संदर्भ में

स्वराज ही वह शब्द था जिसने हमें अंग्रेजों से लड़ने की प्रेरणा दी सभी स्वतंत्रता सेनानी को राह दी,उनको एक संदेश दिया। मकान तब ही मजबूत रह सकता है जब नीव पक्की हो और नीव शिवाजी महाराज जैसे उदाहरण हमारे अतीत में रहे जो वर्तमान को नई दिशा दे रहे हैं।

छत्रपति शिवाजी महाराज को छत्रपति की उपाधि केवल उनकी जीती हुई लड़ाई ही नहीं दिलाती,छत्रपति उनका व्यक्तित्व हमारे सामने लाती है। शिवाजी से लेकर छत्रपति शिवाजी तक का जीवन का सफर न केवल आज की पीढ़ी को प्रेरित करता है बल्कि आने वाली पीढ़ी को भी एक उज्जवल राह दिखाएगा।

छत्रपति शिवाजी महाराज को छत्रपति की उपाधि केवल उनकी जीती हुई लड़ाई ही नहीं दिलाती,छत्रपति उनका व्यक्तित्व हमारे

सामने लाती है। शिवाजी से लेकर छत्रपति शिवाजी तक का जीवन का सफर न केवल आज की पीढ़ी को प्रेरित करता है बल्कि आने वाली पीढ़ी को भी एक उज्जवल राह दिखाएगा।

मीनाक्षी
बी.ए, विशेष (हिंदी) सेमेस्टर-6

वीर छत्रपति शिवाजी

'प्रतिपच्चंद्रलेखेव वर्धिष्णुर्विश्ववंदिता शाहसुनोः शिवस्यैषा मुद्रा भद्राय राजते।'

छत्रपति शिवाजी महाराज की राजमुद्रा पर लिखी हुई इन पंक्तियों का अर्थ है, जिस प्रकार बाल चंद्रमा धीरे-धीरे बड़ा होता जाता है तथा सारे विश्व द्वारा वंदनीय होता है। इस प्रकार शाहजी के पुत्र शिवाजी की यह मुद्रा भी निरंतर बढ़ती जाएगी। वास्तव में शिवाजी महाराज का जीवन इस बात का प्रमाण है।

शिवाजी का जन्म मराठा सेनापति शाहजी भोंसले के घर हुआ था। जिनके पास बीजापुर सल्तनत के तहत पुणे और सुपे की जागीरें थी। एक कहावत है - " होनहार बिरवान के होत चीकने पात" अर्थात जो महान व्यक्ति होते हैं उनके लक्षण बचपन में ही दिखाई देने लगते हैं। शिवाजी महाराज इस कहावत के सटीक उदाहरण हैं। उन्होंने मात्र 15 वर्ष की आयु में बीजापुर के अधीन तोरण किले पर नियंत्रण

प्राप्त कर लिया था। इसके अतिरिक्त शिवाजी ने राजगढ़ का दुर्ग कोंडाना का दुर्ग तथा कोकण दुर्ग जैसे कई दुर्गों पर अपना नियंत्रण बहुत कम आयु में ही कर लिया था।

शिवाजी महाराज वीर तथा साहसी तो थे ही उसके साथ हुए दूरदर्शी भी थे। जब बीजापुर के सुल्तान ने अफजल खान को शिवाजी के विरुद्ध भेजा तो अफजल खान ने संधि के प्रस्ताव के बहाने शिवाजी को मारने की योजना बनाई, लेकिन शिवाजी ने बाघ नख से उसका वध कर दिया। यह शिवाजी की दूरदर्शिता को दर्शाता है।

शिवाजी इस बात का उदाहरण है कि केवल घोर आदर्श के मार्ग पर चलकर सफलता हासिल नहीं की जा सकती समय पड़ने पर कूटनीति का सहारा भी लेना पड़ता है। शिवाजी ने "छापामार युद्ध" के द्वारा मुगल बादशाह औरंगजेब की सेना को बहुत नुकसान पहुंचा उनकी सी छोटी-छोटी टुकड़ियों में बट जाती थी और विरोधी सेना के शस्त्र आदि लूटकर वापस लौट आती थी । शिवाजी ने अपनी कूटनीति, वीरता तथा साहस के बल पर शाइस्ता खान और बीजापुर की एक बड़ी सी को हराया था।

शिवाजी ने हिंदू धर्म की परंपराओं का प्रसार किया। वे अपनी संस्कृति को बढ़ावा देते थे लेकिन इसके साथ ही वे मुसलमान व फकीरों का सम्मान भी करते थे। शिवाजी ने अपना राज्य अभिषेक भी काशी के ब्राह्मणों के हाथों करवाया था यह जानते हुए भी की काशी मुगल शासन के अंतर्गत आता है।

शिवाजी के प्रशासकीय कार्यों में मदद के लिए "अष्टप्रधान" नमक परिषद होती थी जिसमें पेशवा, अमात्य, मंत्री, सचिव ,सुमंत, सेनापति ,पंडित राव तथा न्यायाधीश जैसे पद थे शिवाजी की सेवा में पैदल सैनिक , घुड़ सावर , नौसेना शामिल थी।

बॉबी यादव
बी.ए, विशेष हिंदी, सेमेस्टर 6

शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक

आजादी के अमृत महोत्सव में छत्रपति शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक सभी के लिए नई चेतना और नई ऊर्जा लेकर आया है। छत्रपति शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक 350 वर्ष पूर्व के ऐतिहासिक काल का एक विशेष अध्याय है और उनके स्वशासन सुशासन और समृद्धि की महान गाथाएं आज भी सभी को प्रेरणा देती हैं। जिस अंधकारमय मुगल आक्रांता दौर में शिवाजी का उत्थान होता है, वह दौर काव्य कला, साहित्य संस्कृति का रीतिकालीन समय है ; ऐसे समय में जब राजनीति विलासिता और चाटुकारिता की भेंट चढ़ी हो तब शिवाजी राजनीति के माध्यम से उदात्त भावना और उदात्त विचार से राष्ट्र की समक्ष नई ऊर्जा व नया आत्मविश्वास भरते हैं। राष्ट्रीय कल्याण और लोक कल्याण शिवाजी महाराज की शासन के मूल तत्व रहे हैं ; चाहे वो किसान कल्याण हो, महिला सशक्तिकरण को या शासन को आम आदमी तक पहुंचाने की बात हो उनकी शासन प्रणाली और नीतियां आज भी समान रूप से प्रासंगिक हैं।

" हुआ राज्याभिषेक शिवाजी का, पूर्व साढ़े तीन सौ वर्ष।
उन्होंने ही न्याय ,धर्म ,संस्कृति का, बचाया होने से अपकर्ष।।
ऐतिहासिक काल का ,है वह समय विशेष अध्याय।
स्वशासन ,सुशासन ,समृद्धि की, देता प्रेरणा सहर्ष।। "

350 वर्ष पहले जब छत्रपति शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक हुआ था स्वराज और राष्ट्रवाद की भावना समाहित थी। शिवाजी महाराज ने हमेशा भारत की एकता और अखंडता को बनाए रखने को सर्वाधिक महत्व दिया। आज छत्रपति शिवाजी महाराज के विचारों के प्रतिबिंब को एक भारत, श्रेष्ठ भारत के रूप में देखा जा सकता है।

"राष्ट्र लोक कल्याण रहे ,शासन की मूल तत्व।
भारत की एकता अखंडता को, देते सर्वोपरि महत्व।।
आज भारत के दृष्टिकोण में हैं, शिवा के विचारों के प्रतिबिंब।
दिखाया निज पराक्रम से, जन-जन को अंतःसत्व।।"

शिवाजी के समय देश के आत्मविश्वास के स्तर की कल्पना की जा सकती है, सैकड़ो वर्षों की गुलामी के कारण नागरिकों का आत्मविश्वास न्यूनतम स्तर पर था जब आक्रमणकरियों के आक्रमण और शोषण के साथ-साथ गरीबी ने समाज को कमजोर बना दिया था। हमारे सांस्कृतिक केंद्रों पर हमला करके लोगों के मनोबल को तोड़ने का प्रयास किया गया। शिवाजी महाराज ने ना केवल आक्रमणकरियों का मुकाबला किया बल्कि लोगों में यह विश्वास भी जगाया के स्वशासन एक संभावना है। ऐसे कई शासक हुए हैं जो सेना में अपने प्रभुत्व के लिए जाने जाते हैं लेकिन उनकी प्रशासनिक क्षमताएं कमजोर रहीं हैं और इसी तरह कई शासक जो अपने उत्कृष्ट शासन के लिए जाने जाते थे, लेकिन उनका सैन्य नेतृत्व कमजोर था ऐसे मामले में शिवाजी का व्यक्तित्व शानदार था क्योंकि उन्होंने 'स्वराज' के साथ ही 'सुराज' की स्थापना भी की थी। शिवाजी महाराज अपने विशिष्ट दृष्टिकोण के कारण इतिहास के सभी नायकों से पूरी तरह अलग हैं।

" मुगल आक्रमण, शोषण, गुलामी से, टूटा जन विश्वास।
सांस्कृतिक ,धार्मिक केन्द्रों पर हमला, रही न राजाओं पर आस।।
दीन हीन दुःखी प्रजा सारी, मनोबल उसका टूट गया।
शिवा ने नई ऊर्जा का संचार किया ,जो हुए बैठे थे उदास।।"

कवि राज भूषण ने राष्ट्र नायक शिवाजी के यश गान और वीरता का वर्णन शिवराज भूषण और शिवा बावनी में किया है। एक कवित्त में भूषण शिवाजी के महत्व और वीरता को कुछ क्यों बताते हैं -

बेद राखे बिदित पुरान परसिद्ध राखे
राम-नाम राख्यो अति रसना सुघर में।
हिंदुन की चोटी रोटी राखि है सिपाहिन की
काँधे में जनेऊ राख्यो मालाराखी गरमें।
मीड़ि राखे मुग़ल मरोड़ि राखे पातसाह बैरी
पीसि राखे बरदान राख्यो कर में।
राजन की हद्द राखी तेगबल सिवराज देव
राखे देवल स्वधर्म राख्यो घर में॥

अतः संपूर्ण विवेचन के अनुसार यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि छत्रपति शिवाजी महाराज की वीरता, विचारधारा और न्याय ने कई पीढियां को प्रेरित किया है। उनके साहसिक कार्य शैली रणनीतिक कौशल और शांतिपूर्ण राजनीतिक व्यवस्था आज भी हमारे लिए एक प्रेरणा है। ध्यातव्य है कि शिवाजी की नीतियों की चर्चा अनेक देशों में होती है जहां इन पर शोध कार्य किया जाता है कुछ समय पहले मॉरीशस में शिवाजी की प्रतिमा स्थापित की गई है। 350 वर्षों के बाद भी उनके द्वारा स्थापित मूल्य हमें आगे बड़ने का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। यह यात्रा छत्रपति शिवाजी के सपनों के भारत के निर्माण की होगी।

निखिल कुमार
बी. ए. हिंदी विशेष

ENGLISH SECTION

Tracing Shivaji's Footsteps

Prachi
B.Sc. (Hons.) Biochemistry 2nd Sem

In the heart of Maharashtra, where legends breathe, Tracing Shivaji's footsteps, a journey beneath. Through rugged paths and ancient gates, A saga unfolds, history narrates.

On Raigad's heights, where echoes persist, Whispers of valor, in mountain mists. Step by step, on the path he trod, In the footsteps of Shivaji, a pilgrimage to God.

The fort stands silent, a witness to time, Each stone a verse, each rampart a rhyme. In Shivaji's realm, where dreams took flight, A journey unfolds, bathed in golden light.

Through winding trails and weathered stone, In the Maratha heartland, a tale is known. Footprints etched in soil, stories untold, A legacy of courage, and a spirit bold.

Traversing the hills, where the saffron flag soared, In Shivaji's footsteps, history explored. Raigad's embrace, a silent embrace, A connection forged, across time and space.

With every stride, a heartbeat aligned, In the echoes of history, Shivaji defined. A king's journey, etched in the hills, Tracing his footsteps, the soul fulfills.

On this pilgrimage, where the past converges, In Shivaji's footsteps, the spirit emerges. A tapestry woven with valor and grace, A timeless journey, a sacred trace.

Lion of Deccan

Amish Verma
B.A. (Prog.) 4th Sem

This is for those who call our history farce, A lion's cub was born where the Sahyadris rise, A legend himself in the Deccan's heart, With the vision of freedom in his lustrous eyes.

With morals and skills honed under Jijabai's care, His guerrilla strikes left the enemy in despair, His ballads are famous today for his military might, A virtuous leader who treated all alike.

Raigad's high peak was his lion's den, Chhatrapati was he crowned – the righteous ruler's name, Respected alike by all noble and common men, Konkan, Karnatak, and Malwa were for him to claim.

Despite all the Sultanate and Foreign might, The Maratha flag always hoisted high.

In My Mind

Khumukcham Taibanganba Luwang
B.A. (Prog.) 2nd Sem

In my mind, I question why My esteemed teachers pray indeed With hands folded by Upon his Majesty's great deed.

In my mind, I recall why The valued words from learned mind With hands folded by Echoed upon my wondering mind

He! Shall have the likes of the greater With all the grandeur and valour For as I enquired, told my preacher "Shivaji, the glorious saviour Who brought forth the mirth Unto her face Upon whose laps he took birth."

In my mind, I know why My esteemed teachers pray indeed With hands folded by Upon his Majesty's great deed.

Now, deep in my mind I long To pray and bestow indeed Upon the great might that belong To his Majesty's great creed.

Universal King

Sunith Pandey
B.Sc. (Hons.) Mathematics 4th Sem

I used to rule the place Owning all over the space They call me ace of spade Dominator like an obsidian blade

My win was written in the sky Even before rolling a dice Birds were singing my name Universe awarded me as the best in the game

One could see the fear in my enemy's eyes Even my stable was bigger than their castle size My people loved me more than a king For their autumn I was a spring

I was invincible until I died There's a book on my pride I was their shooting star A parent standing as a wall As I said, invincible in every war

I was invincible until I died There's a book on my pride I was their shooting star A parent standing as a wall As I said, invincible in every war

Legacy of Valor

Kartikey Gupta
B.Sc. (Hons.) Botany 2nd Sem

In the hearts of Maharashtra, a legend was born, Shivaji Maharaj, with courage adorned. With a spirit untamed and a vision so bright, He battled oppression, stood for what's right.

From the forts of Raigad to the fields of war, His bravery shone like a guiding star. With valor in his heart and a sword in hand, He defended his people, his beloved land.

Through mountains and valleys, he marched with pride, Fighting against tyranny, never to hide. Against the mighty Mughals, he stood tall, Defying all odds, he never did fail.

In battles fierce, his name echoed loud, As he led his troops, undaunted and proud. With strategy and skull, he carved his way, To establish an empire, come what may.

Yet amidst the triumphs, his heart remained pure, A protector of all, steadfast and sure. He treated all subjects with kindness and care, A true leader, just and fair.

His sacrifices echo through history's scroll, A legacy of courage that forever shall roll. Chhatrapati Shivaji Maharaj, a hero renowned, In our hearts and minds, forever crowned.

350 Years Later: The Unstoppable Legend that Still Shakes the World

Rahul
B.A. (Hons.) English 2nd Sem

Imagine a superhero from the past, not with a cape, but with an unbeatable spirit and a sharp mind, zooming through the pages of history to inspire us even today. That's Chhatrapati Shivaji Maharaj for you, folks! It's been a whopping 350 years, and yet, Shivaji's adventures and ideals are as cool and relevant as ever. Let's dive into why this 17th-century icon is still the talk of the town and a superstar among us college folks.

- **The Rebel Prince Who Became a King**

Once upon a time, in the land of forts and tales, a young Shivaji decided, "Hey, why not shake things up a bit?" And oh boy, did he! With a dream to create a kingdom where everyone could chill in peace and fairness, he turned the tables on the big bullies of his time. Think of him as the ultimate underdog-turned-hero in the blockbuster movie of history.

- **The Mastermind of Spycraft and Strategy**

Before James Bond, there was Shivaji Maharaj, the original master of espionage and guerrilla tactics. Using the lush green Western Ghats as his playground, he outwitted his foes with the coolest moves. His motto? "Why confront when you can outsmart?" Shivaji taught us that brains always win over brawn.

- **The People's King**

Shivaji wasn't just about winning territories; he was all about winning hearts. By promoting local languages and ensuring that his kingdom was a safe and happy place for everyone, he showed us what true leadership looks like. Imagine a ruler who actually listens and acts on what the people want—pretty awesome, right?

- **The Legacy That Never Quits**

Fast forward 350 years, and Shivaji's spirit is like that one friend who's always there to pump you up. Whether it's facing a tough exam or standing up for what's right, his tales of bravery and smart governance are the pep talks we all need. Shivaji is not just a figure from the past; he's our daily dose of motivation.

Why Shivaji Maharaj Is Our Forever Favorite?

In a world that's constantly changing, Shivaji Maharaj's story is a timeless reminder that with courage, creativity, and a heart for people, anyone can be a hero. So, the next time you find yourself in a fix, just think, "What would Shivaji do?" and you might find an epic solution!

Wrap-Up: History's Coolest Icon

As we flip through our history books or scroll through stories online, let's not forget that Shivaji Maharaj is much more than a chapter from the past. He's a living legend whose 350-year-old legacy still rocks our world, reminding us that we all have the power to make a difference. So, here's to Shivaji, the eternal superstar from our very own Bharat, whose adventures and ideals continue to inspire us to be our best selves and Mind it! He is not fictional but real! Rock on, Shivaji!

Shivaji: A Visionary

Aryan Anand
B.A. (Hons.) English 4th Sem

इंद्रजिम जंभपर वाढव ज्यौ अभं पर रावन सदंभ पर रघकुल राज है।
पौन बारिबाह पर संभुरतिनाह पर ज्यौं सहस्त्रबाहुपर राम द्विजराज है।।
दावा द्रमदु डंपर चीता मगझ्झुपर भषनू वितंडु पर जसै मेगराजृ है।
तजे तम असपरं कान्ह जिम कंसपर यौं मलेच्छ बंस पर सेर सिवराज है

-Kavi Bhushan

Chhatrapati Shivaji Maharaj is a name evoking profound reverence; the one who envisioned establishing a saffron empire amidst the oppressive Muslim rule. He pledged to end the humiliation of Hindus, tirelessly pursuing his dream until the saffron flag waved high. As we reflect on the 350 years since Chhatrapati Shivaji Maharaj's coronation, let's remember the magnificence of one of the most significant, if not the paramount, rulers of this illustrious land. As Veer Savarkar aptly expressed: “It was in the year 1627 that Shivaji was born. That year was destined to be the beginning of an epoch on account of that birth.” Before Shivaji was born, hundreds of gallant souls had fought and fallen martyrs in resisting the onslaughts of the foreign foes and in defense of the honor of the Hindu race. Fighting as bravely as any of these martyrs and warriors who were vanquished in the field before him, Shivaji was destined to win and create a wave of triumph which gathered in strength as it proceeded and carried the Hindu banner on its crest from glory to glory, from achievement to achievement, for a period of hundred years or so. The tide of foreign invasions that followed those of Mahomed of Ghazni rolled down with irresistible force till all Hindustan lay submerged under it. Shivaji was the first person to raise his head above it and to command, in his stern Maratha accents: 'Thus far shalt thou go; but no farther.'

His principles of courage, valor, and justice are exalted in literature, folklore, and popular culture, rendering him a revered figure in Indian history and a symbol of resistance against oppression, continuing to inspire generations.

However, there is another facet to his story, Chhatrapati Shivaji Maharaj was not merely a warrior or a king but a genuine visionary. This article aims to highlight some of his visionary perspectives:

1. Swaraj and its Legacy

According to Shivaji, Swaraj is the birthright of every individual. He yearned for a world free from the shackles of prejudice, oppression, religious strife, and discrimination. Therefore, he waged a battle for the Marathas' liberation from the tyrannical rule of the Mughal emperor Aurangzeb, aiming to establish 'Hindavi Swaraj'. For Shivaji, Swaraj represented: “Remember, your duty is to serve us in our struggle to establish a swaraj, a state not ruled by external powers.”

The concept of Swaraj wasn't limited to just dismantling the oppressive Mughal regime; it served as both motivation and inspiration for our freedom fighters, igniting the spark to overthrow the ruthless colonial rule. Mentioning the term 'Swaraj' instinctively brings to mind Bal Gangadhar Tilak and his renowned slogan, "Swaraj is my birthright." Hence, Shivaji and his concept of 'self-rule' served as a source of inspiration for our freedom fighters, who emphatically declared their commitment to nothing short of 'Swaraj.' As B.R. Ambedkar aptly highlighted: “The inspiration of Chhatrapati Shivaji also fired the veins of one of the greatest social emancipators of modern India.”

2. Religious Tolerance

Chhatrapati Shivaji was a man of Dharma, a staunch adherent of the principle of 'Ekam Sad Vipra Bahudha Vadanti', which translates to "God is one, but the wise

describe it differently." This belief of Shivaji Maharaj was prominently reflected in his policies of religious tolerance. Shivaji Maharaj vehemently opposed the destruction of places of worship and the denigration of other faiths. Instead, he not only granted pensions to Brahmin scholars but also erected hermitages and provided sustenance for Islamic holy men, such as Baba Yakut of Kelshi. Khafi Khan, a historian of that era, documented: "Nevertheless he had made a regulation that wherever his army went plundering no one should stretch his hand against a mosque or the Book of God or women of any one."

There is no denying the fact that Shivaji was a devout Hindu. However, being a follower of Hinduism, he imbibed values that emphasize respect for other faiths. This is evident in the fact that the great Maratha king never compelled individuals to revert to the Dharmic fold, nor did he ever insult them.

3. Shivaji's Chivalry

Shivaji's mother, Jijabai, played a pivotal role in his upbringing, instilling values of bravery and justice. Being deeply devoted to his mother, Shivaji exhibited great respect towards women. Under his rule, women were safeguarded, and any dishonor towards them was met with serious consequences. The contemporary chronicle Sabhasad delves into the discipline within Shivaji Maharaj's army: "There should be no women, female slaves, or dancing girls in the army. He who keeps them should be beheaded. In enemy territories, women and children should not be captured."

Even in times of war, when the invader army had the practice of taking women along, Shivaji refrained from such actions. He never harmed any woman or child in the name of war, consistently treating women with the utmost respect, regardless of their faith. Khafi Khan corroborates this aspect of Shivaji's character in his writings: "Shivaji had always striven to maintain the honor of the people in his territories and was careful to maintain the honor of women and children ... His injunctions upon this point were very strict."

In conclusion, Shivaji's visionary leadership transcends time, embodying ideals crucial for a harmonious society. His pursuit of Swaraj, embracing religious tolerance, and displaying chivalry in warfare, showcase a holistic vision for governance. As we reflect on his legacy, it becomes evident that Shivaji Maharaj's principles continue to inspire and guide us towards a more inclusive and just society, where freedom, tolerance, and honor stand as pillars of strength.

Management Lessons from the Life and Work of Chhatrapati Shivaji Maharaj

Ashutosh
B.Com. (Prog.) 6th Sem

"A true leader is not defined by the throne he sits on, but by the legacy he leaves behind."

Introduction:

Chhatrapati Shivaji Maharaj, the founder of the Maratha Empire, remains an iconic figure in Indian history, renowned for his visionary leadership, military acumen, and administrative brilliance. He not only left an indelible mark on the pages of history through his military triumphs but also bequeathed a rich tapestry of life and management lessons. Beyond the boardrooms and battlefields, Shivaji's principles resonate as timeless guidelines for holistic living and effective leadership. His life is not just a chronicle of valour and military acumen but also a repository of invaluable management lessons that transcend time and continue to inspire leaders across the globe. In the annals of leadership, Shivaji's principles stand out as beacons, guiding not just military strategists but also management professionals. Here, we delve into the management lessons and learnings from the remarkable life of Chhatrapati Shivaji Maharaj.

Visionary Living:

"A king is the one who considers the well-being of his subjects as his supreme duty." Shivaji's life exemplified the importance of having a vision that transcends personal gains. Beyond conquering territories, he aimed at creating a just and harmonious society. In personal life, having a purpose-driven vision can provide direction and fulfilment, while in management, leaders with a broader vision inspire their teams to achieve more significant milestones.

People-Centric Governance:

The welfare of his subjects was at the forefront of Shivaji's governance. His policies aimed at ensuring the prosperity and well-being of his people, reflecting a

people-centric approach. His commitment to the welfare of his subjects echoes in the quote, "My kingdom is a realm of justice, and I will not let anyone oppress the people."

Decisive Decision-Making:

Shivaji's decisive decision-making in the face of adversity sets him apart as a leader. The incident of the "escape from Agra" is a prime example. When captured by Aurangzeb, Shivaji demonstrated agility by devising a clever plan to escape, showcasing the importance of quick thinking and adaptability in leadership.

Inclusive Administration:

Shivaji's administration was known for its inclusivity and religious tolerance. This lesson is particularly relevant in today's multicultural workplaces. His famous quote, "The strength of a wall is neither greater nor less than the sum of the stones in it" emphasizes the importance of unity in diversity and underscores the value of inclusive leadership.

Integrity and Ethics:

Shivaji upheld the highest standards of ethics and integrity, even in the midst of warfare. This commitment to ethical conduct is reflected in his quote: "Even if there is sword hanging over our head, we must not tell a lie". In the business world, maintaining ethical standards is crucial for long-term success and building trust with stakeholders.

Infrastructure Development:

Shivaji recognized the importance of infrastructure in a growing empire. His emphasis on fortification, irrigation, and trade routes underscores the significance of investing in the foundation of an organization. Modern leaders can learn from Shivaji's foresight and prioritize infrastructure development for sustained growth.

Visionary Leadership:

Shivaji's ability to envision a powerful and prosperous Maratha Empire reflects his visionary leadership. In the business world, successful leaders must have a clear vision that guides their decisions and actions. Shivaji's vision was encapsulated in his famous quote: "A single tiger is more potent than a hundred jackals." This emphasizes the importance of quality over quantity and the need for strategic focus in achieving organizational goals.

Strategic Alliances:

Shivaji understood the importance of strategic alliances. His alliance with the Siddis and his diplomatic overtures to establish relationships with various powers reveal the significance of building partnerships. In contemporary management, forging strategic alliances with other businesses, suppliers, or even competitors can lead to mutual growth and success.

Adaptive Leadership:

Shivaji's leadership was marked by adaptability. His ability to adjust his strategies based on the evolving political landscape and changing circumstances reflects the importance of adaptive leadership in the face of uncertainty. In today's dynamic business environment, leaders must be flexible and open to adapting their approaches to stay relevant and competitive.

Employee Welfare:

The welfare of his soldiers was a top priority for Shivaji. He recognized that a well-cared-for army would be more motivated and efficient. Modern leaders can take this lesson to heart, understanding that prioritizing employee well-being, including health, work-life balance, and professional development, contributes to a more engaged and productive workforce.

Employee Welfare:

The welfare of his soldiers was a top priority for Shivaji. He recognized that a well-cared-for army would be more motivated and efficient. Modern leaders can take this lesson to heart, understanding that prioritizing employee well-being, including health, work-life balance, and professional development, contributes to a more engaged and productive workforce.

Risk Management and Strategic Communication:

Shivaji's military campaigns were marked by calculated risk-taking. He understood the importance of weighing risks and rewards before making strategic decisions. In the business world, leaders can learn to navigate uncertainty by embracing calculated risks and developing robust risk management strategies.

Shivaji excelled in strategic communication, employing diplomatic skills to maintain relationships and alliances. Effective communication is crucial for leaders, whether it involves internal team communication or external

stakeholder engagement. Shivaji's approach serves as a reminder of the importance of clear and strategic communication in leadership.

Continuous Learning:

Shivaji was a lifelong learner. His curiosity and openness to new ideas contributed to his success. In the corporate realm, leaders must foster a culture of continuous learning and encourage their teams to adapt, evolve, and acquire new skills to stay ahead in a rapidly changing business landscape.

Long-Term Vision over Short-Term Gains:

Shivaji's focus on long-term vision over short-term gains is evident in his strategic decisions. Leaders can draw inspiration from this approach, emphasizing sustainable growth and enduring success rather than opting for quick fixes that may compromise the organization's long-term prospects.

Strategy and Planning:

Shivaji's military successes were not just a result of brute force but meticulous planning. His strategic brilliance in guerrilla warfare and fortification tactics is a lesson for managers to always have a well-thought-out plan. Flexibility in approach, adapting to changing circumstances, and surprise elements are essential aspects of any successful strategy. "It is not enough that we win; others should lose."

Innovation and Adaptability:

In the face of adversity, Shivaji demonstrated unparalleled innovation and adaptability. He demonstrated exceptional innovation, naval warfare, pioneering the use of Maratha navy. His guerrilla warfare tactics, military strategies, and naval prowess showcased his ability to think outside the conventional norms. His life teaches us that true strength lies in adaptability. In the corporate landscape, leaders must encourage innovation and adaptability to stay ahead in a rapidly changing environment.

Empowering Leadership:

Shivaji was a leader who empowered his subordinates. He recognized talent and rewarded merit, irrespective of social background. In the corporate world, fostering a culture of empowerment and recognizing and nurturing talent at all levels can lead to a more motivated and innovative workforce. "Treat your soldiers as your own beloved sons, and they will follow you into the deepest valleys; look upon them as your own beloved sons, and they will stand by you even unto death."

Resilience in the Face of Challenges:

Shivaji faced numerous challenges, yet his resilience and ability to bounce back are exemplary. In the ebb and flow of life, resilience is the key to overcoming challenges. In management, leaders who embody resilience foster a culture of perseverance and adaptability. In the corporate world, leaders must instill a sense of resilience in their teams to navigate challenges and setbacks. "Fortune favours the brave."

Conclusion:

In conclusion, Chhatrapati Shivaji Maharaj's life is a reservoir of wisdom. His legacy transcends time, offering a treasure trove of lessons in leadership, governance, and resilience. His life unfolds as a compendium of insights not only for effective management but for a fulfilling existence. His legacy extends beyond the tactical brilliance of warfare, offering a holistic blueprint for visionary, strategic, inclusive, ethical, innovative, and resilient living. As we draw inspiration from Shivaji Maharaj's life, let us not only aspire to be effective managers but also holistic individuals, contributing positively to the world around us. In the immortal words of Shivaji Maharaj, “Let us aim to create not just followers but more leaders, forging a path of enduring impact and legacy.”

Chhatrapati Shivaji Maharaj & Henri Fayol: Management Techniques Then and Now

Utkarsh Mishra
B.Com. (Prog.) 4th Sem

Shivaji Shahaji Bhonsle (born 19 February 1630 – 3 April 1630) was Indian ruler and member of the Bhonsle Maratha clan. Shivaji created his own independent kingdom from the declining Adilshahi Sultanate of Bijapur. This was the origin of the Maratha Empire and the Hindavi Samrajya. In 1674, he was formally crowned Chhatrapati of his kingdom at Raigad Fort.

Shivaji's life is an example of great management skills. Henri Fayol gives five functions or elements of Management in his book General and Industrial Administration:

1. Planning
2. Organizing
3. Staffing
4. Directing or Commanding
5. Controlling

We can say that all the five functions or elements are visible in Chhatrapti Shivaji Maharaj's management skills.

Shivaji Maharaj's management lessons can be seen in the lines composed by his court poet Bhushan:

" तेज तम अंस पर,कान्ह जिमि कंस पर,
त्यौं मलिच्छ बंस पर, सेर शिवराज हैं॥

“Like the brightness of the sun destroys the darkness; like Krishna destroyed Kansa; similarly, for the glory of his lion-like dynasty, Shivraj will destroy the enemy.”

We get evidence of Shivaji's 'foresightedness' and 'focus' while destroying the enemy in the above quoted lines. This gives a glimpse of him as a great strategist and also illustrates the first function of management skills. Shivaji focused on pre-planning and planning.

Organizing is the second phase of management skills. For better organization, Shivaji "concentrated on creating a good system of infrastructure and base of the state." Shivaji Maharaj was well known for his forts; he was in possession of around 370 forts at the time of his death. According to Sabhasad Bakhar, Shivaji's biographer, Shivaji Maharaj had built a total of 240 forts under his rule. The fortresses were equipped by good defence mechanisms and sufficed the requirements for those living in them.

Chhatrapati Shivaji also used the third element of management, Staffing, appropriately. He employed the right person in the right job so that a person could give his 100 percent to the assigned job. He believed in empowering subordinates and giving them the freedom to make decisions on their own. This was the reason that many great heroes flourished and got fame under his regime. Tanha ji is one of them.

Shivaji used the fourth element of management, Directing, very effectively. He had great leadership qualities and was an inspiration to his army. Shivaji was a very "tolerant strategist". Before the Battle of Pratapgad that took place on 10 November 1659, Afzal Khan had started torturing and exploiting women and children to provoke Shivaji, thinking that he would come out unprepared. Shivaji used the opportunity to only use his war strategies to defeat Afzal Khan. This is a lesson for every person in today's society to behave like Shivaji Maharaj in every situation.

This great ruler had also used the fifth element of management, Controlling, very efficiently. His control was not autocratic but democratic. This is the reason why he came out to be the “People's King”.

We can also see great entrepreneurial skills and the use of innovative ideas in the management of

Shivaji Maharaj. He was aware of the economic well being of the state and therefore encouraged the traders and merchants by creating paths (market places). 'Shete' and 'Mahajan' were the offices who supervised the transaction of these paths. Chaul, Rajapur, Dabhol, Kelshi, Ratnagiri, were some important ports and trade centres of this period. Self sufficient village was the basic unit of the 'Swarajya' that Shivaji built. The most important part of Shivaji's management skills is that he had a very good feedback mechanism system.

The modern generation is truly inspired by Shivaji's managerial efficiency. One can easily say that the launch of the 'Viksit Bharat 2047' campaign by the present central government under the leadership of Prime Minister Narendra Modi is 'inspired' by the management lessons of Shivaji.

Shivaji believed that “Whether I live or not, my nation must persist.” These words inspire each one of us that we must contribute efficiently and effectively to our nation rising above personal interests. This is how our nation will progress, this is how we all will develop.

Ideals of Jija Bai in Today's Era

Pratibha
B.A. (Prog.) 4th Sem

There is a saying that “Behind every successful man, there is a woman.” This is proven through the relation between Shivaji Maharaj and his mother Jijaji Bai .

One day Jijabai said to Shivaji "I want to see the 'Bhagava' (saffron) flag at the top of the Singharh fort". Her exact words were “Son Shiva! You have to conquer Singharh at any cost”. She motivated Shivaji for his esteemed goal and said “Son! If you don't throw it away you haven't done anything. I will consider you my son only when you will be successful in your goal”.

After hearing these words from his mother, Shivaji was filled with enthusiasm and went to conquer the fort with his army and his brave commander Tanaji. He was successful in conquering the fort. This proves that such inspiring and motivated words of a mother can make even the impossible possible.

In today's era when we talk about empowering women so that they can talk about their rights, Jijabai proved herself as an empowered ruler, an administrator and a great negotiator as well, when she united Bhonsles and Jadhavs against the foreign invaders for achieving the goal of Swaraj. With all these qualities she was an ideal mother who instilled the value of patriotism in her son and those who saw her as their mother. She taught her son the stories from the Ramayana and Mahabharata to make him an ideal ruler with qualities of piousness, bravery and patriotism. She used to study Sanskrit scriptures to teach her son values

for the betterment of the society and for better administration, and defined her role as a teacher and guide for Shivaji.

She abided by Dharma in her daily life and with her efforts many temples were founded by her like Kasbapeth Ganapati temple and she also renovated the Tamabdi Jogeshwar temple and Keverseshwar temple.

Jijabai played all the roles of her life such as a daughter, sister, wife, daughter-in-law, sister-in-law, mother, mother-in-law and grandmother appropriately and with complete responsibility. Her image projects the idea that a woman can nurture her family along with her nation. She can protect her state and her family as a warrior in a war. Once for rescuing Shivaji from the encircled fort of Panhala, she declared war against Siddhi Jauhar and rescued Shivaji with her technical war strategies.

After losing her elder son Sambhaji in a military expedition of Kanakagiri by Afzal Khan, she still sent Shivaji for a treaty with Afzal Khan and was never afraid of losing her other son in war. This shows her emotional strength and determination of gifting her subjects Hindavi swarajya.

With all these qualities she was an excellent political

advisor and an administrator. When Shivaji was proceeding to Agra, she protected her people for 8 months from Mughal army of Adil Shah and Kutubshah and Britishers and Portuguese invaders in Konkan and Gomantak and vast army of Siddi Jauhar in Murud Janjira and protected her Hindavi Swaraj.

Moreover, she also recaptured the Sindhugarh fort and showed her efficiency in governing the state. She taught Shivaji to rule judiciously and in the ruling of Shivaji Maharaj, people of all religions and castes are treated equally. Jijabai single-handedly nurtured Shivaji in the absence of Shahji Raje when he signed a treaty of Mahul and was compelled to leave Maharashtra and go to Karnataka .

Jijabai's ideals are still relevant in today's era and we can take motivation from Jijabai that we can be multifaceted with immense qualities of determinati on, patience, devotion, warrior, fearlessness, leadership, courage, broad mindedness and a sacrificing attitude for the desire of victory.

Trade in the Era of Shivaji Maharaj: A Glance into Economic Policies and Practices

Aishwarya Thakkar
B.A. (Hons.) Economics 4th Sem

Introduction: Shivaji Maharaj, the legendary Maratha warrior king, is often celebrated for his military prowess and administrative acumen. However, alongside his military achievements, Shivaji's reign also witnessed significant developments in trade and commerce. This article delves into the trade policies and practices during the era of Shivaji Maharaj, shedding light on their impact and significance.

Shivaji Maharaj, the founder of the Maratha Empire, implemented several policies to support trade and business in his kingdom. He recognized the economic significance of commerce and sought to create a favorable environment for merchants and traders. Some of the ways in which Shivaji Maharaj supported trade and business include:

1.Market Regulations: Shivaji established regulated markets (haats) to facilitate trade. These markets provided a structured platform for buying and selling goods, ensuring fair practices and preventing exploitation.

2.Taxation Policies: He implemented a rational taxation system, where taxes were imposed based on the income and production capacity of the individuals or communities. This approach aimed to avoid excessive burdens on traders and farmers, fostering economic growth.

3. Infrastructure Development: Shivaji invested in infrastructure development, including the construction of roads and bridges. This not only facilitated the movement of goods but also improved overall connectivity, encouraging trade within and outside the kingdom.

4. Naval Power: Recognizing the strategic importance of maritime trade, Shivaji built a strong naval force. This helped protect coastal regions, secure trade routes, and ensure the safety of maritime commerce.

5. Encouragement for Artisans: Shivaji encouraged skilled artisans and craftsmen, promoting the production of high-quality goods. This not only boosted local industries but also contributed to the economic prosperity of the region.

The Economic Condition of Marathas:

The economic condition of Marathas was good in the 17th and 18th centuries because they were powerful in those days, so they could do whatever they wanted to, and their administration was stable. Most people accepted them as rulers, and they did not have to face any problems during this period because people accepted them as rulers. Their motto was 'freedom from fear,' which they had proved strong.

Maratha state was a strong and well-organized government. So they had ordered their administration properly, and every common person was satisfied with the administration's work. They did not have any problems because the rules were clear to them.

Maratha rulers had a unique taxation system called "Chauthai," under which tax was levied annually on land, plowing bullocks, and capital engaged in cultivation. The Chauthai was levied on land and plowing bullocks and sometimes on capital. It was a kind of tax based on an assessment of profits and the amount of income. It was not a tax from which one had to pay income tax. This system's assessments were done at panchayat (county level) and Zilla Parishad (district level).

Maratha's rule was very different from the other British-style rule. Marathas were good administrators and had a different way of enforcing their control. They took good care of their subjects' well-being by giving education to every person. They encouraged freedom of speech, press, religion, and expression. They controlled the trade in grains, salt, and sugar. They also had a very good system of medical treatment.

Trade:

The Marathas were great traders. They traded in cotton, leather goods, and spices. They started trading in the port of Surat on the west coast of India. Their main domestic trade was cotton and silk cloth.

With the establishment of the British East India Company as a major player in the political arena of India, conflicts were inevitable. After Peshwa Baji Rao II was defeated at the 1818 Battle of Khadki, substantial territories were ceded to the British under the Treaty of Poona, and Maulawi Abdus Samad became one of their chief agents. He established his residence at Indore in central India, which became a centre for trade and commerce.

Agriculture:

Agriculture was the main contributor to the economy and was divided into many sections or categories. The land available for cultivation played a major role in the economic development of the Marathas. Due to being one of the most fertile regions in India and the availability of a good amount of land, Maharashtra was considered the main food bowl for the country.

Conclusion:

The era of Shivaji Maharaj marked a period of significant economic dynamism, characterized by the promotion of trade, infrastructure development, and strategic diplomacy. His policies and practices not only stimulated economic growth within his realm but also enhanced the Maratha kingdom's standing in the broader regional and international trade networks. By fostering commerce and industry, Shivaji Maharaj laid the foundations for a prosperous and resilient economy that endured long after his reign.

Jalmeva Yasya, Balameva Tasya

Anish Tiwary
B.A. (Hons.) Geography, 2nd Sem

The arrival of the Konkan fleet (Maratha Navy) in the sea was a momentous event. In the history of centuries, an Indian king had launched a navy. This step of Chhatrapati Shivaji Maharaj was a visionary step that shaped the course of history. His vision was based on his belief in "Jalmeva Yasya, Balameva Tasya" (He who rules the seas, is all powerful).

European powers such as the Dutch, French, English, and Portuguese controlled several prominent coastal areas. Due to the heavy naval army, they had a good presence on the coast line. The vision of Shivaji Maharaj to counter such a naval army and build his own navy was an epoch-making step. He aimed to secure the life cycle of the coastal region and its people.

Meanwhile, the English were also trying their ways to capture a historically significant trading center and port 'Kalyan'. Kalyan was known for the production of quality timber and super warships. Moving swiftly, Shivaji Maharaj gained towns of Kalyan, Bhiwandi, and Pen in 1657. The strategy of capturing these centers was that they were the heart of trading routes.

At this point, he laid the foundation of the Mar atha navy, but the problem is, for almost 300 years no Indian king had commanded a navy. There was a lack of artisans and craftsmen who were skilled in making warships. Shivaji Mahar aj thus appointed

Portuguese craftsmen to the task; Roe Leitao

Viegas and his brother Fernao Leitao Veigas with a team of 300 + craftsmen. Later, the Portuguese governor of Vasai snatched those craftsmen, but because of Maharaja's farsightedness, some Maratha men who were working with the Portuguese technicians earlier had learnt the techniques and the critical knowledge transfer had taken place.

“The Maratha's navy soon became stronger and established strongholds in the fests at Colaba, Sindhudurg, Vijaydurg, and Ratnagiri. Under Shivaji, the Maratha navy developed into a ferocious force with more than 500 ships”, reads the documents of the Indian navy.

Shivaji Maharaj conquered a vital part, controlled by Portuguese, called 'Basrur' 600 km south of Bombay with 60 ships on 13th February 1665. By 1679, except Goa, Vasai, and Bombay, Marathas captured all the coastal cities.

Chhatrapati Shivaji Maharaj not only gave the Marathas a grand navy but also turned it into a well organized and profitable enterprise. With the help of this navy the Marathas ruled the Konkan region for 150 years.

Shivaji: The Iconic Hero of Bharat

Nitant
B.A. (Prog.) 2nd Sem

Chhatrapati Shivaji Maharaja, known for re-establishing the Hindavi rule in Bharat is revered for his utmost strength, courage and chivalry. He was a skilled administrator and an efficient strategist with great leadership skills. A benevolent leader, he strongly believed in unity. He respected both Hindu and Muslim saints and he was tolerant towards every religion and faith.

He led a life full of simplicity and humility. It was his flexibility that tells how he adapted himself in the most difficult situations. Known as a visionary, he cared about the future prospects of his subjects. He was not only a highly patriotic ruler but also an empath who deeply loved and cared about his people and was devoted to the welfare of them by making sure that everyone was treated equally in the society. It is evident from his actions that he had utmost respect for women, treating them with dignity.

It was his mother who taught him all the virtues and she was responsible for his upbringing and instilling good values in him. For him, his mother was no less than a Goddess. He loved her dearly and treated her with respect which is also why he saw every woman with respect, even if they were his enemies. His show of respect and benevolence for women is displayed through an incident following the war of Kalyan. During the raid on Kalyan, an officer of his kingdom captured Mulla Ahmed's daughter-in-law, a young Muslim lady and took her to Pune thinking Maharaja will appreciate him but when Shivaji got to know she was captured, he apologized and sent her back. He treated the captured woman with the same regard as he would to his mother. From that moment, he made an order to not let any enemy woman suffer during war or raid and that they should not be held hostage.

Shivaji had even appointed his wife, Saibai as his personal consultant who would guide him in administrative matters. This further proves that he treated women with equality and dignity. He valued women's safety more than anything else and took strict action against anyone who harassed them. He always took care of the fact that there is no violence and oppression against women. He made sure education was easily accessible to every woman under his rule.

Shivaji's life encourages us to be more considerate towards everyone around us, especially women. The government's campaigns like "Beti Bachao, Beti Padhao" or initiatives to enroll women in the military forces and also encouraging them to join the Parliament and partake in policy decision-making seem to be inspired from the actions of Shivaji.

Shivaji, therefore, can only be seen as an iconic hero of the people of Bharat. It is his footsteps that we need to follow in order to evolve as a resurgent and progressive nation.

Shivaji Maharaj:
Catalyst of Economic Revival

Saanvi Dixit and Bhumi Bansal
B.A. (Hons.) Economics 4th Sem

During the reign of Shivaji Maharaj, not only military conquests and strategic brilliance but also shrewd economic measures played a pivotal role in shaping the prosperity and expansion of his empire. His multifaceted economic initiatives proved instrumental in creating a conducive environment for economic revival, attracting merchants, traders and artisans to his kingdom and fostering a vibrant economy.

Shivaji Maharaj's economic policies:

- Promotion of Agriculture and Rural Development: Shivaji Maharaj prioritized agricultural growth and rural progress, implementing policies like irrigation systems and improved farming techniques to boost productivity, thereby enhancing rural livelihoods.

- Support for Trade and Commerce: Recognizing the importance of trade and commerce, he encouraged markets, eliminated burdensome taxes and created a conducive environment for merchants, leading to flourishing trade and economic vitality.

- Investment in Infrastructure: He invested in infrastructure, including roads and bridges, to facilitate internal trade and connectivity with neighboring regions, expanding economic opportunities.

- Encouragement of Cottage Industries: He actively supported cottage industries and handicrafts, providing encouragement and incentives to artisans and craftsmen. This emphasis on local industries promoted self-reliance and generated employment opportunities for a significant portion of the population.

- Monetary Reforms and Fiscal Discipline: In order to stabilize the economy, Shivaji Maharaj implemented various monetary reforms and maintained fiscal discipline. He standardized the currency and enforced stringent financial management within the administration, curbing unnecessary expenditure and promoting financial responsibility.

- Maritime Trade and Naval Security: Recognizing the economic benefits of maritime trade, Shivaji Maharaj prioritized the development of a robust naval fleet to safeguard coastal trade routes. By ensuring the security of maritime trade, he not only bolstered revenue but also established his kingdom as a formidable maritime power.

- Encouraging Silk and Textile Industries: In a bid to strengthen domestic industries and reduce dependence on imports, he promoted silk and textile manufacturing within his realm. Through support for weavers and traders, he facilitated the growth of the textile sector, which became integral to the regional economy.

- Land Revenue System and Taxation Reforms: Shivaji Maharaj's primary source of revenue collection was the land revenue system, which he streamlined through systematic assessment based on factors such as soil fertility and crop yields. Additionally, he implemented taxation reforms, including the imposition of the Chauth and Sardeshmukhi taxes. The revenue generated from these taxes financed his military campaigns and administration, contributing significantly to the growth and stability of his empire.

- While Shivaji Maharaj's policies were generally fair and aimed at promoting economic stability and development, there were some positive and negative impacts associated with these economic policies during his reign.

Positive Impacts:

Shivaji Maharaj instituted measures to enhance agricultural techniques, including the promotion of irrigation systems and offering incentives to farmers. This resulted in heightened agricultural productivity, ensuring food security for the kingdom. He established trade routes and encouraged commerce with neighboring regions, enriching his kingdom economically. This was particularly advantageous for coastal areas like Konkan and Goa, strengthening trade activities.

He invested in constructing forts, roads, and ports, facilitating trade and transportation within his realm. Improved infrastructure not only fortified his military prowess but also fostered economic endeavors.

He aimed to diminish dependence on foreign trade by promoting local industries and self-sufficiency. This initiative retained wealth within the kingdom and mitigated vulnerability to external economic disruptions.

By channeling tax revenues into infrastructure projects such as forts, roads, and irrigation systems, Shivaji Maharaj stimulated economic expansion and progress. These investments propelled trade, commerce and agricultural output, laying the groundwork for prosperity.

Overall, Shivaji Maharaj's legacy teaches us the importance of proactive governance, prudent economic management and a holistic approach to development in fostering economic revival while ensuring long-term prosperity for the populace. As we honor his legacy, let us recognize him not only as a courageous warrior but also as a forward-thinking statesman who transformed the economic landscape of his time.

Keep

Renu
BA (Hons) English Semester 2

It rushes as if it has to catch a bus in hours wee
It makes you feel hopeless;
That things are not arranged and can never be
It makes you feel listless
And say “why always me?”

No one will ever know when and how
One would become from "a” to "the" (and vice versa)
It is life
It is emotionally unemotional

The Broken Feeling

Bhumi
BA (Hons) English Semester 2

This feelin' comes from the inside
Don't know what to say
Can I cover it with my pride?
Hopefully I will find my path this way...
But will wait, till the journey ends
Would I have to be in this baring system?
Will it help my emotions to blend?
Providing me with the long-awaited wisdom.
Maybe soon I will recover,
Recover from this agony
Bringing termination of the distruster
Though that feels like a fantasy,
Shall, with the grace of the creator
There comes an end to this tragedy.

Signs: The Secret Language

Megha Kumari
BA Program (English and Economics) Semester 6

Why do we always look for signs?
In the simplest, most straightforward of things?
Why do we attach rhyme and reason?
To every little thing we, see?

Maybe sunrises aren't new beginnings
And rainbows don't care who you love.
Maybe stars don't shine for you and me
Maybe rains are as unromantic as they could be.

Maybe caterpillars don't grow into butterflies
To inspire us to be whom we can be.
Maybe the light at the end of the tunnel
Is just as symbolic of hope
As the light bulb in your room - not at all.

Maybe the universe doesn't care
How badly you want something,
Maybe it has better things to do
Than send you a sign if he's the one.

Maybe us looking for signs
Is the sign.
Maybe us looking for signs
In the simplest, most mundane of things,
Is a sign
That we're trying to hold on to that one ounce of magic,
In a world we're afraid has none?

Lost

Bhumi
BA (Hons) English Semester 2

Don't know where to go, whom to ask?
Time is running faster than lightning
Living in the present feels like an agonizing task
How long will I have to do the acting?
Acting while wearing these silly masks,
Hear my heart screaming!
Wanting to be free to enjoy the sun and bask.
Hopefully I will find my way. Leading to the long-awaited freedom...
Enlightenment is going to be there. Someday. Making my heart blossom
Knowing that there will be an end to this day that's grey
Providing me with the glorious wisdom.

My hair is not mine; it belongs to my mother.

Megha Kumari
BA Program (English and Economics) Semester 6

She mixes three kinds of oils; each has a function. For strength she warms up almond oil. As she presses it on

my hair, she reminds me how beautiful my hair is. How it wasn't always this beautiful, how it took years to make it lush, thick, strong. "To see enough of a good thing, you have to do good things enough times," she muses.

I don't encounter it with my cynicism.

For hydration, she puts mustard oil directly on my scalp, massages it in with gentle circular motions. She tells me how it helps make one smarter. "You were always smart, even when you were a kid. I worry if that will make you lazy. You have to work hard; you have to be someone. You get distracted too easily, this is why you never scored well in math, because you got bored of the problem halfway through solving it."

I want to offer something in my defence. It will fall flat. She is accurate and pointed in her judgment. Which is why it hurts more. I stay quiet, there is insight in her observations, and experience in her lessons, all she hopes for is that I will learn from them.

For volume, coconut oil. A generous layer, from root to tip, to seal it all in. She recounts how once her hair was lush and long. That she cut it because there was too much going on in life and she couldn't be bothered anymore. I remark on how nice it must be to have short hair, especially in the summer. That I wish I never grew it either. I can hear her disappointment. Or maybe she feels hurt that I reject what she wishes she could still have. And she knows I know; my hair is not mine and hence I don't claim it.

She ties my hair finally; says I don't know its value because it's still attached to my head. I can't counter that logic, I will most likely never find out. With each knot, each of her lessons settles in. Each of them a lifetime she didn't live, each of them a reality she wishes I can thrive in. Each of them a blessing and a curse I was destined to carry before I even existed.

I will find my peace in it.

Music and its Potential

Ankita Pant
BSc (H) Biochemistry Semester 2

The current scenario of climate, war, politics, pandemic, job stress etc. have huge impact on our physical and mental health. Times are very hard in current condition, however to ease and shift our mind from these daily issues, Music can play an important role.

Music as a phenomenon, has a mutual impact on everyone. It is considered as an enjoyable activity with a lot of benefits. Singing or listening to music adducts our brain and its structure which is involved in various activities like thinking, sensation, emotion and many other.

Have You Ever Felt Change In Your Mood After Listening To Music?

Now, let's come to the point, how?

Actually, what happens is, music causes the release of neurotransmitters and hormones that elicit human emotions, mood, memories, feelings, leading to the change in their behaviour and attitude.

Music with Alteration of Mood Stress and Pain

Our body has a complex mechanism. Every organ present in our body holds a significant function and is responsible for it. Similarly, our mood, stress, thoughts etc. are regulated by our brain.

So most importantly, music positively affects our brain leading to the release of its neurotransmitter such as dopamine, serotonin that influence our mood, focus, concentration, sleep and so on. Likewise, singing helps in contemporizing the breathing patterns which promotes the relaxation and reduces the production of hormone cortisol, "The stress hormone", which is responsible for increase in heart rate and blood pressure.

In this way it elevates our mood and helps relieve the stress, hence leading to a healthy lifestyle.

During recent studies it has shown the changes in brain function (caused due to listening to music) activates the specific areas of the brain which can promote wound healing.

Also, listening to music triggers the same pleasure which we feel while eating our favourite food or exercising. That is why music therapy is highly used in mental health practices.

Recently, during pandemic as well, music has provided a way to manage anxiety, loneliness and depression of thousands of people around the world.

Thus, Music therapy is highly in practice nowadays.

Conclusion:

Therefore, in today's stressful and competitive world, Music can have significant impact on individuals that help them upgrade their mental and physical health leading to a better lifestyle. It can be taken as a fun and an enjoyable act along with a lot of health benefits within itself.

The motive of this article is to make you all aware of the hidden benefits of music, something not generally known to people.

Bharat as a Vishwa Guru

Snigdha Kumari
BA Honors Political Science Semester 2

Bharat as a Vishwa Guru: -Bharat / India as the world's teacher. Vishwa Guru means the teacher of the world. Imagine your teacher at school/college or institute. They teach you many things, right? India is like that teacher but for the whole world. India taught and still teaches the world a lot of things, in fact India is generally associated with the title of Vishwa Guru because of its many significant contributions to the world.

Let's look upon some of the key contributions of India to the world for which it is considered great amongst other nations.

Indian civilization is one of the oldest and most influential civilization of the world and it has contributed to the modern world, as we all can witness in many circumstances. For instance, four of the world's major religions – Hinduism, Sikhism, Moreover, one of the most important teaching centres of the ancient world – the Nalanda University was built in India which at that time was considered one of the greatest teaching centres of the world. Many leaders born in India like Mahatma Gandhi, B.R Ambedkar, APJ Abdul Kalam, Subhash

Chandrabose etc. inspired the entire world through their ideologies and had a lasting impression on many. For example, Aung San Suu Kyi, the leader of Myanmar and Nelson Mandela, the leader of South Africa were inspired by the ideologies of Indian nationalist and leader – Mahatma Gandhi and considered him as their role model.

Apart from this, Indian freedom struggle movement has inspired many freedom struggle movements of the world. Most of India's population at the time was illiterate but it's astonishing how the country overcame most of its challenges and obstacles and how it's still continuing to grow. Moreover, despite being influenced by several sources, the specificity of Indian constitution lays out a democratic vision for the world and enshrines values like – secularism, fraternity, equality, justice, liberty etc.

Recently, G20 Summit with the theme Vasudhaiva kutumbakam, which stands for ONE EARTH ONE FAMILY ONE FUTURE, was conducted in the Bharat Mandapam located at New Delhi, the capital city of India, during the month of September' 2023. This event played an important role in shaping and strengthening global architecture and governance on all major international economic issues. Apart from this, India has been a major contributor to the world's economy. In fact, India's economy is growing at a greater pace than any other developing countries like – China, Thailand etc. Moreover, India is considered to have the highest number of UPI users in the world, thereby making digitalization a significant success in the country and further influencing the entire world. Furthermore, India conducted the largest vaccination drive in the world in the year 2021 which inspired many health workers and other countries of the world to fight against the deadly Covid-19 virus.

The above-mentioned lines throw light at why India is considered as the Vishwa Guru. Although India still has a lot of battles to fight in many fields, the country has all the resilience to find its way through the challenges that lie way ahead in the future. The country is determined to break mountains and fight

valiantly to overcome all the obstacles coming in its way.

Harbinger of Change: Exploring Panjabrao Deshmukh's Economic Vision

By Priyanka Chopra

Panjabrao Shamrao Deshmukh, also known as Bhausaheb Deshmukh wasn't born into privilege; he rose through hard work and dedication, becoming a beacon of hope for the nation. His life wasn't defined by titles - social activist, lawyer, and educationist - but by his unwavering commitment to action. He embodied the adage "actions speak louder than words," relentlessly working to uplift the marginalized. Deshmukh's legacy extends far beyond a single cause. He fought tirelessly against the injustice of untouchability, dismantling its oppressive structures. He championed education, illuminating minds and

fostering opportunity. And as a champion of farmers, he understood their struggles and advocated for their betterment.

Dr. Panjabrao Deshmukh was born in the Amravati district of Maharashtra. His family was engaged in agriculture. He completed his primary education at Papal. He never allowed his family's financial challenges to hinder his progress; instead, he confronted the obstacle of limited financial resources head-on and persevered to complete his education. He was awarded a Ph.D. degree. The subject of his research was Origin and Development of Religion in the Vedic Period, moreover he obtained a degree in Bar-at-Law.

He started a movement for admitting the Harijans and untouchables into the Temple of Amba Devi. He held a conference in Amravati for the removal of untouchability along with Dr. B.R. Ambedkar. He carried on the movement for admission into the Amba Devi Temple, and successfully discussed the issues with the trustees. When his father died, he had to perform rituals with Brahmins, so he brought untouchable students from his hostel.

Upon completing his education, he successfully pleaded the case “Enemies of the Nation." The interests of the peasants, which were never far from his heart, now claimed his close attention. He appeared for poor peasants in many cases at the district court of Amravati. His most prominent case was British Government vs. Azad Hind Sena, in which he assisted Jawaharlal Nehru.

Education stands as the cornerstone in the cultivation 3of robust, enlightened minds and the advancement of nations towards strength and development. Dr. Panjabrao understood the importance of education from the very beginning and also took several steps to foster education. He believed that education should reach every corner and that there should be no discrimination in spreading it. He took several pioneering steps for the same.

He opened Shri Shraddhanand Hostel for poor students and provided free lodging and boarding. He also started a gymnasium for young students and worked as a

teacher at Maratha High School. In the year 1931, he established the Shri Shivaji Education Society. The Society operates high schools, degree colleges, and intermediate colleges. Health and education stand as fundamental pillars in a country's development and in elevating the living standards of its people. Furthermore, his legacy is honoured by the establishment of an agricultural university bearing his name: Dr. Panjabrao Deshmukh Krishi Vidyapeeth. He also established the Chhatrapati Shivaji Education Trust in London.

A great supporter of the farming community, he worked tirelessly to improve the lot of the rural poor. In this regard, he took various measures for their progress and advancement. Starting with Bharat Krishak Samaj as the Minister for Agriculture. In an

agrarian economy where farmers play a prominent role, he helped them grow and voice their opinion. He also became Minister of State Agriculture for 10 long years, from 1952 to 1962 and played a significant role in the making of the Indian Constitution.

He played a major role in organizing the World Agriculture Fair, where people and farmers from all over the world gathered. Dr. Deshmukh authored the Food Security Plan and championed sustainable agriculture. He promoted integrated farming, crop husbandry, and animal husbandry alongside fisheries and forestry. He recognized the importance of horticulture and dairy for nutrition and even saw agriculture as a pillar of cultural identity.

Panjabrao Deshmukh's government roles and international leadership show he was a big leader. He had various leadership roles, like becoming President of the International Rice Production Conference; he was also appointed Minister for Co-operation by the

Government of India. And became president of the International Youth Federation.

Overall, Deshmukh's multifaceted contributions to agriculture, rural development, education, infrastructure, and public policy demonstrate his holistic approach to fostering economic development and social progress in India.

DEPARTMENT EVENTS 2023-24

DEPARTMENT OF B.A. PROGRAMME

Samanvay'24 on 19.04.2024

DEPARTMENT OF BIOCHEMISTRY

Seminar on 'Menstrual Hygiene and Prevention of cervical cancer' on 28.11.2023

DEPARTMENT OF BOTANY

Juniper'24 on 13.03.2024

DEPARTMENT OF BUSINESS ECONOMICS

Invoke'24 on 23.03.2024

Seminar-Mental Health on 31.10.2023

DEPARTMENT OF COMMERCE

Seminar on Chhatrapati Shivaji 29.01.2024

Online Faculty Development Programme On December 4-9, 2023

OPTIMUM'24 on 08.04.2024

DEPARTMENT OF CHEMISTRY

Rastantrum'24 on 10.04.2024

DEPARTMENT OF COMPUTER SCIENCE

Workshop On 08.11.2023

Video Making Competition On
'celebrating Life Of Shivaji Maharaj' On 5.02.2024

DEPARTMENT OF ECONOMICS

Pareto'24 on 26.04.2024

Seminar on 06.10.2023

DEPARTMENT OF ENGLISH

Departmental Tour on 09.03.2024

Udaan'24 on 19.04.2024

DEPARTMENT OF GEOGRAPHY

Extempore competition 30 Jan, 2024

DEPARTMENT OF HINDI

Hindvi Swaraj ki prasangikta, 13.02.2024

Hindi Pakhwada on 14.09.2024

DEPARTMENT OF HISTORY

Art and festivals during the French revolution, 12.10.2023

DEPARTMENT OF MATHEMATICS

INFINITY'24 on 9.4. 2024

DEPARTMENT OF PHYSICAL EDUCATION

Sports Day'24 on 15.03.2024

DEPARTMENT OF PHYSICS

Invenio'24 on 19.03.2024

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

Shivraj 350 on 23.01.2024

DEPARTMENT OF SANSKRIT

ज्योतिषशास्त्र की वैज्ञानिकता - 22 मार्च 2024

जगद्गुरु आदि शंकराचार्य एवं भारत की एकात्मकता - 18 मार्च 2024

DEPARTMENT OF ZOOLOGY

Chhatrapati Shivaji Maharaj Event on 03.02.2024

Lecture on 29.09.2023

COMMITTEE EVENTS 2023-24

NATIONAL SERVICE SCHEME (NSS)

NATIONAL CADET CORPS (NCC)

WOMEN DEVELOPMENT CELL

RAJBHASHA COMMITTEE

ALUMNI RELATION COMMITTEE

SHIVAJI ACADEMIC ENRICHMENT CENTRE

63rd ANNUAL DAY on APRIL 05th 2024

UDHMODYA -Entrepreneurship Development Cell

CENTRE FOR ENVIRONMENT AND DISASTER MANAGEMENT

INCLUSION SOCIETY COMMITTEE

ENVIRONMENT AND SUSTAINABILITY COMMITTEE

PLACEMENT CELL

SPORTS COMMITTEE

cultural society

ORIENTATION DAY

CULTURAL ORIENTATION

ACRYLICA 2023

CINEDROME 2023

DIWALI MELA ' दीपोत्सव

SHIVAJI BHONSALE ENGLISH PARLIAMENTARY DEBATE UNDER THE AEGIS OF SHIVRAJ 350

SHIVAJI BHONSLE HINDI PARLIAMENTARY DEBATE UNDER THE AEGIS OF SHIVRAJ 350

VIBRATIONS 2024

INTERNATIONAL CONFERENCE on

'Resurgent Bharat on the Global Canvas'

जीजाबाई राष्ट्रीय

पारंपरिक वाद विवाद प्रतियोगिता

DEPARTMENT

OF HISTORY

DEPAR

OF H

DEPARTMENT

OF ECONOMICS

LIT

DEPARTMENT

OF SANSKRIT

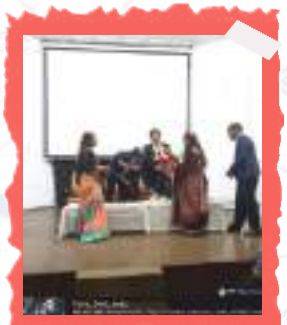

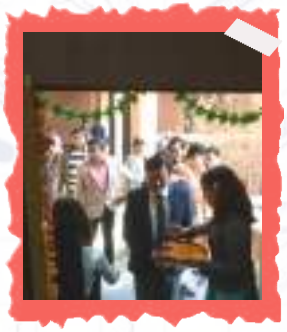

DEPARTMENT

OF COMMERCE & BUSINESS STUDIES

TMENT

INDI

DEPARTMENT OF ENVIRONMENTAL

STUDIES, LIFE SCIENCE AND

BIOCHEMISTRY

TERARY SOCIETY

DEPARTMENT

OF POLITIACAL SCIENCE

DEPARTMENT

OF GEOGRAPHY

DEPARTMENT

OF COMPUTER SCIENCE

SHIVAJI BHONSLE HINDI PARLIAMENTARY DEBATE

SHIVAJI

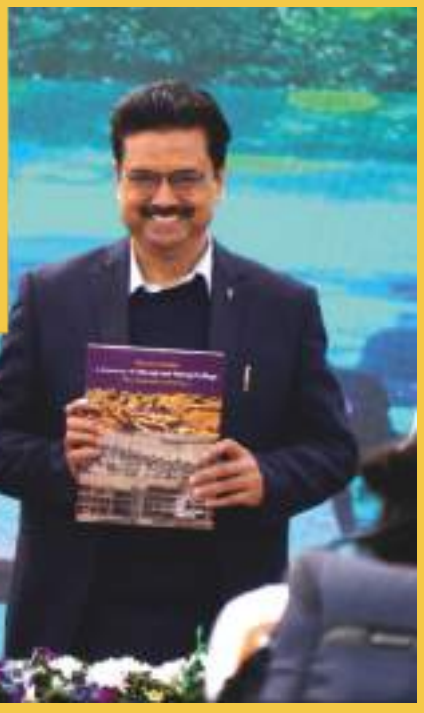

JAYANTI

RAJYABHISHEK MAHOTSAV

HUMANS OF SHIVAJI

B. A. PROGRAMME

Left to Right: All faculty members of Departments of English, Hindi, History, Geography, Economics, Political Science & Sociology

BIOCHEMISTRY

Front Row Left to Right: Dr. Shvetambri, Dr. Renu Baweja, Dr. Sunita Singh,
Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Dr. Abhijeet Mishra, Dr. Jayita Thakur & Dr. Usha Yadav

BOTANY

Front row left to right: Dr. Pawan Kumar, Dr. Devender Singh Meena, Dr. Anurag Maurya, Prof. Vijay Kumar, Prof. Prabhavathi, Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Prof. Anuradha Mal, Prof. Pratima Rani Sardar, Dr. Misha Yadav, Dr. Seema Talwar, Ms. Priyanka Ojha & Dr. Smita Tripathi

BUSINESS ECONOMICS

Front Row Left to Right: Ms. Manisha Jayant, Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Dr. Suman Kharbanda & Ms. Urvashi Sahitya

CHEMISTRY

Front row left to right: Dr. Reeta, Dr. Yogesh Kumar, Prof. Rahul Singhal, Dr. Neena Khanna, Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Dr. Anil Krishan Aggarwal, Dr. Prasanta Kumar Sahu, Dr. Nand Gopal Giri, Dr. Bhaskar Mohan Kandpal, Mr. Deepesh Singh & Dr. Vandana Katoch
Second row left to right: Dr. Rangnath Ravi, Dr. Seema, Dr. Priti Kumari, Dr. Richa Arora, Dr. Sunil Yadav & Ms. Tamanna

COMMERCE

Front Row Left to Right: Dr. Neetu Dhayal, Ms. Monika, Ms. Yogita Rani Negi, Ms.Harmanpreet Kaur, Dr. Rajinder Singh, Dr. Ramesh Malik, Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Dr. Suman Kharbanda, Mr. Rajesh Kumar, Dr. Chhavi Sharma, Dr. Kiran Chaudhary, Ms. Sonika Sharma & Dr. Saumya Singh.
Second Row Left to Right: Dr. Vanitha Chadha & Ms. Manisha

COMPUTER SCIENCE

Front Row Left to Right: Mr. Pawan Kumar, Ms. Yogesh Kumari, Ms. Preeti Sharma, Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Mr. Rakesh Yadav, Ms. Abha Vasal & Dr. Krishan Kant Singh Gautam.

ECONOMICS

Front Row Left to Right: Ms. Manisha Jayant, Ms. Bhumika Bhavnani, Mr. Sumeet Singh Raheja, Dr. Shivani Gupta, Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Ms. Iti Dandona, Mr. Rahul Kumar, Ms. Nidhi Sehrawat, Ms. Nikita Gupta & Ms. Kavita Yadav.

ENGLISH

Front Row Left to Right: Dr. Gitarani Leisangthem, Dr. Manish Kumar Meena, Dr. Divya Madan, Dr. Siamlianvung Hangzo, Dr. Sonali Garg, Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Dr. Anjali Raman, Dr. Priyanka Chakpram, Ms. Himanshi Saini, Dr. Debosmita Paul, Ms. Anshula Upadhyay & Dr. Ritu Madan

ENVIRONMENTAL SCIENCE

Front Row Left to Right: Dr. Yogender Singh, Prof. Virender Bhardwaj (Principal) & Dr. Ashwani Sharma

GEOGRAPHY

Front Row Left to Right: Dr. Bharat Ratnu, Dr. Amit Kumar Srivastava, Dr. Mukesh Kumar Meena, Prof. Tejbir Singh Rana, Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Dr. Preeti Tewari, Dr. Lalita Rana & Dr. Usha Rani

HINDI

आगे की पंक्ति बाएं से दाएं: डॉ . कल्पना वर्मा, डॉ. तरुण, डॉ. अरविंदर कौर, प्रो. दर्शन पाण्डेय, डॉ. ज्योति शर्मा, प्रो. वीरेंद्र भारद्वाज (प्राचार्य), डॉ. विकास शर्मा, डॉ. रश्मि, श्री महेश कुमार, डॉ. संदीप कुमार, डॉ. बबली, सुश्री प्रियंका शर्मा और सुश्री शिवानी, डॉ. कंचन

HISTORY

Front Row Left to Right: Dr. Preeti, Mr. Skand Priya, Dr. Nishtha Srivastava, Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Prof. Khurshid Khan, Mr. T. Chandra Shekhar Reddy & Dr. Rudra Pratap Yadav

MATHEMATICS

Front Row Left to Right: Dr. Rashmi Agrawal, Dr. Chandra Prakash, Dr. Neetu Rani, Dr. Deepti, Dr. Aparna Jain, Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Prof. Surbhi Madan, Mr. Manish Kumar Meena, Mr. Jitendra Singh, Prof. Kumari Priyanka, Ms. Sunita & Dr. Subedar Ram
Second Row Left to Right: Dr. Jeetendra Aggarwal, Mr. Nitesh Kumar, Dr. Uttam K. Sinha & Mr. Ankush Kumar

PHYSICAL EDUCATION

Front Row Left to Right: Dr. Amita Handa & Prof. Virender Bhardwaj (Principal)

PHYSICS

Front Row Left to Right: Dr. Neeti Goel, Dr. Neeru Sharma, Dr. Mamta, Prof. S. K. Yadav, Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Prof. Arun Vir Singh, Dr. Shiv Shankar Gaur, Dr. Bharti, Dr. Shobha, Dr. Nidhi Tyagi & Dr. Surendra Kumar

POLITICAL SCIENCE

Front Row Left to Right: Dr. Alka Mudgal, Dr. Himmat Singh Deora, Dr. Ravi, Dr. Bishnu Satapathy, Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Mr. Mohan Kumar, Mr. Amit Kumar, Mr. Kushik Kumar, Mr. Dhara Singh Kushawaha, Mr. Tayenjam Priyokumar Singh & Mr. Rahul Mishra

SANSKRIT

आगे की पंक्ति बाएं से दाएं: डॉ. रीना कुमारी, डॉ. नागेन्द्र कुमार, डॉ. मेघराज मीणा, प्रो. वीरेंद्र भारद्वाज (प्राचार्य), डॉ. रजनीश और डॉ. सुखराम

SOCIOLOGY

Front Row Left to Right: Prof. Virender Bhardwaj (Principal) & Dr. Vikrant Kumar

ZOOLOGY

Front Row Left to Right: Dr. Tsewang Namgial, Dr. Ankita Dua, Dr. Aeshna Nigam, Mr. Manish K. Sachdeva, Dr. Deepika Yadav, Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Prof. Sunita Gupta, Dr. Nidhi Garg, Dr. Samya Das, Dr. Rakesh Roshan, Dr. Manas K. Dhal & Dr. Jitendra K. Chaudhary

LIFE SCIENCES

Left to Right: All faculty members of Departments of Botany, Chemistry & Zoology

PHYSICAL SCIENCES WITH CHEMISTRY

Left to Right: All faculty members of Departments of Chemistry, Mathematics & Physics

PRIDE OF SHIVAJI

NAAC IQAC Committee

Left to Right (Sitting): Dr. Vandana, Dr. Jyoti Sharma, Dr. Shivani Gupta, Dr. Jeetendra Aggarwal, Prof. Tejbir Singh Rana, Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Dr. Suman Kharbanda, Dr. Renu Baweja, Ms. Preeti Desodiya, Prof. Surbhi Madan, Dr. Seema Talwar, Dr. Pawan Kumar
Left to Right (Standing): Mr. Sumeet Singh Raheja, Dr. Sunita Singh, Dr. Mamta, Dr. Deepika Yadav, Dr. Smita Tripathi, Dr. Jayita Thakur, Dr. Shvetambri, Dr. Ritu Madan, Dr. Nishtha Srivastava

Centre for Environment & Disaster Management

Left to Right: Mr. Parth Kumar Kasana, Dr. Neeru Sharma, Prof. Tejbir Singh Rana, Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Dr. Uttam Kumar Sinha, Dr. Amit Kumar, Dr. Ashwani Sharma

Shivaji College Staff Association

Left to Right: Dr. Rajender Singh, Prof. Rabinarayan Samantara, Mr. Rakesh Yadav, Prof Virender Bhardwaj (Principal), Dr Jyoti Sharma, Dr Mamta

Academic Audit and Advisory Committee

Left to Right: Dr. Nidhi Tyagi, Ms. Harmanpreet Kaur, Dr. Sukhram, Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Dr. Suman Kharbanda, Dr. Renu Baweja, Dr. Deepika Yadav

Add-on & Value Added Courses Committee

Left to Right: Mr. Anil Awasiya, Mr. Parath Kumar Kasana, Prof Virender Bhardwaj (Principal), Dr. Vikrant Kumar, Dr. Shobha

Admission Committee

Left to Right (Sitting): Dr. Ankush Kumar, Dr. Vikas Sharma, Dr. Misha Yadav, Dr. Shivani Gupta, Dr Deepti, Prof Virender Bhardwaj (Principal), Prof Surbhi Madan, Prof. V. Prabhavathi, Prof. Sunita Gupta, Dr. Mamta, Dr Bharti, Dr. Vanitha Chadha
Left to Right (Standing): Dr. Ravindra Singh, Dr. Devender Singh Meena

Alumni Relations Committee

Left to Right (Sitting): Dr. Usha Yadav, Ms. Harmanpreet Kaur, Dr. Ankita Dua, Prof Darshan Pandey, Prof Virender Bhardwaj (Principal), Dr. Ashwani Sharma, Dr. Alka Mudgal, Dr. Smita Tripathi

Anti-Ragging Committee

Left to Right: Mr. Manish Kumar Sachdeva, Prof Virender Bhardwaj (Principal), Mr. Sumeet Singh Raheja, Dr. Shobha, Prof Sunita Gupta

Canteen Committee

Left to Right: Mr. Nihal Kumar Bairwa, Dr. Chakpram Priyanka, Mr. Chandra Prakash, Prof Virender Bhardwaj (Principal), Mr. Sumeet Singh Raheja, Dr. Alka Mudgal, Dr. Shiv Shankar Gaur, Dr. Ravindra Singh

Annual Day Committee

Left to Right (Standing): Ms. Monika, Ms. Harmanpreet Kaur, Ms. Kavita, Dr. Ashwani Sharma, Dr. Ankita Dua, Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Dr. Divya Madan, Ms. Anshula Upadhyay, Ms. Nidhi Sehrawat, Dr. Vanitha Chadha, Dr. Usha Yadav

Left to Right (Standing): Mr. Deepesh Singh, Dr. Aeshna Nigam, Ms. Himanshi Saini, Ms. Tamanna, Dr. Arvinder Kaur

College Research and Innovation Committee

Left to Right (Standing): Dr. Devender Singh Meena, Prof. V. Prabhavathi, Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Dr. Renu Baweja, Ms. Anshula Upadhyay, Dr. Nidhi Tyagi

Cultural Committee

Left to Right (Center): Dr. Aeshna Nigam, Dr. Ankita Dua, Dr. Nidhi Garg, Ms. Nimita Kant, Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Dr. Rangnath Ravi, Ms. Preeti Tewari, Dr. Chhavi Sharma, Dr. Vanitha Chadha, Dr. Debosmita Paul

Back Row Left to Right: Dr. Jitendra Kumar Chaudhary, Dr. Rakesh Roshan, Dr. Tsewang Namgial, Dr. Anurag Maurya with student members

TEDx Committee

Front row Left to Right: Dr. Vikrant Kumar, Dr. Rakesh Roshan, Dr. Nidhi Garg, Ms. Nimita Kant, Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Dr. Smita Tripathi, Dr. Anurag Maurya, Dr. Jitendra Kumar Chaudhary

Rajbhasha Committee

Left to Right (Sitting): Mr. Afroz Khan, Dr. Ankita Dua, Mr. Praveen Kumar, Mr. Hemant Lamba, Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Dr. Jyoti Sharma, Ms. Anshula Upadhyay, Dr. Meghraj Meena, Dr. Seema Talwar, Ms. Himanshi Anand
Left to Right (Standing): Ms. Harmanpreet Kaur, Dr. Arvinder Kaur, Dr. Aeshna Nigam

Development Committee

Left to Right: Dr. Jeetender Aggarwal, Ms. Nimita Kant, Mr. Gaurav Goel, Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Dr. Sukhram, Prof. Darshan Pandey, Mr. Manish Kumar Sachdeva

General Purchase Committee

Left to Right: Mr. Jitendra Singh, Dr. Neetu Rani, Dr. Ramesh Malik, Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Prof. Vijay Kumar, Dr. Himmat Singh Deora, Mr. Rahul Mishra

DBT Sponsored Star College Scheme

Left to Right (Sitting): Dr. Ankita Dua, Dr. Deepika Yadav, Ms. Nimita Kant, Dr. Prasanta Kumar Sahu, Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Dr. Renu Baweja, Dr. Jayita Thakur, Dr. Sunita Singh, Dr. Anurag Maurya, Dr. Pawan Kumar
Left to Right (Standing): Dr. Aeshna Nigam, Dr. Usha Yadav, Dr. Rakesh Roshan, Dr. Nidhi Garg

Shivaji Academic Enrichment Centre

Left to Right (Sitting): Ms. Nikita Gupta, Ms. Monika, Dr. Divya Madaan, Prof. Darshan Pandey, Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Prof. Khurshid Khan, Dr. Kiran Chaudhary, Dr. Vanitha Chadha, Dr. Priyanka Ojha.
Left to Right (Standing): Dr. Bharat Ratnu, Dr Vikas Sharma, Student members, Dr Suneel Kumar, Dr. Nidhi Garg

Discipline and Student Advisory Committee

Left to Right (Sitting): Dr Rajinder Singh, Dr. Deepti, Dr. Meghraj Meena, Dr. Rajender Singh, Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Prof. Khurshid Khan, Dr. Ashwani Sharma, Dr. Ravi, Prof. Rabinarayan Samantara, Dr. Nishtha Srivastava
Left to Right (Standing): Dr. Nagendra Kumar, Mr. Amit Kumar Srivastava, Dr. Neeru Sharma, Dr. Yogender Singh

Environment and Sustainability Committee

Left to Right (Sitting): Dr. Yogender Singh, Dr. Devender Singh Meena, Prof. V. Prabhavathi, Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Dr. Ashwani Sharma, Prof. Vijay Kumar, Dr. Ravindra Singh, Dr. Vandana Katoch, Ms. Manisha
Left to Right (Standing): Student member with Mr. Rahul Mishra and Dr. Seema Talwar

Examination Committee

Left to Right: Dr. Anurag Maurya, Dr. Sunita Singh, Dr. Rajinder Singh, Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Mr. Manish Kumar Sachdeva, Mr. Rajesh Kumar, Dr. Shiv Shankar Gaur, Dr. Himmat Singh Deora, Dr. Surendra Kumar.

Fee Concession Committee

Left to Right: Mr. Ankush Kumar, Dr. Anil Krishan Aggarawal, Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Dr. Sukhram, Mr. Krishan Kant Singh Gautam, Ms. Manisha.

Library Committee

Left to Right: Dr. Meghraj Meena, Mr. Uttam Kumar Sinha, Prof. Rabinarayan Samantra, Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Mr. Rakesh Yadav, Mr Bhupendra Kumar.

ICT Support Committee

Left to Right: Dr. Chhavi Sharma, Ms. Preeti Sharma, Prof. Tejbir Singh Rana, Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Dr. Suman Kharbanda, Ms. Abha Vasal, Dr. Richa Arora

General Grievance Redressal Committee

Left to Right: Prof. Rabinarayan Samantra, Dr. Nagendra Kumar, Dr. Rajender Singh, Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Prof. Tejbir Singh Rana, Dr. Suman Kharbanda

Time-Table Committee

Left to Right: Ms Monika, Dr Bharti, Dr Bharat Ratnu, Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Dr. Vandana, Prof. Prabhavathi, Ms. Harmanpreet Kaur, Dr. Ritu Madan.

Internal Assessment Monitoring Committee

Left to Right: Dr. Usha, Dr. Sunita Singh, Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Dr. Jayita Thakur, Prof. Surbhi Madan, Mr. Rajesh Kumar.

Student Advisory Committee & Student Union

Left to Right: Mahima Sharma (Joint Secretary), Kamal Chaudhary (President), Garv Yadav (Central Councillor), Dr. Rajneesh, Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Dr. Rajender Singh, Dr. Meghraj Meena, Abhay Tiwari (Central Councillor), Pradeep Yadav (Vice President), Shresth Yadav

Internal Complaints Committee

Left to Right: Dr. Anil Krishan Aggarwal, Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Prof. Surbhi Madan (Convener), Dr. Ritu Madan, Bhawna (student member)

Vidya Vistar Scheme

Left to Right: Dr. Neeti Goel, Dr. Siamlianvung Hangzo, Prof. Sunita Singh (Convener), Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Dr. Jayita Thakur, Dr. Richa Arora, Dr. Nidhi Garg

Inclusion Committee

Left to Right (Sitting): Dr. L. Thansanga, Dr. Ramesh Kumar, Dr. Siamlianvung Hangzo, Ms. Gunjan Kumari, Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Dr. Rajneesh Dr. L. Gitarani Devi, Mr. Manish Kumar Meena, Dr. Amit Kumar, Mr. Mahesh, Mr. Tayenjam Priyokumar Singh and student members
Left to Right (Standing): Ms. Anshula Upadhyay and student members

Remedial Committee

Left to Right (Sitting): Dr. Nidhi Tyagi, Dr. Siamlianvung Hangzo, Ms. Gunjan Kumari, Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Ms. Preeti Desodiya, Dr. Seema Talwar, Dr. Usha Yadav, Dr. Shvetambari
Left to Right (Standing): student members

Placement and Internship Cell

Left to Right (Sitting): Dr. Nidhi Tyagi, Dr. Neetu Dhayal, Dr. Devender Singh Meena, Ms. Monika, Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Dr. Jayita Thakur, Ms. Urvashi Sahitya, Mr. Nitesh Kumar, Dr. Chhavi Sharma, Dr. Sonika Sharma
Standing: student members

Women Development Cell

Left to Right (Sitting): Dr. Nidhi Garg, Ms. Manisha, Dr. Deepika Yadav, Dr. Nishtha Srivastava, Prof. Virender Bharadwaj (Principal), Dr. Rajesh Kumar, Dr. Smita Tripathi, Dr. Nagendra, Dr. Shvetambri
Standing: Student members

National Rankings Committee

Left to Right: Dr. Pawan Kumar, Dr. Shilpa Jain, Dr. Aeshna Nigam,
Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Prof. Surbhi Madan, Ms. Abha Vasal, Ms. Urvashi Sahitya

Udmodhya Entrepreneurship Development Cell

Left to Right (Sitting): Ms. Harmanpreet Kaur, Ms. Nikita Gupta, Ms. Monika, Dr. Vandana,
Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Dr. Suman Kharbanda, Prof. Vijay Kumar,
Dr. Himmat Singh Deora, Dr. Vanitha Chaddha, Mr. Rajesh Kumar
Left to Right (Standing): student members and Dr. Chhavi Sharma

Media Cell

Left to Right: Ms. Neetu Verma, Dr. Ankita Dua, Dr. Divya Madan, Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Prof. Darshan Pandey, Dr Richa Arora, Dr. Surendra Kumar, Dr. Aeshna Nigam

Institutional Ethics Committee & Liaison Officers

Left to Right: Dr. Reena Kumari, Dr. Prasanta Kumar Sahu, Dr Deepti (OBC Liaison Officer), Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Dr Meghraj Meena (SC/ST Liaison Officer) , Prof. Rabinarayan Samantra

National Cadet Corps (Girls)

Left to Right (Sitting): Dr. Nagendra Kumar, Dr. Priyanka Sharma, Lt. (Dr.) Deepti, Prof. Virender Bhardwaj, Lt. (Dr.) Rajinder Singh, Dr. Babli

National Cadet Corps (Boys)

Left to Right (Sitting): Dr. Nagendra Kumar, Dr. Priyanka Sharma, Lt. (Dr.) Deepti, Prof. Virender Bhardwaj, Lt. (Dr.) Rajinder Singh, Dr. Babli

National Service Scheme

Left to Right (Sitting, 2nd Row): Dr. Babli, Dr. Priyanka Kumari, Ms. Manisha, Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Dr. Anjali Raman, Mr. Krishan Kant Singh Gautam, Mr. Ankush Kumar, Mr. Deepash Singh, Dr. Vandana Katoch with student members

Non Teaching Staff

Left to Right (Sitting): Mr. Attar Singh Yadav, Mr. Hemant Lamba (Administrative Officer, Office), Prof. Virender Bhardwaj (Principal), Mr. Parveen Kumar (Administrative Officer, Accounts), Mr. Ram Kishore

Left to Right (Standing): Mr. Afroz Khan, Mr. Pradeep Sharma, Mr. Anoop, Mr. Jitender Jena, Mr. Albinus Kujur, Ms. Gayatri Devi, Mr. Gopal Singh, Ms. Amita, Mr. Upender Raturi, Mr. Santosh Mishra, Mr. Rishabh, Mr. Tarun, Mr. Ashish Dhingia, Mr. Divyansh Pandey, Mr. Santosh Kumar Shaw, Mr. Bhola, Ms. Sapna, Mr. Anil Kumar, Ms. Mamta, Ms. Neha Bhatnagar, Mr. Ambrish Kumar Shukla, Mr. Pankaj

Key Contributors of Shivaji College

शिवराज 350

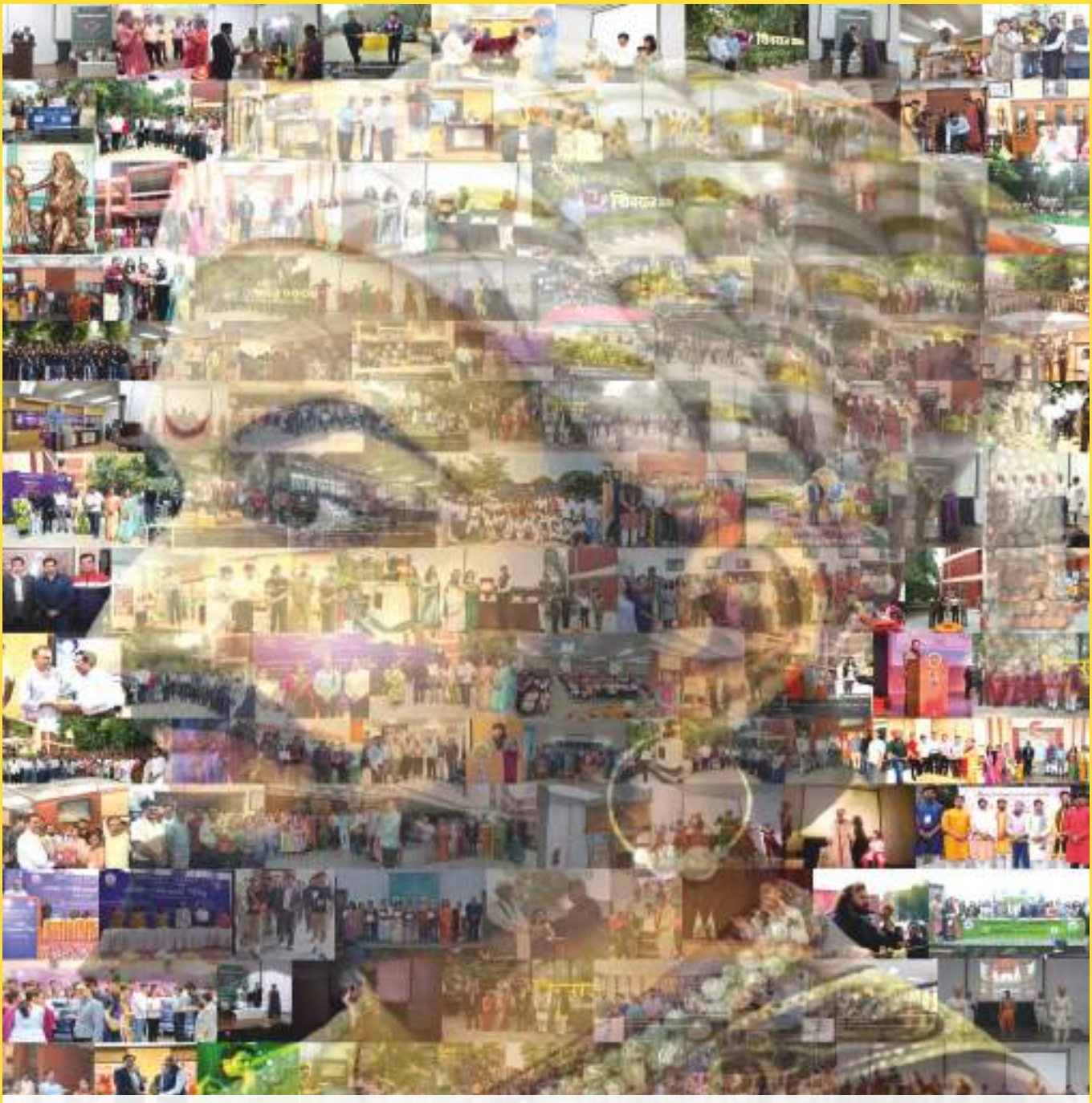

SHIVAJI COLLEGE

(Accredited with 'A' Grade by NAAC)

University of Delhi

Raja Garden, New Delhi – 110027

shivajicollege.ac@gmail.com